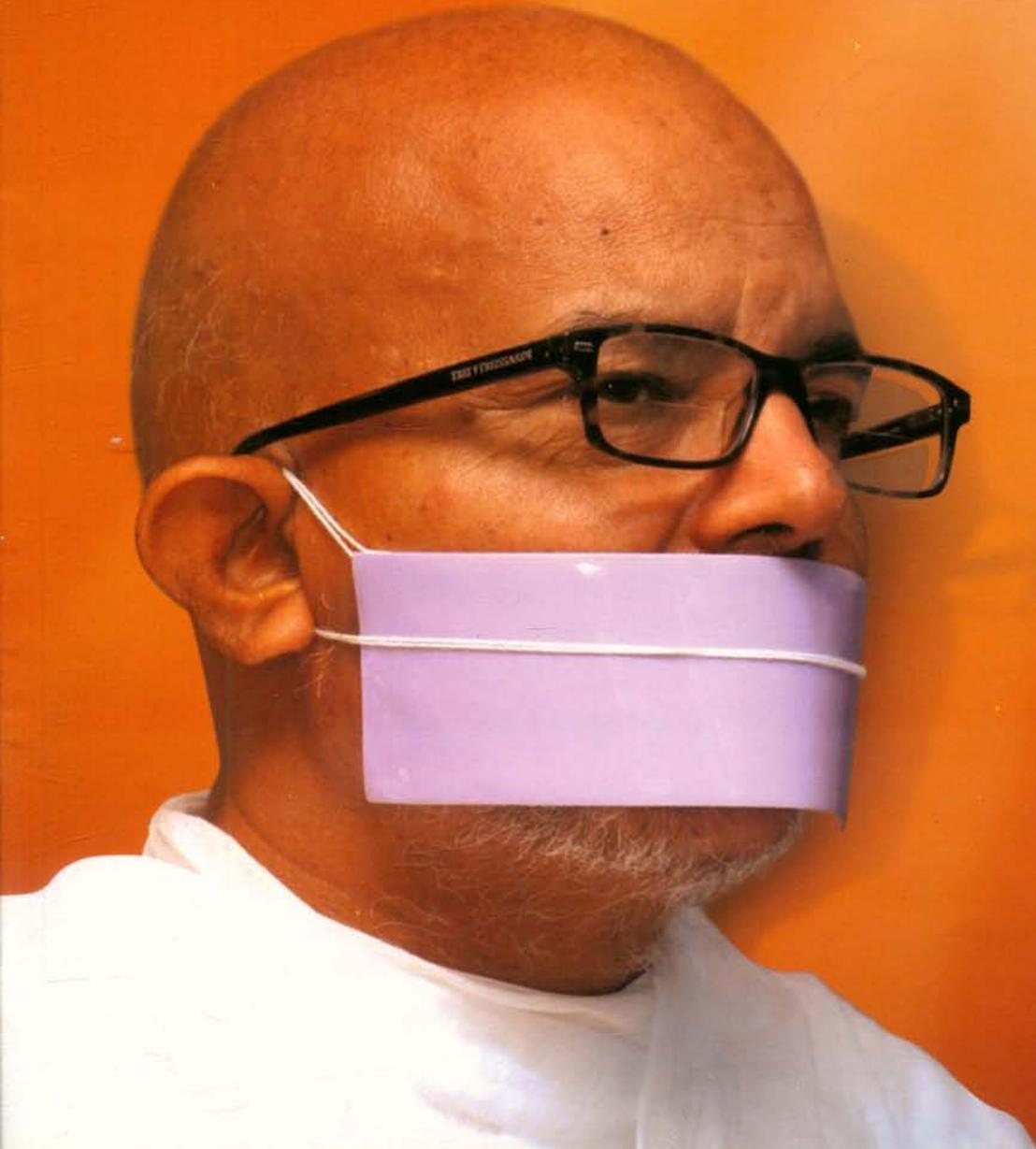


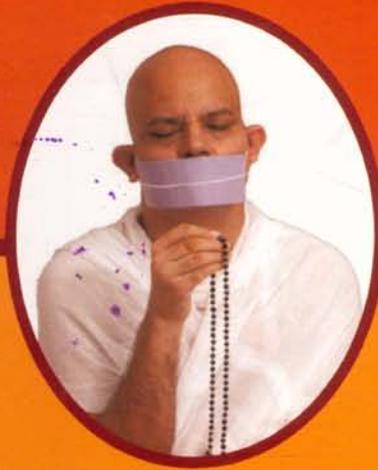
जैन भाष्यती

नैतिक-आध्यात्मिक विमर्श की पत्रिका

महासभा का गौरवशाली प्रकाशन

जून 2015 • वर्ष 63 • अंक 6 • वार्षिक 200/-





धर्म और संप्रदाय

धर्म आत्मशुद्धि का साधन है। संप्रदाय गुरु-परंपरा अथवा अनुयायियों का समूह है। कुछ लोग धर्म को छोड़ देते हैं, संप्रदाय को नहीं छोड़ते। कुछ लोग संप्रदाय को छोड़ देते हैं, धर्म को नहीं छोड़ते।

किसी एक शिकारी ने शिकार खेलने के लिए आवश्यक सामग्री बैलगाड़ी में रखकर वन की ओर प्रस्थान किया। जैसे ही वह कुछ दूर गया, वह देह-चिंता से बाधित हो गया। उसने सोचा कि जब तक गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ेगी मैं एक ओर जाकर देह-चिंता से निवृत्त हो जाऊँगा और तेज गति से चलकर शीघ्र ही गाड़ी को प्राप्त कर लूँगा।

ऐसा सोचकर वह देह-चिंता से निवृत्त होकर पुनः राजमार्ग पर आया, तब तक गाड़ी कुछ दूर आगे बढ़ गई थी। वह तीव्र गति से गाड़ी की ओर जा रहा था कि मार्ग में एक चीता आया।

शिकारी ने सोचा - अब क्या करूँ? बंदूक तो गाड़ी में ही रह गई। अभी मेरे पास वह नहीं है। लगता है, मर जाऊँगा। अचानक उसके दिमाग में एक विचार आया कि बंदूक तो मेरे पास नहीं है किंतु उसका लाइसेंस मेरे पास है। उसको निकालकर उसे चीते को दिखाते हुए वह बोला - 'अरे चीते! देख, यह बंदूक का लाइसेंस मेरे पास है। शीघ्र ही तुमको मार दूँगा। कोई भी तुम्हारा रक्षक नहीं है।'

शिकारी वकील था। परंतु चीता वकील नहीं था। उसने आव देखा न ताव, शिकारी पर झपटा और उसे समाप्त कर दिया।

यदि शिकारी के पास बंदूक होती तो वह अपने आपको बचाने में समर्थ हो जाता। किंतु केवल लाइसेंस उसको बचाने में समर्थ नहीं हुआ।

इसी प्रकार जो व्यक्ति केवल संप्रदाय का लाइसेंस रखते हैं, धर्म के सिद्धान्तों का जीवन में पालन नहीं करते वे अपने आपको पापों से नहीं बचा सकते।

कहा गया है - 'वीतराग! तुम्हारी पूजा करने की अपेक्षा तुम्हारी आज्ञा का पालन करना अच्छा है। आज्ञा की आराधना कल्याण का हेतु और उसकी विराधना संसार का हेतु है।'

आचार्य महाश्रमण



वर्ष 63 | जून 2015 | अंक 06

जैन भारती

नैतिक-आध्यात्मिक विमर्श की पत्रिका
महासभा का गौरवशाली प्रकाशन

परामर्शक
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रधान संपादक
कमल कुमार दुगड़

संपादक
सुरेंद्र कुमार बोरड़

प्रकाशकीय कार्यालय
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कोलकाता - 700 001
फोन : 033-2235 7956 / 2234 3598
फैक्स : 033-2234 3666
इमेल : info@jstmahasabha.org
वेबसाइट : www.jstmahasabha.org

आवरण : बबलू फोटोग्राफर

मूल्य : 20/-
सदस्यता शुल्क : वार्षिक 200/-रु.
त्रैवार्षिक 500/- रु.
दसवर्षीय 1500/- रु.

मुद्रक :
आकार अक्षर प्रेस प्रा. लि.
158 लेनिन सरणी, कोलकाता - 700013
मोबाइल : 9903211215 / 9830747699

अनुक्रम

संबोध

संपादकीय

मानसिक दुःख की चिकित्सा	जयाचार्य	07
स्वस्थ हो भीतर का पर्यावरण	आचार्य महाप्रज्ञ	10
महावीर वाणी		14
A से Z तक जीवन का संदेश	समणी विपुलप्रज्ञा	17
सर्वसिद्धि का साधन है योग	डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह	20
प्राणायाम की प्रक्रिया और उससे लाभ	मुनि किशनलाल	28
भागवत भाव : मानुष भाव	अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी	32
प्रेरक व्यक्तित्व : मानवता की सेवा में समर्पित दीनबंधु ऐंड्रूज		37
दूध का दाम	वनफूल	41
कविताएँ	वीरेन्द्र प्रसाद सिंह	45
जीवन में पूर्णत्व की आकांक्षा का महत्व	पं. बलदेव उपाध्याय	46
महासभा संवाद		50
अहिंसा यात्रा अमृत संदेश		66
संस्कार निर्माण शिविर		72
सभा संवाद		74
विविध		85

भिक्षु दृष्टांत

यह शोभाचंद सेवक निष्पक्ष

नाडोलाई में शोभाचंद नाम का सेवक था। उसे पाली में बुला कर बावेचाजी ने कहा - 'भीखणजी खेरवे गांव में हैं। तुम उनके विषय में निंदात्मक कविता लिखो। सत्रह प्रकार की पूजा रची जा रही है। उसमें तुम्हें दस-बीस रुपये देंगे।

तब शोभाचंद बोला - भीखणजी से बात करने के बाद उनके बारे में निंदात्मक कविता लिखूंगा। यह कहकर वे खेरवे में आया। स्वामीजी को वंदना की। स्वामीजी बोले - तुम्हारा नाम शोभाचंद ?

तब वह बोला - हां महाराज !

फिर स्वामीजी ने पूछा - तूं रोडीदास सेवक का बेटा है ?

तब वह बोला - हां, महाराज !

फिर शोभाचंद बोला - आप भगवान की उत्थापना करते हैं, यह बात आपने अच्छी नहीं की।

तब स्वामीजी बोले - हम तो भगवान के वचनों के आधार पर घर छोड़ साधु बने हैं, फिर हम भगवान की कैसे उत्थापना कर सकते हैं ?

फिर शोभाचंद बोला - आप देवालय की उत्थापना करते हैं ?

तब स्वामीजी बोले - देवालय में हजारों मन पत्थर होता है। हम तो सेर दो सेर पत्थर की भी उत्थापना कहां करते हैं - कहां उठाते हैं।

तब वह बोला - आप प्रतिमा की उत्थापना करते हैं, प्रतिमा को पत्थर कहते हैं।

तब स्वामीजी बोले - हम प्रतिमा की उत्थापना कहां करते हैं ? हमें झूठ बोलने का त्याग है। इसलिए हम सोने की प्रतिमा को सोना की प्रतिमा, चांदी की प्रतिमा को चांदी की प्रतिमा, सर्वधातु की प्रतिमा को सर्वधातु की प्रतिमा और पाषाण की प्रतिमा को पाषाण की प्रतिमा कहते हैं।

यह सुनकर शोभाचंद बहुत हर्षित हुआ। ऐसे पुरुषों का अवगुण मैं कैसे बोलूं ? ऐसे पुरुषों को तो मुझे गुणानुवाद करना चाहिए। यह सोचकर उसने स्वामीजी की स्तुति में दो छंद लिखे। स्वामीजी को सुना, उन्हें वंदना कर, वह पाली आ गया।

बावेचा लोगों ने पूछा - क्या तुमने छंद बनाए ?

शोभाचंद बोला - हां बनाए।

बस, यह सुनकर शोभाचंद को साथ ले स्वामीजी के श्रावकों के पास आकर बोले - यह शोभाचंद सेवक निष्पक्ष आदमी है। भीखणजी को यह जैसे जानता है वैसा ही कहेगा। 'कहो भाई ! भीखणजी कैसे हैं ?'

तब शोभाचंद बोला - 'क्यों कहलाते हो ? उनकी मान्यता उनके पास है और अपनी मान्यता अपने पास।'

फिर भी बावेचा बंधु माने नहीं। वे बोले - तुम कहो।

फिर शोभाचंद बोला - मुझे भीखणजी में गुण या अवगुण जो भी दिखता है वैसा कहूंगा। तब तब बावेचा लोग बोले - 'तुम्हें जैसा लगे वैसा कहो।'

तब शोभाचंद ने जो छंद बनाए उन्हें सुनाने लगा। उन छंदों में की गई स्वामी जी की प्रशंसा को सुन बावेचा लोग वहां से चुपचाप सरक गए। स्वामीजी के श्रावक बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने खुशी में झूमते हुए शोभाचंद को लगभग 20-25 रुपयों का पुरस्कार दिया। ■

प्राकृतिक आपदाओं का एक कारण

आचार्य तुलसी

मनुष्य ने प्रकृति-विजेता बनने का सपना देखा। उसने अपने स्वप्न को साकार करने के लिए पुरुषार्थ किया। आज वह दंभ भरता है कि उसने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है। उसका दावा है कि वह आकाश की बुलंदियों को छू सकता है और पाताल में पैठ सकता है। वह गर्म हवाओं को बर्फ-सी ठंडी बना सकता है और हिमानी रातों में ऊष्मा भर सकता है। वह विश्व के किसी भाग में रहने वाले लोगों से सीधा संपर्क स्थापित कर सकता है, उन्हें देख सकता है, उनके साथ बात कर सकता है और जाने क्या-क्या कर सकता है। दूरदर्शन और दूरभाष की बात तो बहुत साधारण है, दूरस्थ-चिकित्सा की विधियाँ भी विकसित हो रही हैं।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत कुछ होने पर भी कुछ भी नहीं हुआ है। प्रकृति का अपना साम्राज्य है। इस पर किसी का वश नहीं चलता। वह बार-बार मनुष्य के अहं को तोड़ रही है। कभी अतिवृष्टि, कभी अनावृष्टि। कभी बाढ़, कभी भू-स्खलन। कभी आंधी, कभी तूफान। प्रकृति के ये भयावह हादसे और मनुष्य हाथ में हाथ बांधे निरीह होकर खड़ा है। वह इतना असहाय हो रहा है कि कुछ भी कर नहीं पाता।

प्रकृति की लीला विचित्र है। पता नहीं, कब, क्या, कहां घटित हो जाए? कब कहां ज्वालामुखी सुलग जाए और उसका लावा बहता हुआ धरती के नीचे उथल-पुथल मचाने लगे। अतीत ऐसे हादसों का साक्षी रहा है, वर्तमान इन्हें भोग रहा है और भविष्य इनकी भयावहता से कांप रहा है। भविष्य में जिस प्रलय की संभावना है, उसका चित्र जैन आगमों में है, किंतु वह समय काफी दूर है। अठारह हजार से भी कुछ अधिक वर्ष का समय अब तक शेष है। इस अवसर्पिणी युग के अंत में उस भयावह स्थिति से सामना करना होगा पर इसके लक्षण अभी प्रकट होने लगे हैं, यह चिंता की बात है।

चिंता किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। समस्या के मूलभूत कारणों की खोज के बाद ही समाधान का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। प्राकृतिक आपदा का एक बड़ा कारण है - मनुष्य का असंयम। प्रकृति का अतिमात्रा में होने वाला दोहन असंयम की प्रेरणा के बिना संभव ही नहीं है। यदि मनुष्य अपने जीवन में संयम का अभ्यास करे, तपस्या का प्रयोग करे तो बहुत संभव है कि वह प्राकृतिक आपदाओं को दूर धकेलने या टालने में सफल हो जाए।

पौराणिक घटना है। द्वारिका पर कोई असुर कुपित हुआ। देव प्रकोप से उसके दहन का प्रसंग उपस्थित हो गया। वहां के नागरिक अर्हत अरिष्टनेमि की शरण में गए। असुर आता उपद्रव करना चाहता, पर तपस्या के प्रभाव से उसकी शक्ति प्रतिहत हो जाती। एक-एक कर कई वर्ष बीत गए। नागरिकों के मन का भय उठ गया। वे प्रमत्त होने लगे। एक दिन ऐसा आया, जब द्वारिका में उपवास, आर्यबिल आदि कोई तप नहीं हुआ। असुर को मौका मिल गया। उसने अपनी शक्ति का प्रयोग किया। द्वारिका भस्मसात हो गई।

तपस्या की शक्ति अपरिमित है। आत्मशांति और विश्वशांति के लिए निरंतर तपोयज्ञ का अनुष्ठान किया जाए तो वांछित लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है और प्रासंगिक रूप में प्राकृतिक एवं मानवीय आपदाओं से भी त्राण मिल सकता है। ■

दुर्लभ है मनुष्य जीवन

आचार्य महाप्रज्ञ

मनुष्य होना दुर्लभ है। मनुष्य जितना मूल्यवान और महत्त्वपूर्ण प्राणी इस धरती पर दूसरा कोई नहीं है। देवता और नरक लोक के जीव हमारे सामने नहीं हैं, इसलिए हम उनकी बात नहीं कहते, किंतु मनुष्य हमारे सामने है और उसके बारे में बिना संकोच कहा जा सकता है कि उससे ज्यादा मूल्यवान प्राणी कोई नहीं है।

सृष्टि के दूसरे प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य का मूल्य और महत्त्व ज्यादा है तो इसका कारण यह है कि उसमें ज्ञान है। अपने ज्ञान का उपयोग करना वह जानता है। क्रिया करना जानता है और निर्माण की कला को भी जानता है। धरती पर अभी तक जो भी और जितना भी विकास हुआ है, वह मनुष्यकृत विकास है। लोग कहते हैं कि सृष्टि का निर्माण ईश्वर करता है। ईश्वर सामने नहीं है और सृष्टि का निर्माण करते उसे किसी ने प्रत्यक्ष नहीं देखा, किंतु मनुष्य को तो सृष्टि का निर्माण करते प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। नित्य वह नई-नई रचना में संलग्न है। धरती उसके लिए कम पड़ने लगी तो अब उसकी निगाहें चांद, तारों और सौरमंडल के दूसरे ग्रह-उपग्रहों पर है। वहां पहुंचने और बसने का उपक्रम वह शुरू कर चुका है।

जैन दर्शन में इन्हीं सब बातों के कारण आत्मकर्तृत्व को महत्त्व दिया। उसकी मान्यता है कि सृष्टि का कर्ता कोई ईश्वर और अलौकिक शक्ति नहीं, स्वयं मनुष्य है, प्रकृति है। मनुष्य का मूल्य इसीलिए है कि उसमें ज्ञान है, कर्तृत्व है, चिंतन है, विचार है, परिष्कृत मस्तिष्क है।

अपनी बुद्धि और ज्ञान के बल पर मनुष्य इस सृष्टि के समस्त प्राणियों में अपने को श्रेष्ठ बनाए हुए है। उसमें चिंतन और बुद्धि की विशेषता है। मनुष्य की तुलना सिर्फ मनुष्य से ही की जा सकती है। बंदर, हाथी जैसे प्राणियों में भी सहयोग की भावना होती है। ये यूथ बनाकर रहते हैं और विपत्तिकाल में अपने साथ का सहयोग करते हैं। लेकिन यह भावना मनुष्य में जितनी विकसित है, उतनी पशुओं में नहीं।

मनुष्य में परस्परता और सेवा की भावना है। मनुष्य में सेवा की और कर्तव्य की भावना है। वह अपने-पिता और अन्य परिजनों के प्रति अपने कर्तव्य को समझता है। उसमें त्याग की वृत्ति भी होती है।

त्याग अगर कर सकता है तो मनुष्य ही कर सकता है। मनुष्य में यह शक्ति है कि वह परमार्थ की बात सोच सकता है, स्वार्थ से ऊपर उठ सकता है। मानव समाज में ऐसे बहुत से लोग हुए, जिन्होंने हमेशा परमार्थ का चिंतन किया, कभी स्वार्थ की बात मन में नहीं आई।

अगर समाज में ऐसे व्यक्तियों का निर्माण हो जो परमार्थ का चिंतन करते हों तो समाज का कायापलट होने में देर नहीं लगेगी। कार्यकर्ता में तो परमार्थ की पवित्र चेतना होनी चाहिए। उसका चिंतन यह हो कि मुझे लक्ष्य के लिए काम करना है, भावना शुद्धि के लिए काम करना है, समाज हित के लिए काम करना है। नाम हो या न हो, मुझे इससे कोई मतलब नहीं है।

आचार्य भिक्षु परमार्थ दृष्टि वाले महापुरुष थे। उन्होंने उसी व्यक्ति को विनीत माना, जिसमें स्वार्थ त्याग की चेतना हो। स्वार्थी कभी विनीत नहीं हो सकता। ■

संपादकीय

तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में तीन प्रस्थान-त्रयी आचार्य हुए हैं - तेरापंथ के आद्य-प्रवर्तक परमपूज्य आचार्य भीखनजी स्वामी, जिन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ का प्रवर्तन कर उसे आध्यात्मिक आधारभूमि प्रदान की, चतुर्थ आचार्य ज्ञानानुरागी जयाचार्य, जिन्होंने तेरापंथ को अपनी मौलिक, तात्विक, धार्मिक एवं साहित्यिक रचनाओं से समृद्ध कर एक श्रुतसंपन्न धर्मसंघ के रूप में प्रतिष्ठित किया और विभिन्न मर्यादाओं का निर्माण कर उसे एक मर्यादित धर्मसंघ की गरिमा प्रदान की और परम प्रतापी युगपुरुष आचार्य तुलसी, जिन्होंने तेरापंथ को एक विराट् स्वरूप प्रदान कर उसे साधना, शिक्षा, संस्कार, सेवा जैसे उदात्त मानवीय मूल्यों से समन्वित किया और अभिनव परिकल्पनाओं और प्रकल्पों से सुसंपन्न कर तेरापंथ को एक बहुआयामी धर्मसंघ के रूप में विश्व क्षितिज पर प्रतिष्ठित किया।

इस गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए धर्मसंघ के दशम आचार्य प्रज्ञावारिधि महात्मा महाप्रज्ञ ने धर्मसंघ में ज्ञान के विस्तार को एक अभिनव आयाम दिया और अध्यात्म साधना में प्रेक्षाध्यान नामक एक अभिनव यौगिक साधना का प्रतिपादन किया, जिसमें आसन, प्राणायाम, मुद्रा और यौगिक क्रियाओं को प्राचीन योग साधना के आलोक में नया स्वरूप प्रदान किया गया था। उन्होंने प्रेक्षाध्यान में मन की एकाग्रता के साथ-साथ शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास की भूमिका निर्धारित कर उसे सर्वसामान्य के लिए उपयोगी बना दिया, जो योगसाधना के क्षेत्र में उनका महनीय अवदान था।

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशवें आचार्य महातपस्वी महाश्रमणजी जैन धर्म के ध्यानयोग, तपोयोग, संवरयोग, अध्यात्मयोग एवं ज्ञानयोग को व्यापक स्वरूप में ग्रहण करते हुए धर्म के सभी आयामों से उसे युक्त करने का संबोध प्रदान रहे हैं, जो लौकिक एवं पारलौकिक दोनों दृष्टियों से वांछनीय है और आत्मा को मोक्ष के साथ योजित करने में हेतु है।

भारत सरकार के आह्वान पर विश्व स्तर पर भारतीय योग-पद्धति को मान्यता मिलने के फलस्वरूप 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में आयोजित किया जा रहा है। वस्तुतः भारत प्राचीन काल से ही योग-विद्या का प्रधान केंद्र रहा है। यहाँ के परम तपस्वी महात्मा मनीषियों ने योग विद्या का प्रकाश मानव जीवन के सर्वांगीण विकास एवं उन्नयन के लिए ही

किया। वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों के अतिरिक्त श्रीमद्भागवत और पातंजल योगदर्शन में औपनिषद योग का विस्तृत रूप उपलब्ध होता है। वैदिक परंपरा के साथ ही जैन परंपरा में भी योग पर काफी चिंतन किया गया है और उसे कई अर्थों में प्रयुक्त किया गया है, जिनमें संयम, निर्जरा, संवर, ध्यान, मन-वचन-काय की प्रवृत्ति आदि प्रमुख हैं। योग को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का हेतु माना गया। भारत में योग को मात्र शारीरिक प्रक्रियाओं से जोड़कर नहीं देखा गया। क्योंकि भारत की मूल चेतना आध्यात्मिक रही है। यह भारत का प्राण, राष्ट्र का ओज, जीवन का आदर्श और नैतिक प्रेरणा का सनातन स्रोत रहा है। भारतीय योग भी इसी अध्यात्म चेतना से जुड़ा हुआ तत्त्व है, जिसका मूल लक्ष्य **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः** को प्रतिष्ठित करना है।

जैन भारती के इस अंक में भारतीय योगसाधना एवं प्रेक्षाध्यान, प्राणायाम आदि पर आलेख के माध्यम से जीवन में योग की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत ज्ञान और ध्यान का विवेचन करते हुए उन्हें एक ही चित्त की दो अवस्थाएं मानी हैं। चित्त की चंचल अवस्था को ज्ञान और स्थिर अवस्था को ध्यान कहा है। वे मानते हैं कि ध्यान के दो प्रयोजन हैं - 1. कुछ व्यक्ति तनाव आदि की समस्या से मुक्त होने के लिए ध्यान करते हैं। 2. कुछ व्यक्ति आध्यात्मिक विकास, आंतरिक शक्तियों के जागरण के लिए ध्यान करते हैं। अतः आवश्यक है कि हम योग को व्यापक संदर्भों में देखें और उन्हें अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएँ।

जून मंहीने की 5 तारीख को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में आयोजित कर जनमानस में पर्यावरण की सुरक्षा हेतु चेतना जागृत करने का प्रयास किया जाता है। पर्यावरण की सुरक्षा हमारे लिए कितना अहम है, इसे आचार्य श्री महाप्रज्ञ के आलेख के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः आधुनिक युग की भोगवादी प्रवृत्ति ने प्रकृति का निरंकुश भाव से दोहन किया है। इसका प्रभाव पर्यावरण पर पड़ा है और वह एक बड़े संकट के दौर से गुजर रहा है। जिस गति से पर्यावरण में

प्रदूषण फैल रहा है वह निकट भविष्य में एक भयंकर रूप धारण कर लेगा, इस ओर सभी चिंतनशील लोगों ने सोचना शुरू कर दिया है और इस समस्या के समाधान के लिए सरकारी एवं गैर-सरकारी सभी स्तरों पर कार्य भी किए जा रहे हैं, परंतु आज आवश्यकता है कि इस समस्या को मूल को समझा जाए और भगवान महावीर के अहिंसा के सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में इसके समाधान हेतु कारगर तौर पर सभी स्तरों पर प्रयास किया जाए।

इस समस्या का एक महत्वपूर्ण सूत्र मानव चरित्र से संबंधित है, जिसमें संयम, आत्मशुद्धि, अहिंसा, करुणा, मैत्री, मानवकल्याण की भावना जैसे गुणों को विकसित किए बिना पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो सकती।

पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण की एक कविता में इस ओर ध्यान आकर्षित किया गया है, जिनमें धर्म, अध्यात्म और जीवन को गहराई से समझने का संबोध दिया गया है। इस कविता की मार्मिक पंक्तियाँ संपूर्ण मानव समाज को अपने भीतर झांकने के लिए प्रेरित करती हैं -

आत्मशुद्धि का खुलता जिससे द्वार है।
वही धर्म है सारभूत, बाकी समझो निस्सार है॥
मंदिर में तो रोज गया पर रही कामना हरदम साथ।
हाथ न आया कुछ भी उससे व्यर्थ गया सारा पुरुषार्थ।
जहाँ कामना दुःख वहाँ तैयार है॥१॥
घंटों-घंटों भजन किया पर हुआ न प्रभु से साक्षात्कार।
किया गहन ज्ञानार्जन फिर भी हुआ न भीतर सुख-संचार।
शांति-प्राप्ति में बाधक विकृत विचार है ॥२॥
संन्यासी का वेश लिया पर ग्रंथि-विमोचन किया नहीं।
औरों को उपदेश दिया पर स्वयं आचरण किया नहीं।
आदर्शों पर चलना प्रभु से प्यार है ॥३॥
अभय, अहिंसा, करुणा, मैत्री, सत्य-तत्त्व की जिज्ञासा।
विनयशीलता, आत्मसमर्पण, साहस, सहज मधुर भाषा।
शुद्ध संतता के ये गुण आधार हैं ॥४॥

कमल कुमार दुगड़

शारीरिक दुख से भी बड़ा दुख है मानसिक। इसका उपचार सहज नहीं है। इस दुख का निवारण साधना से प्राप्त विवेक द्वारा ही किया जा सकता है। मति, बुद्धि और प्रज्ञा की त्रिवेणी को प्रवाहित करने वाले तेरापंथ धर्मसंघ के चौथे आचार्य श्रीमद् जयाचार्य ने मानसिक चिकित्सा के महाग्रंथ के रूप में 'आराधना' की रचना की थी। उद्धृत है जयाचार्य के चिंतन की झलकियाँ।

मानसिक दुःख की चिकित्सा

जयाचार्य

साधना का आदि सूत्र है विवेक। उससे इन्द्रियां वश में होती हैं, चित्त वृत्तियां शान्त होती हैं, तन और मन वश में होते हैं। वह सबसे बड़ा मित्र है।

ज्ञानावरण आदि सात कर्म बंधे हुए हैं। वे भोग लेने पर छूट जाते हैं - निःशेष हो जाते हैं। मोह का मन्द विपाक भी नए मोह-चित्त का निर्माण करता है। उसे विवेक द्वारा ही निःशेष किया जा सकता है।

- आठों कर्मों में मोह कर्म महाराजा है। उसे उपशान्त करने के दो उपाय बताए गए हैं - बहिरंग और अभ्यन्तर।

भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी और सूर्य का आतप इन्हें सहनकर शरीर और मन को वश में करना - यह मोह के उपशम का बहिरंग उपाय है।

मोह से मन में विकल्प पैदा होते हैं और मन से ही मोह उपशान्त होता है। यह मोह के उपशम का अभ्यन्तर उपाय है। उसका नमूना प्रस्तुत कर रहा हूँ।

हे चेतन ! तुझे बार-बार समझाता हूँ। तू मेरी हितकर शिक्षा को मान।

मोह को उपशान्त करने का उपाय है समता। यह एक सुखकर आलम्बन है। समताभाव की निरन्तर साधना करने पर प्रियता और अप्रियता के क्षणों से निरन्तर बचने पर असीम आनन्द प्रकट होता है।

क्रोध, मान, माया, लोभ, राग और द्वेष - ये सब दुःख देने वाले शत्रु हैं। इन्हें समताभाव की साधना के द्वारा ही उपशान्त किया जा सकता है।

मोहकर्म की अठाईस प्रकृतियां हैं। वह अति क्रूर और अनाड़ी है। मोह कर्म की सभी प्रकृतियों का उपशम होता है, यह भगवान ने बतलाया है। उसका कारण है समता। उसे चित्त

में धारण कर।

शान्त, दान्त और समचित्त सुखकर होता है, इसलिए विकार पैदा करने वाले मोह के मतवालेपन को छोड़। यह मतवालापन बहुत दुःख देने वाला है। नरक आदि का अनुदान भी इसी से मिलता है।

मोह के उन्माद (मतवालेपन) को मिटा, समता का वरण कर, मन में उठनेवाली भाव-तरंगों का निवारण कर, ये सब तुम्हारे वश की बातें हैं। ऐसा करने पर ही तू सुख का अधिकारी हो सकेगा।

जो अपने अवगुणों को देखते हैं, निरंतर ध्यान करते हैं, चित्त को समता से पूर्ण कर अवगुणों को छोड़ते हैं, वे स्त्री-पुरुष सयाने हैं।

क्रोध, मान, माया और लोभ की तरंगों का परिहार कर, प्रति क्षण उपयोग लगा - चित्त को जागरूक बना, उन्हें पहचान और समता-पूर्ण चित्त का निर्माण कर।

यह अवसर है, तुझे इस समय इनका (क्रोध, मान, माया और लोभ) पार पाने की सामग्री मिली है। तू क्षण भर भी प्रमाद मत कर। विकार पैदा करने वाले मोह के मतवालेपन को छोड़।

सात कर्मों का उपशम नहीं होता, यह भगवान ने कहा है। केवल मोहकर्म का उपशम होता है। यह मोह कर्म एक खतरनाक झोला है, पवन है।

मोह का उन्माद और प्रकृति की विकलता - ये दोनों बड़े अवगुण हैं। तू निर्मल और विशुद्ध समता को स्वीकार कर, विकार पैदा करने वाले मोह के उन्माद को छोड़।

आन्तरिक दृष्टि के द्वारा तू मोह के उन्माद के स्वरूप को पहचान। सूक्ष्म बुद्धि से आलोचना कर। विकार पैदा करने वाले मोह के उन्माद को छोड़।

मोह के उन्माद के प्रभाव से तू अपने सहज स्वभाव को भूल गया। यह मोह का उन्माद समतापूर्ण चित्त से ही मिट सकता है। इसलिए अब तू उसका अभ्यास कर।

समभाव का रस सुखकर और हितकर है, तू प्रतिक्षण

उसका अभ्यास कर। शब्द आदि इन्द्रिय-विषय (प्रियता-अप्रियता में फँसाकर) दुर्गति के कारण बनते हैं। इसलिए उन्हें तू छोड़ और दिल में उत्साह बढ़ा।

समभाव के रस का आलम्बन सुखकर है। तू उसे रात-दिन दिल में धारण कर। विषमता (प्रियता और अप्रियता का संवेदन) सावद्य आलम्बन है। उसका त्याग कर, मुझे असीम आनंद मिलेगा।

तुझे मनोनुकूल शब्द, रूप, रस, गन्ध और स्पर्श प्रचुर मात्रा में मिले हैं (यह कोई महत्ता नहीं)। यदि तू इनके प्रति होने वाली राग की लहर को मिटाता है तो तेरी महत्ता या प्रभुत्व है।

तू समभाव को धारण कर। तन और मन से इन्द्रिय-विषयों की लहर को त्यागता है तो मैं मानूंगा तू शूर है, पराक्रमी है और शिखर तक पहुँचने वाला है।

यदि तू स्तुति की शब्दावली को सुनकर अंतःकरण में सम रहता है, निंदा की शब्दावली को सुनकर विचलित नहीं होता तो तेरी बलिहारी है।

यदि तू सुंदर और अलंकृत रूप को देखकर मुग्ध नहीं होता और अशुभ रूप देखकर क्रुद्ध नहीं होता तो तू जगत का अधिकारी है।

यदि तू अपने आपको परवश नहीं बनाता है, पुद्गल-पदार्थ से प्यार नहीं करता है, मोह को उपशांत करने में कला का उपयोग करता है तो तेरी चतुराई है।

यदि तू क्रोध, मान, माया और लोभ की एक छोटी-सी लहर भी पैदा नहीं करता है और समभाव से मोह का निवारण करता है तो तू निपुण है, प्रवीण है, चतुर है।

तन और मन से विषयों से पैदा होने वाली लहर मिटे, तू ऐसी होशियारी कर। प्रतिक्षण मन से मन को जीतना - तू यही व्यापार कर।

नट अपने अभ्यास के प्रभाव से बांस पर तन्मयता से नाचता है। इसी प्रकार मन को वश में करने वाले समभाव के अभ्यास को प्रतिदिन बढ़ा।

सोते, उठते, बैठते तथा नाना प्रकार के कार्य करते समय समभाव की स्मृति कर, इस अभ्यास को प्रतिक्षण बढ़ा। प्रतिक्षण समता के प्रति जागरूक रह। मोह को उपशान्त कर। जो जागरूक होता है उस पर शत्रु का किंचित भी दाव नहीं लगता।

तू अपने आपको साहसिक, शूरवीर और सरदार मानता है। यदि तू समभाव से मन को वश में करता है तो मैं मानूंगा कि तू होशियार है।

कोई आदमी युद्धस्थली में दस लाख योद्धाओं को जीतता है और एक आदमी अपने आपको जीतता है,

यह सबसे बड़ी जीत है।

जो पौद्गलिक सुखों को खुजली जैसा और शत्रुओं से बढ़कर शत्रु मानता है तथा जो समभाव से मोह को उपशान्त कर देता है वही शूर-शिरोमणि होता है।

समभाव का अभ्यास करने से असीम आन्तरिक सुख प्रकट होता है। मानसिक दुःख रूपी वृक्षों को काटने के लिए यह एक तीखी कुल्हाड़ी है।

मन की चिन्ता, व्यथा और आपदा को मिटाने के लिए समता का भाव अनुपम औषधि है। उत्तम स्त्री-पुरुष उसे स्वीकार करते हैं। ■

संगत की संगत

मगध का राजा एक दिन घोड़े पर सवार होकर जंगल में गया। वह अपने घोड़े को एक पेड़ के नीचे बांधकर आराम करते लगा। पेड़ की डाली पर एक तोता बैठा हुआ था। वह राजा को राजसी गहनों से लैदा हुआ देखकर जोर-जोर से बोलना शुरू किया - 'अरे ! मेरे डाकू भाइयो ! गहनों से लदे इस राजा को जल्दी लूटो !'

राजा संयोग से पशु-पक्षियों की भाषा समझता था। वह तुरन्त सचेत होकर घोड़े पर सवार हुआ और डाकूओं की पहुँच से बहुत दूर निकल गया। डाकू उसे नहीं पकड़ पाए।

राजा पुनः थककर विश्राम के लिये फिर एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठा। वहाँ भी डाल पर एक तोता बैठा था। वह राजा को देखते ही बोला - 'ऋषि-मुनियो ! आओ। राजा का स्वागत करो।'

तभी एक मुनि आये और राजा से बोले - 'महाराज ! हमारी कुटिया में पधारें और हमारा आतिथ्य ग्रहण करें।' राजा मुनियों द्वारा किए गए आदर-सत्कार से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने मुनिश्री को पहले वाली घटना सुनाई और पूछा कि एक ही जाति के दो तोतों के बीच स्वभाव में इतना अंतर कैसे हुआ ?

मुनिश्री ने जवाब दिया कि यह सब संगत का असर है। पहले वाला तोता डाकूओं की संगत में रहता है और दूसरा साधुओं की संगत में। अच्छी संगत से स्वभाव भी अच्छा हो जाता है।

विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून पर विशेष

पर्यावरण की सुरक्षा का संबंध आज मानव जीवन की सुरक्षा से जुड़ गया है। लेकिन स्वयं मनुष्य द्वारा जिस तेजी से पर्यावरण को नुकसान पहुँचाया जा रहा है वह प्रत्येक चिंतनशील प्राणी के लिए गहन चिंता का कारण बन गया है। पर्यावरण की सुरक्षा बाहरी परिस्थितियों और उपायों से किसी भी प्रकार संभव नहीं है। इसके लिए मनुष्य को अपनी सोच को बदलना होगा, अपने स्वार्थ को संयमित करना होगा।

स्वस्थ हो भीतर का पर्यावरण

आचार्य महाप्रज्ञ

आज पूरे विश्व में पर्यावरण की चर्चा हो रही है, उस पर चिंता व्यक्त की जा रही है। इसके बावजूद पर्यावरण में कोई सुधार हो रहा है, ऐसा प्रतीत नहीं होता। इतनी चर्चा, इतने कॉन्फ्रेंस, इतनी शिखरवार्ताएं की जा रही हैं। इतना भारी भरकम बजट भी कोई सुधार नहीं ला रहा है। आगे भी कोई सुधार होगा, इसकी संभावना दिखाई नहीं देती।

समस्या का मूल कहां है? दिक्कत यह है कि हम केवल समस्या को देखते हैं, उसके उत्स को नहीं देखते। हमारी दृष्टि स्थूल है। वह सूक्ष्म तक नहीं जाती। प्रश्न यह है कि पर्यावरण बिगाड़ता कौन है? पर्यावरण बिगाड़ता है आदमी। जब तक पर्यावरण को बिगाड़ने वाले आदमी के भीतर का पर्यावरण स्वस्थ नहीं होगा, तब तक बाहर का पर्यावरण अच्छा नहीं होगा। जंगलों की कटाई किसने की? वन्य जीवों का सफाया किसने किया? खनन प्रक्रिया से धरती का अंधाधुंध दोहन किसने किया? प्लास्टिक के कचरे को किसने फैलाया? बिना-सोचे समझे नदियों का प्रवाह रोक कर बांधों का निर्माण किसने किया? धरती को जलमग्न या बंजर किसने बनाया? विषैली गैसों का निर्माण किसने किया? प्राकृतिक जैव खादों की बजाय कृत्रिम फर्टिलाइजर (रासायनिक खाद) का आविष्कार और उपयोग किसने किया? परमाणु बम, हाइड्रोजन बम और उद्‌जन बम किसने बनाए? ये सब आदमी की ही तो देन है। अब प्रकृति असहयोग कर रही है तो उसका क्या दोष?

जंगलों की अंधाधुंध कटाई के बाद अब कह रहे हैं कि जंगल लगाए जाने चाहिए। यह ध्यान नहीं है कि विनाश करना आसान है, निर्माण करना कठिन है। एक बड़े पेड़ को काटने में

कितना समय लगता है? घंटा, दो घंटा। लेकिन उसी पेड़ को तैयार करने में कितना समय लगता है? पचासों वर्ष। एक भरी-पूरी बस्ती को उजाड़ने में, ध्वंस करने में पांच-सात मिनट से ज्यादा नहीं लगते, किंतु उस बस्ती को बसाने में अनेक वर्ष लग जाएंगे। आदमी इस बात को समझकर भी नहीं समझ पा रहा है।

आदमी की यह अजीब-सी प्रवृत्ति है कि वह पहले अपने लिए समस्या पैदा करता है, फिर उसके समाधान का उपाय खोजता है। समस्या पैदा करने के पीछे मुख्य कारण है धन के प्रति बढ़ती जा रही उसकी लालसा। पर्यावरण विनाश के पीछे भी उसकी लोभवृत्ति ही काम कर रही है। पेड़ कटने से लकड़ी महंगी से महंगी होती गई। वृक्षों की कटाई कानूनन जुर्म घोषित होने के बाद भी कटाई का सिलसिला रुका नहीं। इमारती लकड़ी के बढ़ते मूल्यों ने इस व्यापार को बहुत बढ़ावा दिया। कीमती लकड़ी एक राज्य से दूसरे राज्य में अवैध तरीके से भेजी जाने लगी।

पर्यावरण को मत देखो, पर्यावरण की समस्या पैदा करने वाले को देखो। केवल पर्यावरण की समस्या पर ही अटके रह गए तो पर्यावरण सुधार के लिए किया जाने वाला हर प्रयत्न बेकार सिद्ध होगा। पर्यावरण खराब क्यों हो रहा है? उस पर विचार करो, उसका सुधार करो।

बड़ी अजीब बात है कि जो राष्ट्र अधिकाधिक उत्पादन के लोभ में पर्यावरण को खराब कर रहे हैं, वे ही पर्यावरण की समस्या को लेकर ज्यादा शोर मचा रहे हैं। भारत में आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए उत्पादन पर बहुत जोर दिया जा रहा है। हर राज्य अपने यहां पूंजी निवेश के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आमंत्रित कर

रहा है। उनकी हर शर्तें स्वीकार की जा रही हैं। एक प्रतिस्पर्धा-सी चल रही है कि कौन अपने यहां ज्यादा से ज्यादा उद्योग धंधा लगाने में आगे रहता है? इस प्रतिस्पर्धा में पर्यावरण को पूरी तरह से गौण किया जा रहा है।

भारत में प्लास्टिक का उपादन देखते ही देखते चरम सीमा पर पहुंच गया। इसने पर्यावरण के विनाश में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई है। इसके दुष्परिणामों से कोई अपरिचित नहीं है। कूड़े-कचरे के ढेर पर पड़े प्लास्टिक की थैलियों को खाकर कितने मवेशी मरते हैं। नालियों में पड़ा प्लास्टिक सफाईकर्मियों के लिए समस्या बन रहा है। गांवों और कस्बों की छोड़ें, पहाड़ भी अब गंदगी से नहीं बच पा रहे हैं। हजारों टन कचरा हिमालय की पहाड़ियों पर बिखरा पड़ा है। पर्वतारोहण करनेवाली टीमों अपने साथ ले गई चीजें कचरे के रूप में वहीं छोड़ देती हैं। वहां

नगरपालिका तो है नहीं कि दूसरे दिन वहां की सफाई कर दे। कितने ही दशकों का कचरा वहां बिखरा पड़ा है। वह पर्यावरण को ही प्रदूषित करता है।

मैं कहता हूँ कि पर्यावरण की चिंता आप एक बार छोड़ दें। प्रयत्न यह करें कि आदमी कैसे बदले? आदमी को बदलो, पर्यावरण की समस्या अपने आप हल हो जाएगी। आदमी की वृत्ति में बदलाव कैसे आए? हमारी समस्या यह है कि जो दिखाई दे रहा है उसे बदलने का प्रयत्न करते हैं, जो अदृश्य है, सामने नहीं है, उसे बदलने का कोई प्रयत्न नहीं होता। उसे जानबूझकर गौण कर देते हैं।

भगवान महावीर ने श्रावक के लिए पंद्रह कर्मादान

‘संयमः खलु जीवनम्’ के पाठ का उच्चारण ही नहीं, इसे हृदयंगम भी करो। जब तक इंद्रियों का संयम है, आत्मा सुरक्षित है। यह संयम नहीं रहा तो आत्मा सुरक्षित नहीं रह सकेगी। असुरक्षित आत्मा सारी दुनिया को असुरक्षित बना देती है।

बतलाए थे। उनमें एक कर्मादान है - वृक्ष की सुरक्षा। वृक्ष काटने को भारी कर्मादान माना गया है। लालच में आदमी अंधा हो जाता है, अन्यथा उसे दिखाई देता कि जंगल काटने से कितने पशु-पक्षी और दूसरे जीवों की विराधना होती है। पर्यावरण को संतुलित रखने में जीवों का बहुत बड़ा योगदान है। पेड़-पौधे ऑक्सीजन तो देते ही हैं, धरती के क्षरण और कटाव को भी रोकते हैं, मौसम में कोई व्यतिक्रम नहीं आने देते। जंगल कट जाने से इस धरती के कितने ही दुर्लभ प्राणी विलुप्त हो गए, समाप्त हो गए। आश्रय ही नहीं रहा तो रहेंगे कहां? वृक्षों को उजाड़कर, आदमी ने अपने लिए कंक्रीट की पक्की इमारतें बनवा लीं। अपनी सुविधा और फायदे के लिए दूसरे का आश्रय छीनना आदमी की प्रवृत्ति है। यह स्वार्थ की पराकाष्ठा है।

आत्मा की रक्षा करो - यह सूत्र बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रश्न है आत्मा की रक्षा कैसे हो सकती है? इंद्रियों की मांग कभी पूरी नहीं होती। उसकी मांग का संयम करो, उस पर अंकुश लगाओ। 'संयमः खलु जीवनम्' के पाठ का उच्चारण ही नहीं, इसे हृदयंगम भी करो। जब तक इंद्रियों का संयम है, आत्मा सुरक्षित है। यह संयम नहीं रहा तो आत्मा सुरक्षित नहीं रह सकेगी। असुरक्षित आत्मा सारी दुनिया को असुरक्षित बना देती है।

आज अतृप्ति के कारण आदमी इंद्रियों का दास बन गया। वह प्रतिपल इंद्रियों के साथ चल रहा है। यह अतृप्ति सुरक्षा के कवच को तोड़ रही है। हम कैसे तृप्ति का पाठ पढ़ें? मन जब उसमें सहायक बन रहा है तो तृप्ति कैसे हो? मन को छठी इंद्रिय माना गया है। अतृप्ति को बढ़ाने में मन का भी बहुत योग है। मन की चंचलता

और इंद्रियों की मांग - इन दोनों की मांग को पूरा करने के लिए आदमी पर्यावरण को विकृत करता है। जब तक यह मांग बनी रहेगी, भविष्यवाणी की जा सकती है कि पर्यावरण का सुधार नहीं हो सकेगा। कितना ही प्रयत्न कर लिया जाए, कितने ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनार कर लिए जाएं, कितने ही बड़े बजट का प्रावधान कर लिया जाए, समाधान नहीं हो सकेगा।

अहिंसा प्रशिक्षण के कार्यकर्ताओं ने जंगलों पर निर्भर आदिवासियों से बात की तो उन लोगों ने कहा - 'हमारे जीवन के सारे साधन और सहारे छीन लिए गए। जंगलों को उजाड़ा जा रहा है, हमें कोई काम नहीं दिया जा रहा है, ऐसी स्थिति में हम क्या करें? हथियार उठाना, अपराध करना, लूटमार करना हमारा शौक नहीं, यह तो हमारी मजबूरी है। जिंदा रहने के लिए

पर्यावरण-रक्षण एक प्रकार से जीने की कला है। जीने की कला का मतलब पर्यावरण की सुरक्षा और पर्यावरण की सुरक्षा का मतलब है आत्मा की सुरक्षा। एक पूरी जूंखला बनती है। इस चेन को काट देंगे तो सारा संतुलन गड़बड़ा जाएगा।

कुछ करना जरूरी हो जाता है। हमारे लिए मरता क्या न करता की स्थिति है। इसलिए हमारे बच्चे अपराध में जा रहे हैं, लूटमार का पेशा अपना रहे हैं।'

नक्सलवाद, उग्रवाद कहकर हम किसी समस्या को उपेक्षित नहीं कर सकते। यह निश्चित बात है कि कोई शौक से नक्सली नहीं बनता।

जीवन बहुत लंबा नहीं होता। मनुष्य का जीवन कितने वर्षों का है? अस्सी-पचासी और ज्यादा से ज्यादा नब्बे, पंचानवे वर्ष का। काल अनंत है। उसके साथ तुलना करें तो सत्तर-अस्सी वर्ष कुछ भी नहीं। लेकिन इतने थोड़े जीवन वाला मनुष्य केवल वर्तमान में उलझ कर रह जाता है। वह भविष्य को नहीं देखता। अगर दृष्टि सूक्ष्म हो और भविष्य-दर्शन हो तो आदमी कभी कोई अपराध नहीं करेगा। पर्यावरण को बिगाड़ना एक

अपराध ही तो है। भारतीय दंड संहिता में यह अपराध की श्रेणी में नहीं आता, किंतु है अपराध ही। गंगा-यमुना के जल को प्रदूषित करने का मतलब है लाखों जलचर जीवों को निर्ममतापूर्वक मार देना। कभी-कभी समुद्र में जहाजों पर लदे रासायनिक पदार्थों का रिसाव होता है तो

हजारों टन मछलियां और दूसरे जीव समाप्त हो जाते हैं। क्या यह अपराध नहीं है?

तर्क दिया जाता है कि सारी सृष्टि की रचना मनुष्य के लिए की गई है। मनुष्य की यह धारणा मिथ्या है कि सृष्टि की रचना उसके लिए की गई

है। इस बहाने वह अपने कुकृत्य को सही नहीं ठहरा सकता।

मनुष्योचित कर्म और कर्तव्य तो यह है कि छोटे से छोटे जीव के प्रति भी कोई अन्याय न हो। अहिंसा और करुणा की यह भावना जागृत हो जाए तो फिर पर्यावरण की समस्या समस्या नहीं रहेगी। बहुत आवश्यक है कि हम अपनी आत्मा की रक्षा करें। उसका उपाय यह है कि हम इंद्रियों की हर मांग को पूरा न करें। संयम करें।

जीवन में असंयम आया तो समझ लें मरने की तैयारी

शुरू हो गई। संयम से रहो तो तुम भी जिओगे और दूसरा भी जियेगा। संयम से नहीं रहोगे, तो तुम भी मरोगे और दूसरों को भी मारोगे। असंयम ही तो सारी समस्या की जड़ है। इस जड़ को काट दो, समस्याएं अपने आप समाप्त हो जाएंगी।

बड़ी अजीब बात है कि जो राष्ट्र अधिकाधिक उत्पादन के लोभ में पर्यावरण को खराब कर रहे हैं, वे ही पर्यावरण की समस्या को लेकर ज्यादा शोर मचा रहे हैं।

पर्यावरण-रक्षण एक प्रकार से जीने की कला है। जीने की कला का मतलब पर्यावरण की सुरक्षा और पर्यावरण की सुरक्षा का मतलब है आत्मा की सुरक्षा। एक पूरी जूंखला बनती है। इस चेन को काट देंगे तो सारा संतुलन गड़बड़ा जाएगा। इन

सब बातों पर ध्यान देकर एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण करें। पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति प्रत्येक व्यक्ति को सचेत और प्रेरित करें। मनुष्य जीवन बहुत मूल्यवान है। इसे संयम के साथ जीएं।

मैं फिर से कह दूँ कि पर्यावरण की सुरक्षा बाह्य परिस्थितियों और उपायों से किसी भी प्रकार संभव नहीं है। इसके लिए मनुष्य स्वयं में आंतरिक परिवर्तन लाएं। अपनी चेतना को बदले तभी यह संभव है। ■

**लब्ध्वा सुदुर्लभतरं नरजन्म जन्तुस्तत्रापि पौरुषमतः सदसद्विवेकम् ।
सम्प्राप्य चैहिकसुखाभिरतो यदि स्याद् धिक तस्य जन्म कुमतः परुषाधमस्य ॥**

- शंकराचार्य

प्रभु ने देवदुर्लभ मनुष्य शरीर दिया है और साथ ही विवेक-बुद्धि का अमोघ दान भी दिया है। विवेक से नित्य एवं अनित्य और आत्मा-अनात्मा का भेद समझकर अनित्य और अनात्मा को छोड़ने और नित्य एवं आत्मस्वरूप को प्राप्त करने में ही मानव शरीर की सार्थकता है।

महावीर वाणी

महावीर वाणी में निहित सत्य का आलोक लोक-जीवन में पहुँचे, यह आवश्यक है। पाठक महावीर वाणी की गहराई में उतरकर अपने जीवन को नई दिशा दे सकते हैं। श्रामण्य एक कठिन व्रत है, जिसका पालन करना सभी के वश में नहीं होता। किंतु जिनमें प्रव्रज्या की भावना प्रबल हो जाती है उनके लिए कुछ भी कठिन नहीं होता। संयम के प्रति अनुरागी बने एक पुत्र और माता-पिता के बीच हुए संवाद के कुछ चयनित अंश नीचे दिए जा रहे हैं, जो अत्यंत रोचक, प्रेरक एवं संबोध प्रदान करने वाले हैं।

श्रामण्य और प्रव्रज्या

विसएहि अरज्जन्तो रज्जंतो संजमम्मि य ।

अम्मापियरं उवागम्म इमं वयणमब्बवी । ।

सांसारिक विषयों के प्रति कोई प्रेम न रहने और संयम में अनुरक्त हो जाने के कारण एक वैरागी पुत्र अपने माता-पिता के पास आकर बोला -

सुयाणि मे पंच महव्वयाणि । नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।

निव्विण्णिकामो मि महण्णवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो । ।

हे माता ! मैंने पाँच महाव्रत सुने हैं। नरक और तिर्यच योनियों में दुःख है। मैं इस संसार-रूपी समुद्र से निवृत्त होने की कामना रखता हूँ। हे माता ! मैं प्रव्रज्या ग्रहण करूँगा। मुझे आज्ञा दें।

असासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामहं ।

पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे । ।

यह शरीर फेन के बुदबुद की तरह क्षणभंगुर है। इसे पहले या पीछे अवश्य छोड़ना पड़ता है। इस अशाश्वत शरीर में मुझे जरा भी आनन्द नहीं मिलता।

जहा गेहे पलित्तम्मि तस्स गोहस्स जो पहू ।

सारभंडाणि नीणेइ असारं अवउज्झइ । ।

एवं लोए पलित्तम्मि जराए मरणेण य ।

अप्पाणं तारइस्सामि तब्भेहिं अणुमन्निओ । ।

जैसे घर में आग लग जाने पर उस घर का मालिक उपयोगी वस्तुओं को घर से निकाल लेता है और बेकार की वस्तुओं को छोड़ देता है, वैसे ही आपकी अनुमति से मैं बुढ़ापा और मृत्यु रूपी अग्नि से जलते हुए इस लोक से अपनी आत्मा का उद्धार करूँगा। हे माता-पिता ! आप मुझे आज्ञा दीजिए।

तं विंतऽम्मापियरो सामण्णं पुत्ता ! दुच्चरं ।

गुणाणं तु सहस्साइं धरेयव्वाइं भिक्खुणो ।।

माता-पिता बोले - "हे पुत्र ! भिक्षु को सहस्रों गुण धारण करने पड़ते हैं। श्रामण्य बड़ा कठिन धर्म है।

समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा जगे ।

पाणाइवायविरईजावज्जीवाए दुक्करा ।।

शत्रु-मित्र एवं संसार के सभी प्राणियों के प्रति समभाव और संपूर्ण जीवन प्राणातिपात से विरति, यह दुष्कर है।

निच्चकालऽप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं ।

भासियव्वं हियं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं ।।

सदैव अप्रमत्त भाव से झूठ का विसर्जन करना तथा सावधानीपूर्वक हितकारी सत्य वचन बोलना यह कठिन कार्य है।

विरई अबम्भचेरस्स कामभोगरसत्तुणा ।

उगं महव्वयं बम्भं धारेयव्वं सुदुक्करं ।।

कर्मभोग के रस को जान चुके व्यक्ति के लिए अब्रह्मचर्य से विरति और सारे जीवन ब्रह्मचर्य रूपी महाव्रत का पालन करना अत्यंत दुष्कर है।

धणधन्नपेसवगोसु परिग्गहविवज्जणं ।

सव्वारम्भपरिच्चाओ निम्ममत्तं सुदुक्करं ।।

धन, धान्य, प्रेष्य वर्ग आदि परिग्रह का पूरे जीवन के लिए विवर्जन तथा सर्व आरम्भ का त्याग एवं निर्ममत्व भाव दुष्कर है।

छुहा तण्हा य सीउण्हं दंसमसगवेयणा ।

अक्कोसा दुक्खसेज्जा य तण्फासा जल्लमेव य ।।

तालाणा तज्जणा चेव वहबन्धपरीसहा ।

दुक्खं भिक्खायरिया जायणा य अलाभया ।।

क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, डॉस और मच्छरों की वेदना, आक्रोश, कष्टप्रद स्थान, तृण का बिछौना, मैल, ताड़ना, तर्जना, बध और बंध का परीषह और भिक्षाचर्या, याचना और अलाभ - इन्हें सहन करना कठिन है।

सुहोइओ तुमं पुत्ता ! सुकुमालो सुमज्जिओ ।

न हु सी पभू तुमं पुत्ता ! सामण्ण मणुपालिउं ।।

हे पुत्र ! तू सब भोगने के योग्य हो। सुकुमार और साफ-सुथरा रहनेवाले हो। अतः हे पुत्र, तू श्रामण्य पालन करने में समर्थ नहीं है।

वालुयाकवले चेव निरस्साए उ संजमे ।

असिधारागमणं चेव दुक्करं चरिउं तवो ।।

संयम बालू के कवल की तरह नीरस है तथा तप का आचरण तलवार की धार पर चलने के समान दुष्कर है।

जहा अग्गिसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करं ।

तह दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ।।

जिस तरह प्रज्वलित अग्निशिखा को पीना अत्यंत दुष्कर है, उसी प्रकार तरुणावस्था में श्रमणत्व का पालन करना बड़ा दुष्कर है।

जहा तुलाए तोलेउं दुक्करं मंदरो गिरी ।

तहा निहुयं नीसंकं दुक्करं समणत्तणं ।।

जैसे मेरु पर्वत को तराजू में तौलना दुष्कर है, वैसे ही निश्चल और निःशंक भाव से श्रमणत्व का पालन करना दुष्कर है।"

तं बिंतऽम्मापियरो एवमेयं जहा फुडं ।

इह लोए निष्पिवासस्स नत्थि किंचि वि दुक्करं ।।

वैरागी बोला - "हे माता-पिता ! आपने प्रब्रज्या के विषय में जो सब कहा है, वह सत्य है पर इस लोक में जो तृष्णारहित है उसके लिए कुछ भी दुष्कर नहीं।

माणुसुत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए ।

जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽहं ।।

यह मनुष्य जीवन असार है। व्याधि और रोग का घर है। जरा और मरण से ग्रस्त है। इसमें मुझे एक क्षण के लिए भी आनन्द की प्राप्ति नहीं हो रही है।

तं बित्तं ऽम्मापियरो छन्देणं पुत्तं ! पव्वया ।
नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ।।

माता-पिता ने उससे कहा : तुम्हारी इच्छा है तो प्रव्रजित हो जाओ, परंतु साधु जीवन में रोगों की चिकित्सा नहीं की जाती, यह भी सहन करना दुष्कर है।

सो बित्तं ऽम्मापियरो! एवमेयं जहाफुडं ।
पडिकम्मं को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं ।।

वैरागी ने माता-पिता से कहा : आपने जो कहा वह ठीक है किन्तु जंगल में हिरण और पक्षियों की चिकित्सा कौन करता है?

एगभूओ अरण्णे वा जहा उ चरई मिगो ।
एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य ।।

जैसे जंगल में हरिण अकेला विचरता है, वैसे ही मैं संयम और तप के साथ एकाकी भाव को प्राप्त कर धर्म का आचरण करूंगा।

जया मिग्गस्स आयंको सहारण्णम्मि जायई ।
अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई ?

जब जंगल में किसी पेड़ के नीचे बैठे हुए हिरण के शरीर में कष्ट उत्पन्न होता है तब उस हिरण की चिकित्सा कौन करता है?

को वा से ओसहं देई ? को वा से पुच्छई सुहं ?
को से भत्तं च पाणं च आहरित्तु पणामए ?

कौन उसे औषधि देता है? कौन उससे सुख की बात पूछता है? कौन उसे आहार-पानी लाकर देता है?

जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं ।
भत्तपाणस्स अट्टाए बल्लराणि सराणि य ।।

जब वह स्वस्थ हो जाता है तब गोचरी के लिए जाता है। खाने के लिए लता-निकुंजों में एवं प्यास बुझाने के लिए जलाशयों में जाता है।

एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेव अणेगओ ।
मिगचारियं चरित्ताणं उट्ठं पक्कमई दिसं ।।

इसी प्रकार संयम के लिए उठा हुआ भिक्षु स्वतंत्र विहार करता हुआ मृग-चर्या का आचरण कर ऊँची दिशा-मोक्ष को प्राप्त करता है।

जहा मिगे एग अणेगचारी अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणी गोवरियं पविट्ठे नो हीलए नो वि य
खिंसएज्जा ।।

जिस प्रकार मृग अकेला अनेक स्थानों में विचरनेवाला, अनेक स्थानों में रहनेवाला और सदा गोचरी से जीवन-यापन करनेवाला होता है, वैसे ही श्रमण होता है। गोचरी में प्रविष्ट मुनि जब भिक्षा के लिए जाता है तब किसी की अवज्ञा या निंदा नहीं करता।

मियचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुम्भेहिं अम्म ! ऽणुत्राओ गच्छ पुत्त ! जहासुहं ।।

हे माता-पिता ! आप दोनों की अनुज्ञा पाकर मैं मृग-चर्या का आचरण करूंगा। प्रव्रज्या सभी दुःखों से मुक्त करनेवाली है।

माता-पिता बोले : हे पुत्र ! जाओ जिसमें तुम्हें सुख मिले वह करो।

इडिंढ वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ ।।
रेणुयं व पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ ।।

जैसे कपड़े में लगी हुई धूलकण को झाड़ दिया जाता है, उसी प्रकार ऋद्धि, वित्त, मित्र, पुत्र, स्त्री और संबंधीजनों के मोह को त्यागकर वह वैरागी घर से निकल पड़ा। ■

विषय-वासना, पुत्र आदि तथा मान-सम्मान की कामना से ईश्वर की आराधना नहीं करनी चाहिए। जो केवल ईश्वर को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं, उन्हें ईश्वर अवश्य प्राप्त होते हैं।

— रामकृष्ण परमहंस

सर्वांगीण जीवन के निर्माण में सकारात्मक सोच का महत्वपूर्ण स्थान है। अपने जीवन में यदि कुछ निश्चित प्रेरक शब्दों को जीवन-व्यवहार का अभिन्न अंग बना लें तो हमारा जीवन स्वस्थ, सुंदर, सफल और सार्थक बन सकता है। वे शब्द हमें जीने का एक नया दृष्टिकोण देते हैं।

A से Z तक जीवन का संदेश

समणी विपुलप्रज्ञा

अंग्रेजी वर्णमाला में 26 अक्षर हैं। उसके एक-एक अक्षर से निर्मित प्रेरक शब्द हमें जीने की नई प्रेरणा देता है। यदि उनके आधार पर हम अपने जीवन की दिशा निर्धारित करें तो जीवन को सार्थकता मिल सकती है। जीवन के हर मोड़ पर उतार-चढ़ाव आते हैं परंतु संतुलन रखनेवाला व्यक्ति अपने अदम्य साहस एवं उत्साह के साथ आगे बढ़ जाता है। हमारा प्रयास हो कि वर्णमाला के एक-एक अक्षर से बने प्रेरणादायक शब्दों के अर्थ एवं तात्पर्य को आत्मसात करें और तदनु रूप अपना जीवन संचालित करें।

1. **A - Attitude** - हमारी प्रवृत्ति Positive हो। हम स्वयं में सकारात्मक सोच विकसित करें। **Attack** करें अपनी समस्या पर और सच्चाई को **Accept** करें। विशेष रूप से हम सकारात्मक शब्द चुनें, नकारात्मक विचारों से बचें। आर्किटेक्ट इमारत को आकार देता है, सकारात्मक नजरियेवाला इंसान अपने व्यक्तित्व को रचनात्मक व सृजनात्मक तरीके से आकार देता है।

2. **B - Believe** स्वयं में विश्वास करें। विश्वास करें कि किसी तरह, किसी समय, कहीं न कहीं, किसी न किसी की मदद से हम अपना मनचाहा लक्ष्य हासिल कर सकते हैं। **Believe** के साथ-साथ हम अपना **Behaviour** भी मधुर बनाएं।

3. **C - Commit Yourself** संकल्प करें जो हम पाना चाहते हैं। हमारा संकल्प जितना मजबूत होगा, लक्ष्य उतना नजदीक होगा। हम **Complain** और **Criticize** से बचने का प्रयत्न करें और सही विचार से **Compromise** करने का प्रयत्न करें।

4. **D - Dare** हम जीवन में जोखिम उठाने का साहस करें। अपने लक्ष्य के प्रति **Dedicated** बने रहें।

5. E - Educate करें स्वयं को। अज्ञान दुख का मूल है। हम पुस्तकीय एवं आत्मिक ज्ञान प्राप्त करें। ज्ञानी व्यक्ति सर्वत्र समादृत होता है। ज्ञान प्राप्ति के लिए हम अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय करें, सत्संग का लाभ लें।

6. F - Find - हम अपनी प्रतिभा, संभावनाएं, संयम, धन और नये तरीकों की खोज करें। बाईबल में उल्लेख है - 'हर अनमोल चीज खुले में नहीं मिलती। उसे खोज निकालना पड़ता है।' जैसे हीरे धरती की गहराई में दबे होते हैं, मोती सीप के भीतर छुपे हुए हैं, सोना पाने हेतु खुदाई करनी पड़ती है। वैसे ही हमारी योग्यताएं हमारे भीतर की गहराई में मौजूद हैं। ध्यान एवं Positive सोच से उसकी खोज करें।

7. G - Give - जीवन की सफलता का रहस्य है - देने का नजरिया। हम किसी भी क्षेत्र में हों, हमारी मानसिकता हो - पहले देना फिर लेना। जो सही तरीके से अपनी सेवाएँ देता है उसकी सफलता में संदेह नहीं रहता।

8. H - Hope - हमेशा आशा रूपी सांकल से बंधे रहें। कभी हार नहीं मानें। विश्व के सभी सफल व्यक्तियों एवं महापुरुषों ने अपने जीवन में संघर्षों का सामना किया, कष्ट सहे पर आशाएँ नहीं छोड़ीं। अंततः उनकी आशाएँ फलीभूत हुईं।

9. I - Imagine - कल्पना करो। जिस व्यक्ति का मस्तिष्क सृजनात्मक है, वह अपनी कल्पनाओं को साकार रूप देता है। हम ऐसी कल्पनाएं करें जिसे व्यवहार के धरातल पर मूर्तरूप दे सकें।

10. J - Junk - फेंको। मानव का मस्तिष्क असाधारण है। यदि दिमाग में अतीत का कोई भी नकारात्मक भाव रूपी कचरा है तो उसे निकालकर बहुत दूर फेंक दें। दिमाग एक ऐसा बगीचा है जिसकी देखभाल करने से, पोषण देने से सुंदर फल प्राप्त होते हैं। यदि हमने अपने

मस्तिष्क की सार संभाल नहीं की तो उसमें अनावश्यक चिंता, तनाव रूपी जंगली घास उगता जाएगा।

11. K - Key - चाबी। जीवन की चाबी सद्गुरु के हाथों में सौंप दें ताकि वे आत्मा के दरवाजे को खोल सकें। यदि चाबी स्वयं रखोगे तो खो दोगे। कहते हैं माँ जन्म देती है पर जीवन सद्गुरु देते हैं। गुरु भीतर के बंद ताले को खोलकर ज्ञान रूपी धन प्रदान करते हैं।

12. L - Laugh - चेहरा हमेशा मुस्कराता रहे। कितनी भी प्रतिकूल स्थितियाँ हो, हँसना न भूलें। हँसता वही है जो जिंदादिल है, मुर्दे की पहचान 'उदासी' है। गम भुलाकर मुस्कराना जिंदगी है।

13. M - Manage Time, Life, Everything - आज का युग Management का युग है। जीवन के हर क्षेत्र में प्रबंधन के साथ जीने का प्रयास करें।

14. N - Negotiate संवाद करें। हम अपनी बात पर अड़े न रहें। स्थिति को समझें, बात को समझने का प्रयास करें, अकड़पन छोड़कर स्वभाव को लचीला रखें ताकि आप समस्या का समाधान हो सकें। समुद्र में डूब जाने के बजाय अपनी दिशा बदल लें।

15. O - Overlook and Overcome अपनी टीम के साथ मिलकर काम करें। लोग गलतियाँ करेंगे, आपको छोड़कर भी जा सकते हैं फिर भी आप अपनी व दूसरे लोगों की गलतियों को नजरअंदाज करके अपने कार्यों पर एकाग्रचित्त बने रहें ताकि अपने लक्ष्य में कामयाबी हासिल कर सकें।

16. P - Persevere - डटे रहो। कभी भी हार न मानें। कहते हैं - 'कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।'

17. Q - Quit छोड़ दें। शिकायत करना, निंदा करना, नकारात्मक बात करना व सुनना - ये सब छोड़ दें। अपने लिए कभी ऐसा न सोचें कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों

होता है? इतनी कठिनाई, संघर्ष मुझे ही क्यों? हर हाल में खुशहाल रहने का प्रयत्न करें। यह मानकर चलें कि 'ये दिन भी बीत जाएंगे।'

18. R - Re-organize - पुनः व्यवस्थित करें। जीवन में जब भी प्रतिकूलता आए, सब कुछ नष्ट हो जाए तो भी जीवन को पुनः व्यवस्थित करने का प्रयास करें। 67 वर्षीय वैज्ञानिक एडिसन की प्रयोगशाला में आग लग गई, अन्वेषण की सारी फाइलें राख हो गई, परंतु उसने परिजनों को बुलाया, वह दृश्य दिखाया और कहा - हमारी सारी भूलें जल गईं, अब नये सिरे से काम करेंगे।

19. S - Share बांटें। यश, कार्य, धन, खुशी, प्रशंसा, सकारात्मक चिंतन और शक्ति को एक-दूसरे के साथ बांटें। दूसरे के गम, तनाव, दुख को दूर करने का प्रयास करें और सहयोगी बनें।

20. T - Trade off - अदला-बदली करें। जब आप बांटना शुरू करते हैं तो आप अदला-बदली भी करते हैं। अपना सुख, अपनी अच्छाई और परोपकार दूसरों को दें और उनका दुख, परेशानी खुद लें। ऐसा कर आप अपना और दूसरों का भी कल्याण करेंगे।

21. U - Unity - एकता। एकसूत्र में बंधे रहें। एकता में ताकत है। अकेली अंगुली या अंगूठा कुछ नहीं कर सकता पर पांचों मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं।

22. V - Visualize परिस्थितियों पर गौर करें। मन में उनका खाका तैयार करें और उन पर सभी दृष्टियों से विचार करें। ऐसा करके उसके सभी पहलुओं को समझ

सकते हैं और सही निर्णय लेकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अपने लक्ष्य को यदि सही तरीके से Visualize करते हैं तो लक्ष्य शीघ्र प्राप्त कर सकते हैं।

23. W - Work हमारे भीतर सतत श्रम करने की चेतना बनी रहे। श्रम से भाग्य का सुंदर निर्माण होता है। पुरुषार्थ में भाग्य को जगाने की ताकत होती है। अतः अपना कर्तव्य करते रहें।

24. X - X-ray जैसे शरीर में टूट-फूट होती है तो X-ray से पता चल जाता है वैसे ही मन का भी X-ray करना चाहिए। मन की अच्छाई-बुराई की सूक्ष्मता से जाँच कर अच्छाई को बढ़ाने एवं बुराई को समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

25. Y - Yield - उपजाना। अपने जीवन में सदगुणों को उपजाने की चेष्टा करनी चाहिए। जो व्यक्ति अपने जीवन में सदाचार, सत्य, निष्ठा, सबसे प्रेम आदि का भाव उत्पन्न कर लेता है, उसके लिए संसार में सब कुछ सहज सुलभ हो जाता है। उसका जीवन सार्थक हो जाता है।

26. Z - Zeal - उत्साह के साथ जिदगी के हर पल को जीएं। मानव जीवन सबसे मूल्यवान है। बड़ी पुण्याई से हमें मनुष्य जीवन मिला है। धर्म की शरण में रहकर उत्साह के साथ इस जीवन को सफल व सार्थक बनाएं।

A - Z तक के इन 26 अक्षरों में जीवन का संदेश है। सबका जीवन मंगलमय हो, आनंदमय हो, यही काम्य है। ■

A house without books is like a room without windows.

पुस्तकों के बिना घर खिड़कीरहित कमरे के समान है।

होरेस मन

21 जून को विश्व योग दिवस पर विशेष

तन और मन दोनों को स्वस्थ रखने में योग की भूमिका महत्वपूर्ण है। एक ओर योग के माध्यम से मानसिक शक्तियाँ विकसित होती हैं, स्मृति और बौद्धिक क्षमता का विकास होता है, मन शांत, निर्मल, संयमित एवं तनावरहित बनता है तो दूसरी ओर योग-आसनों एवं प्राणायाम से शरीर संबंधी अनेक रोग ठीक होते हैं, बल-वीर्य बढ़ता है। यही कारण है कि भारत की पहल पर संपूर्ण विश्व ने 21 जून को योग दिवस के रूप में मान्यता देकर जीवन के उन्नयन में योग की महत्ता स्वीकार की है।

सर्वसिद्धि का साधन है योग

डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रस्तावना

भारत में योगसाधना अत्यंत प्राचीन काल से प्रचलित है। इसे किसी-न-किसी रूप में भारतीय दर्शन की प्रायः सभी परंपराओं ने स्वीकार किया है। यहाँ के ऋषि-मुनियों एवं मनीषियों ने इस विद्या को मानव कल्याण के लिए प्रस्तुत किया। उन्होंने योग को जीवन का विज्ञान एवं आत्म-साक्षात्कार की सर्वोत्तम विद्या माना और उसे आध्यात्मिक साधना का मेरुदण्ड बताया। उन्होंने मानव जीवन के चरम लक्ष्य 'आत्मोत्कर्ष' को प्राप्त करने के लिए योग को अनन्यतम साधन माना। उनके अनुसार शरीर और मन की शक्तियों को जागृत करने के लिए योग एक सर्वाधिक उपयोगी साधन है। क्योंकि योग के माध्यम से जीवन में छिपे रहस्यों को उद्घाटित किया जा सकता है, आत्मशक्ति को विकसित किया जा सकता है, भटकती हुई चित्तवृत्तियों को नियंत्रित, परिष्कृत और परिमार्जित किया जा सकता है।

भारतीय योगियों ने सिद्ध किया कि योग के अभ्यास से मन में स्थिरता, शांति, आत्मविश्वास, दुःसह कष्ट में धैर्यभाव, जीवन और सृष्टि के शाश्वत नियमों का साक्षात्कार, जीवन और व्यवहार में अद्भुत संतुलन एवं सामंजस्य आदि उत्पन्न होते हैं।

यह भी मान्यता है कि विभिन्न योगाभ्यासों के द्वारा व्यक्ति का मन अंतर्मुखी बनता है और उसमें भोग की अपेक्षा त्याग की भावना प्रबल होती है। योगाभ्यास करने वाले व्यक्ति में ममता, मोह, क्रोध, लोभ आदि की भावना में कमी आती है और वह असत् से सत् की ओर प्रस्थान करता है। योगाभ्यासी व्यक्ति को जीवन में परम कल्याण की प्राप्ति होती है।

योगसाधना की महत्ता सभी कालों में और सभी धर्मों तथा संप्रदायों, जैसे हिंदू, जैन, बौद्ध, इस्लाम, ईसाई, पारसी, सूफी आदि में प्राचीन काल से ही स्वीकार की गई है। योग की

साधनाओं से होने वाले लाभों से पाश्चात्य जगत भी परिचित रहा है। वहाँ भी इस विषय में अनेक अनुसंधान किए गए हैं। किंतु वहाँ योगक्रियाओं की आंतरिक साधना एवं अभ्यास पर विशेष ध्यान न देकर इसके बाह्य पक्ष को ही विशेष महत्व दिया गया है।

योग का अर्थ एवं स्वरूप

‘युज’ धातु से करण और भाववाच्य में घञ् प्रत्यय लगाने से योग शब्द बनता है। युज धातु के दो अर्थ हैं – जोड़ना और समाधि। भारतीय योगदर्शन में योग शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।

महर्षि पतंजलि ने योग का अर्थ समाधि माना है। उनके अनुसार कामना, वासना, आसक्ति, संस्कार आदि को समाप्त करके सम्यक प्रकार से भगवान के साथ युक्त हो जाना समाधि है।

भारतीय योगदर्शन की दृष्टि से तीन ग्रंथ बहुत महत्वपूर्ण माने जाते हैं – एक योगवासिष्ठ, दूसरा श्रीमद्भगवद्गीता और तीसरा महर्षि पतंजलि का ‘योगसूत्र’। हालांकि इन ग्रंथों के रचनाकाल को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं, किंतु इनके नाम में योग शब्द का प्रयोग हुआ है जो योग की महत्ता प्रतिपादित करते हैं।

डॉ. आत्रेय, दिवानजी, पं. र. भा. पावगी शास्त्री आदि विद्वानों के मत से योगवासिष्ठ की रचना श्रीमद्भगवद्गीता के पूर्व हुई थी। लोकमान्य तिलक और अन्य विद्वानों के मत से योगवासिष्ठ की रचना श्रीमद्भगवद्गीता के पश्चात हुई। महाभारत के अनुशासन पर्व (6/2) में धर्मराज ने देव और पुरुषार्थ के विषय में भीष्म से प्रश्न किया था। उसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा था कि इसी सम्बन्ध में ब्रह्म देव और

हमारे अंदर अनंत शक्ति, अनंत ज्ञान, अनंत प्रेम और अनंत आनन्द निहित है। योगसाधना हमारे इन गुणों को उभार कर और हमारी वासनाओं, कामनाओं, कुसंस्कारों, अहंकार एवं विकारों को दूर कर हमें शुद्ध, शांत, पवित्र बनाने में मदद करती है।

वसिष्ठ का एक संवादात्मक इतिहास विद्यमान है। इससे अनुमान किया जाता है कि योगवासिष्ठ का देव-पुरुषार्थ विषयक प्रकरण महाभारत के पूर्व रचा गया होगा। ऐसा भी अनुमान किया जाता है कि वर्तमान उपलब्ध बृहत् योगवासिष्ठ ग्रंथ एक लघुतर आकार में गीता के पूर्व विद्यमान था। ईस्वी सन् 840 के लगभग काश्मीरी पण्डित गौड अभिनन्दा ने योगवासिष्ठ के 6000 सारभूत श्लोकों का संग्रह कर लघुयोगवासिष्ठ नामक ग्रंथ तैयार किया था। श्रीविद्यारण्यस्वामी द्वारा रचित पंचदशी और जीवन्मुक्ति विवेक में योगवासिष्ठ का

उल्लेख है। भवभूति ने विवर्तवाद का उल्लेख किया है। उपनिषदों और गीता में इस वाद का उल्लेख नहीं है, किन्तु योगवासिष्ठ में इसका विवेचन पाया जाता है। भर्तृहरि के ग्रंथों में योगवासिष्ठ के श्लोक पाये जाते हैं। उनमें शब्दब्रह्म का उल्लेख है, किन्तु

योगवासिष्ठ में यह नहीं पाया जाता। कालिदास के मेघदूत के कुछ शब्द योगवासिष्ठ के निर्वाण प्रकरण, उत्तरखण्ड, सर्ग 119, श्लोक 2-5 में आये हैं। इससे माना जा सकता है कि गौड अभिनन्दा के पूर्व योगवासिष्ठ विद्यमान रहा होगा। हालांकि योगवासिष्ठ में विज्ञानवाद, बौद्धों के शून्यवाद, माध्यमिक आदि का उल्लेख है। वाल्मीकि के समय इनका होना असम्भव है। इससे प्रतीत होता है कि योगवासिष्ठ बाद की रचना है।

जो भी हो इन ग्रंथों के नाम में योग शब्द आया है। गीता के प्रत्येक अध्याय के अन्त में उसे योगशास्त्र कहा गया है। किन्तु इनमें योग शब्द एक ही अर्थ में व्यवहृत नहीं हुआ है। योगवासिष्ठ में योग शब्द साध्य और साधन इन

दो अर्थों में योग का व्यवहार किया गया है। गीता में योग शब्द अनेक अर्थों में व्यवहृत हुआ है।

महर्षि पतंजलि के ग्रंथ में योग शब्द हठयोग द्वारा प्राप्त समाधि के अर्थ में व्यवहृत हुआ है। किन्तु योगवासिष्ठ में इसे जड़ और अचिरस्थायी समाधि कहकर इसकी अपेक्षा चेतनसमाधि अर्थात् आत्म-साक्षात्कारभूत, चिरकालिक सहजसमाधि स्थिति या जीवन मुक्तावस्था को श्रेष्ठतर मानकर स्थिति-प्रकरण में उसे महायोग या ब्रह्मयोग कहा गया है। किंतु इनमें मोक्षप्राप्ति या आत्मबोध और उसके उपाय या साधन की दृष्टि से कोई अंतर न होते हुए भी योग के स्वरूप के विषय में गीता और योगवासिष्ठ में किंचित अन्तर है। शरीर में संचारी प्राणवायु की हलचल की स्थिति में वैचित्र्य उत्पन्न होता है। इस वैचित्र्य की दृष्टि से ही प्राणवायु को अपान, उदान आदि विभिन्न नाम दिये गये हैं, अर्थात् ये अपानादि वायु प्राणवायु के ही वृत्तिभेद हैं। प्राण चित्त का आधार होने से प्राणवायु के स्पन्दन से

संकल्पोद्भूत होने वाली संवित्कला का ही नाम चित्त है। अतः प्राणवायु का निरोध करने से चित्त का निरोध होता है। योग द्वारा धारणा और ध्यान का अभ्यास कर परमात्मा में चित्त एकाग्र करने से और ऊँकार का दीर्घकाल तक उच्चारण करके उसके शेष या अन्त्य नाद में बाह्य विषयों का भाव पूर्णतया विलीन कर देने से प्राणस्पन्द का निरोध होता है। इस प्रकार समाधि प्राप्त करने वाले योगी को योगवासिष्ठ में योगयोगी कहा गया है।

वस्तुतः योग का सांगोपांग विवेचन महर्षि पतंजलि के 'योगसूत्र' में ही मिलता है, जिसमें योग की परिभाषा

'चित्तवृत्तियों के निरोध' (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः) के अर्थ में की गई है। उन्होंने योग को व्यवस्थित और सम्यक स्वरूप प्रदान किया। पातंजल योगसूत्र चार पदों में विभक्त है। प्रथम पाद में योग के लक्षण, स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति के उपायों का वर्णन है। साधन नामक द्वितीय पाद में दुःखों के कारणों पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय विभूतिपाद में धारणा, ध्यान, समाधि एवं सिद्धियों का वर्णन है तथा चतुर्थ पाद में चित्त के स्वरूप का प्रतिपादन किया गया है।

महर्षि पतंजलि ने अपने ग्रंथ में आत्मस्वरूप में स्थित होने के लिए यम, नियम, आसन आदि आठ योगांगों का विवेचन है, जिनका पालन करके मानव जीवन के चरम

लक्ष्य कैवल्य को प्राप्त किया जा सकता है।

विभिन्न भारतीय योग पद्धतियों का लक्ष्य प्रायः समान होते हुए भी उनका साधनाक्रम एवं विधि में काफी अंतर है। पातंजल आदि हिंदू ग्रंथों में जहाँ योग-साधना में हठयोग, प्राणायाम आदि पर बहुत बल दिया गया है, वहीं जैन ग्रंथों में तपोयोग, भावनायोग और ध्यान-साधना पर बल दिया गया है।

योग वह अवस्था है, जिसमें हमारा भाव, वाणी और क्रिया संपूर्णतः ईश्वर की सत्ता, चैतन्य और आनंद के साथ एकाकार हो जाती है। अतः ईश्वर और उनके विधान के साथ एकत्व की स्थिति 'योग'

है। अर्थात् विजातीय, स्वजातीय एवं स्वगतभेद से रहित होकर जीव और ब्रह्म का एकत्व प्राप्त कर लेना योग है। यहाँ पर चित्त की वृत्तियों का निरोध करना, चित्त को वृत्तिशून्य करना और चित्तवृत्ति निरोध के लिए जो कुछ किया जाता है, वह सब 'योग' शब्द के अंतर्गत है। इसी तरह 'युज्यते अनेन इति' करणवाच्यसाधित 'योग' शब्द के द्वारा आसन, प्राणायाम आदि अष्टांग योग प्रणाली को भी भगवान के साथ युक्त होने के सहायक रूप में माना जाता है। अतएव 'योग' शब्द का मुख्य अर्थ है भाववाच्य में साधित भगवत्-मिलन और गौण अर्थ है करणवाच्य में साधित भगवान के साथ मिलने के लिए

आवश्यक समस्त साधन प्रणाली।

जीवात्मा-परमात्मा का संपूर्ण रूप से मिलन अर्थात् अद्वैतानुभूति भी योग है। इसी प्रकार देहात्मबुद्धि त्यागकर आत्मभावापन्न होना योग है, जैसे 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्।' सांख्य मत के अनुसार पुरुष-प्रकृति का पृथक्त्व स्थापित कर, दोनों का वियोग करके पुरुष का स्वरूप में स्थित होना योग है - 'पुं प्रकृत्योर्वियोगेऽपि योग इत्यभिधीयते।' सुख-दुःख, पाप-पुण्य, शत्रु-मित्र, शीत-उष्ण आदि द्वन्द्वों से अतीत होकर समत्व प्राप्त करना भी योग है, जैसा कि गीता में कहा गया है - 'समत्वं योग उच्यते।'।

गीता में कर्म की कुशलता को भी योग कहा गया है - 'योगः कर्मसु कौशलम्'। अर्थात् जिस उपाय से कर्म सहज, सुंदर, स्वाभाविक रूप से सिद्ध हो सके और बंधन का कारण न हो, उसी का नाम योग है। ऋषिकुमार यज्ञ के लिए कुश लाने जाते तो इस प्रकार सावधानी के साथ उसे उखाड़ते कि कुश उखड़ भी जाता और उनका हाथ भी नहीं कटता। इसे कहा गया 'कुशं लाति इति कुशलः।' तात्पर्य यह कि जो संसार का सब कार्य करते हैं, परंतु माया में आबद्ध नहीं होते, वे ही कुशल हैं और उनके इस भाव को ही कौशल या योग कहते हैं। इस कुश एकत्र करने की प्रणाली को संसार के कर्मकांड के प्रतीक के रूप में लिया जा सकता है। जो लोग संसार में अनासक्त, निर्लिप्त रहकर, फल की आकांक्षा से मुक्त होकर संसार के सभी कार्य करते हैं, वे ही योगी हैं।

भारत में योगसाधना की महत्ता

भारतीय संस्कृति मुख्य रूप से तीन धाराओं में प्रवाहित रहीं हैं - वैदिक, जैन एवं बौद्ध। इन तीनों ही परंपराओं

में योगसाधना की चर्चा विस्तार से उपलब्ध होती है।

वैदिक परंपरा में योग शब्द वेदों, उपनिषदों, गीता एवं पुराणों आदि में पुरातन काल से व्यवहृत होता आया है और आत्मदर्शन या समाधि से लेकर कर्मक्षेत्र तक इसका व्यापक व्यवहार किया गया है। ऋग्वेद में योगपरक अनेक मंत्र मिलते हैं। यजुर्वेद आदि तीनों वेदों में भी यत्र-तत्र योग का उल्लेख मिलता है। उपनिषदों में 'योग' शब्द 'आध्यात्मिक' अर्थ में मिलता है। मैत्रेयी और श्वेताश्वतर आदि उपनिषदों में विकसित रूप में योग की भूमिका प्रस्तुत की गई

सत्य, अस्तेय, असंग्रह, ब्रह्मचर्य पालन, वाणी का संयम, आसनों का अभ्यास और प्राणायाम के द्वारा श्वास को जीतना, इंद्रियों को मन के द्वारा विषयों से हटाकर अपने हृदय में ले जाना - ये योग के मुख्य साधन हैं।

है। मन्वादि, स्मृतियों में भी योग की महत्ता स्वीकार की गई है। रामायण और महाभारत में योग के अंग - यम-नियम-प्राणायाम आदि का उल्लेख है। माना जाता है कि ईसा पूर्व 7वीं सदी के साहित्य में ही योग शब्द का

प्रयोग 'इंद्रियों को सद्कार्यों में प्रवृत्त करने', 'इंद्रियों पर नियंत्रण रखने' और 'ध्यान, प्राणायाम, साधना' आदि अर्थ में उपलब्ध हुआ है।

श्रीमद्भागवतपुराण में भक्तियोग, सांख्ययोग एवं अष्टांगयोग साधना का विस्तृत उल्लेख हुआ है। माता देवहूति से कपिलमुनि कहते हैं कि शास्त्रानुसार स्वधर्माचरण, शास्त्रविरुद्ध आचरण का त्याग, प्रारब्धानुसार जो प्राप्त है उसी में संतुष्ट रहना, विषयों से विरति, सत्य, अस्तेय, असंग्रह, ब्रह्मचर्यपालन, वाणी का संयम, आसनों का अभ्यास और प्राणायाम के द्वारा श्वास को जीतना, इंद्रियों को मन के द्वारा विषयों से हटाकर अपने हृदय में ले जाना - ये योग के मुख्य साधन हैं।

भागवतपुराण में अष्टांगयोग की व्याख्या, महिमा तथा

उसकी उपलब्धियों का विवेचन है। महाभारत के विभिन्न पर्वों - शांतिपर्व, अनुशासनपर्व एवं भीष्मपर्व में योग के विभिन्न अंगों का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है।

गीता में योग का व्यवस्थित विवेचन उपलब्ध होता है। इसमें विभिन्न योग पद्धतियों - कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, समत्वयोग का विवेचन है। यहां प्रत्येक योग का अपना एक निश्चित भावात्मक लक्षण है, जो उसके लक्ष्य का निर्देशक भी है, जैसे कर्मयोग का निश्चित लक्ष्य लोकसंग्रह अर्थात् सब लोगों का कल्याण है। ज्ञानयोग का लक्ष्य 'वासुदेवः सर्वमिति' ज्ञान है। भक्तियोग का लक्ष्य भगवान का

अतिशय प्रिय होना है।

जैन परंपरा में योग

जैन परंपरा में 'योग' शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त हुआ है, यथा - संयम, निर्जरा, संवर, ध्यान, मन-वचन-काय की प्रवृत्ति। मन,

वचन, कर्म का आत्मा के साथ मिल जाना और आत्मा के अनुकूल चलना भी योग है।

उत्तराध्ययनसूत्र में अनेक बार 'योग' शब्द का प्रयोग किया गया है, जैसे - 'जोगवं उपहाणवं', 'सूत्रकृतांग' में 'जोगवं' शब्द संयम के अर्थ में आता है। उत्तराध्ययन सूत्र और तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथों में मन-वचन-काय के व्यापार के अर्थ में 'योग' शब्द प्रयुक्त हुआ है। तत्त्वार्थसूत्र में कहा गया है कि योगों के व्यापार से आश्रव और उनके निरोध से संवर होता है।

मनुष्य की भौतिक ऊर्जा जब आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ मिल जाती है तो अनंत शक्ति का रहस्य खुलने लगता है। यह मिलन ही योग है।

आचार्य हरिभद्र ने योगविंशिका में योग की परिभाषा करते हुए बताया - 'मोक्खेण जोयणाओ जोगो सव्वो

वि धम्मवावारो।' वह सारा धार्मिक व्यापार योग है जो व्यक्ति को मुक्ति से जोड़ता है। इस प्रकार धर्म साधना का समग्र उपक्रम योग है।

पतञ्जलि की तरह जैनदर्शन में भी ध्यान को योग-साधना प्रधान अंग माना गया है। आचार्य उमास्वाति ने ध्यान का लक्षण बताते हुए कहा है कि किसी एक विषय में चित्तवृत्ति का निरोध करना ध्यान है। इसके चार भेद किए गए हैं - 1. आर्त्त, 2. रौद्र, 3. धर्म तथा 4. शुक्ल। इनमें प्रथम दो ध्यान संसार के कारण हैं और अंतिम दो मोक्ष के कारण हैं।

योग वह अवस्था है, जिसमें हमारा भाव, वाणी और क्रिया संपूर्णतः ईश्वर की सत्ता, चैतन्य और आनंद के साथ एकाकार हो जाती है। अतः ईश्वर और उनके विधान के साथ एकत्व की स्थिति 'योग' है।

आचार्य हरिभद्र द्वारा रचित योगविषयक कई पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनमें योगबिंदु, योगदृष्टि समुच्चय, योगशतक, योगविंशिका आदि प्रमुख हैं। इन पुस्तकों में जैन परंपरा में योग की विभिन्न प्रक्रियाओं का उल्लेख

किया गया है। उन्होंने पातंजल योगसूत्र में दी गई योग की परिभाषाओं के साथ जैन योगसाधना की तुलना करते हुए उनमें समानता को दर्शाया।

आचार्य हेमचंद्र ने अपनी पुस्तक योगशास्त्र में योग का स्वरूप प्रतिपादित किया और उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का हेतु बताया।

बौद्ध परंपरा में योग - बौद्ध साहित्य में योग के स्थान पर 'ध्यान' और 'समाधि' शब्दों के प्रयोग मिलते हैं। 'समाधि' में प्राणायाम, धारणा, ध्यान आदि का समावेश किया गया है। योगी जब अपने ध्यान के उच्च शिखर पर पहुँचता है, जहाँ ज्ञाता और ज्ञेय में, ध्याता और ध्येय में द्वैतभाव नहीं रहता, वे कर्पूर-ज्योति के समान परस्पर में विलीन हो जाते हैं, केवल ध्येयमात्र ही भासता है और ध्यान का अपना स्वरूप भी लुप्त-सा हो जाता है, तब

उसे समाधि कहते हैं। बौद्ध परंपरा द्वारा मान्य 'प्रज्ञा और योगसूत्र' में वर्णित 'विवेक ख्याति' में काफी समानता है। वस्तुतः बौद्ध साहित्य में उल्लिखित योग मौलिक दृष्टि से वैदिक एवं जैन परंपराओं से काफी समानता रखता है, यद्यपि उनके लिए प्रयुक्त शब्दों में अंतर दिखाई पड़ते हैं।

बौद्ध साहित्य में योग का प्रतिपादन करने वाले प्रमुख ग्रंथ हैं - आचार्य बुद्धघोष द्वारा रचित *विशुद्धिमग्ग*, आचार्य अनिरुद्ध द्वारा रचित *अभिधम्मत्थसंगहो*, आचार्य वसुबंधु द्वारा रचित *अभिधर्मकोश*, आचार्य दीपाकर द्वारा रचित *अभिधर्मप्रदीप*।

आधुनिक समय में प्रचलित बौद्ध साधना विधि को विपश्यना के रूप में जाना जाता है। इस विषय पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं, जैसे - आनापानसती, विपश्यना साधना, बौद्धसाधना पद्धति, प्रज्ञा के प्रकाश में, सम्यग्दृष्टि आदि।

तांत्रिक संप्रदाय के अनेक तंत्र ग्रंथों में भी योग का वर्णन मिलता है। तंत्र योग के अंतर्गत अदिनाथ ने हठयोग सिद्धांत की स्थापना की और योग की क्रियाओं द्वारा शरीर के अंग-प्रत्यंगों पर प्रभुत्व प्राप्त करने तथा मन की स्थिरता प्राप्त करने में उसकी भूमिका का उल्लेख किया।

महानिर्वाणतंत्र और षट्चक्रनिरूपण ग्रंथों में भी योगसाधना का विस्तारपूर्वक वर्णन हुआ है।

मध्ययुग में भी योग का प्रभाव बहुत अधिक रहा और आसन, मुद्रा, प्राणायाम आदि योग के बाह्य अंगों पर इतना जोर दिया गया कि योग का एक संप्रदाय ही बन

गया, जो हठयोग के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

संस्कृत के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी योग के ग्रंथ लिखे गए हैं। मराठी भाषा में ज्ञानदेवकृत ज्ञानेश्वरी के छठे अध्याय में योग का बहुत सुंदर वर्णन किया गया है। संत कबीर के 'बीजक ग्रंथ' में भी योग की चर्चा है।

योग के प्रकार भेद

गीता में योग को साधारणतः कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग - इन तीन भागों में विभक्त किया गया है। योग के प्राचीन ग्रंथों में हठयोग, लययोग और राजयोग -

ये तीन भेद किए गए हैं। इनमें हठयोगी नेति, धौति, वस्ति, कपालभाति, आसन, मुद्रा, त्राटक, प्राणायाम आदि शारीरिक क्रियाओं की ओर विशेष दृष्टि रखकर देह को स्वस्थ, बलिष्ठ और कार्यशील बनाने की विशेष चेष्टा करते हैं।

योग एक परम औषधि है, जो मन और काया दोनों को स्वस्थ करती है। काया तो निरोग हो ही जाती है साथ ही सभी इंद्रियाँ भी नियंत्रित हो जाती हैं। इस प्रकार योग पहले शारीरिक विकारों को दूर करता है, फिर मानसिक दुर्वृत्तियों को दूर करता है।

लययोगी समस्त कामना, वासना, आसक्ति तथा संकल्प-विकल्प के जाल से मुक्त होकर, चित्त को वृत्तिशून्य बनाकर शांत अवस्था प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। उनका विश्वास है कि नित्यसिद्ध स्वयंप्रकाश आत्मतत्त्व शुद्ध, शांत चित्त में स्वयं स्फुरित होता है। राजयोगी देहतत्त्व, मनस्तत्त्व तथा आत्मतत्त्व को सम्यकरूप से जानकर स्वरूप में स्थित होकर (**स्वे महिम्नि अवस्थितः**) और इस देहराज्य एवं जगत-ब्रह्माण्ड के स्वामी बनकर अंतरिन्द्रिय, बहिरिन्द्रिय और देह के ऊपर अधिकार प्राप्त करके स्वयं को भगवत इच्छा पूरी करने में समर्पित करते हैं।

परमात्मतत्त्व के साक्षात्कार में सहायक योग के आठ अंग हैं, इनमें पाँच बहिरंग और तीन अंतरंग साधन हैं।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार — ये पाँच बहिरंग बताए गए हैं, धारणा, ध्यान एवं समाधि विवेकख्याति में साक्षात् सहायक होने से अंतरंग-साधन माने गए हैं। प्रत्याहार दोनों का मध्यस्थ है। यम-नियम के अभ्यास द्वारा साधक योगसाधन का अधिकारी बनता है, योग में उसका प्रवेश हो जाता है। आसन के द्वारा शरीर को स्थैर्य प्राप्त होता है और प्राणों को स्थिर करने की कला को प्राणायाम कहते हैं। प्रत्याहार के द्वारा साधक अपनी समस्त इंद्रियों की बहिर्मुखता हटाकर उन्हें अंतर्मुखी बनाता है। इस साधन के द्वारा साधक अंतर्जगत में प्रवेश कर जाता है। अंतर्जगत में पहुँचकर वहाँ स्थिर रहने को धारणा कहते हैं। इस धारणा के अनंतर बहिर्जगत एवं अंतर्जगत के द्रष्टा परमात्मा के सगुण अथवा निर्गुण रूप के ध्यान करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है। उस अवस्था में ध्याता, ध्यान, ध्येय सब एकरूप दृष्टिगत होते हैं। अंतिम अवस्था में ध्याता, ध्यान एवं ध्येय की त्रिपुटी का भी जब विलय हो जाता है और ध्याता ध्यान में मिलकर दोनों ध्येय में लय हो जाते हैं, तब उसी वृत्तिनिरोध की अंतिम अवस्था को निर्बीजसमाधि कहते हैं।

योग करने वाला व्यक्ति देह, मन, प्राण को शुद्ध और शांत करके मूलाधार से कुलकुंडलिनी को जाग्रत करके, सभी चक्रों एवं केंद्रों में छिपी हुई शक्ति को प्रबुद्ध करके, समस्त शक्ति, ज्ञान, ऐश्वर्य से विभूषित होकर सहस्रार में स्थित परमात्मा से युक्त होकर, तन्मयत्व प्राप्त करके, ज्योतिर्मय देह से भगवान के साथ आनंद समाधि में विभोर रहता है। वह जगत का कल्याण करने और भगवान की इच्छा पूरी करने में नियुक्त रहता है।

भक्तियोगी प्रेम के साधक होते हैं। उनके भगवान सब भूतों में विराजमान रहते हैं। समस्त जगत एवं सभी जीव भगवान की मूर्ति या मंदिर हैं। भगवान प्रकृति के सभी तत्त्वों एवं सभी देहों में विराजित रहकर जीव के कर्म,

ज्ञान और भक्ति के अंदर से अपना सच्चिदानन्द भाव प्रकट कर रहे हैं। साधक आँख, कान, नाक आदि बाहरी इंद्रियों तथा मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त आदि भीतरी इंद्रियों के द्वारा भगवान के शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, अनंत सौंदर्य, माधुर्य आदि का अनुभव कर हृषीकेश की सेवा में पूरी तरह से समर्पित रहते हैं।

योगसाधना का सार-तत्त्व यही है कि हमारे अंदर भगवान की अनंत शक्ति, अनंत ज्ञान, अनंत प्रेम और आनन्द निहित है। हमारी कामना, वासना, आसक्ति, हमारी अज्ञानता, हमारे कुसंस्कार, हमारा स्वार्थ, आत्मसुख की स्पृहा, अहंकार और प्रतिष्ठा का मोह आदि उस भगवत्-शक्ति के विकास में बाधा पहुँचाते हैं। अतएव हम जितना ही इन सब बाधाओं से मुक्त, शुद्ध, शांत, पवित्र होंगे, हम साधन-राज्य में सिद्धि प्राप्त करेंगे। भगवान और हमारे बीच का व्यवधान जितना ही दूर होगा, उतना ही हम भगवान के साथ युक्त होने और मिलने की योग्यता प्राप्त करेंगे।

विभिन्न भारतीय योग पद्धतियों का लक्ष्य प्रायः समान होते हुए भी उनका साधनाक्रम एवं विधि में काफी अंतर है। पातंजल आदि हिंदू ग्रंथों में जहां योग-साधना में हठयोग, प्राणायाम आदि पर बहुत बल दिया गया है, वहीं जैन ग्रंथों में तपोयोग, भावनायोग और ध्यान-साधना पर बल दिया गया है। बौद्ध ग्रंथों में भी ध्यान साधना पर ही योग का विशेष बल है।

ध्यानयोग

पद्मासन या सिद्धासन लगाकर निर्गुण या सगुण परमात्मा का ध्यान करना 'ध्यानयोग' कहलाता है। इसके अभ्यास से स्थिरता, शांति, आत्मविश्वास, दुःसह कष्ट में धैर्यभाव, जीवन और सृष्टि के शाश्वत नियमों का साक्षात्कार, जीवन और व्यवहार में अद्भुत संतुलन एवं सामंजस्य आदि महत्वपूर्ण बातें प्रकट होने लगती हैं।

योगी जब अपने ध्यान के अत्युंच शिखर पर पहुँचता है, जहाँ ज्ञाता और ज्ञेय में, ध्याता और ध्येय में द्वैतभाव नहीं रहता। केवल ध्येयमात्र ही रहता है और ध्यान का अपना स्वरूप भी लुप्त-सा हो जाता है, तब उसे समाधि कहते हैं।

आधुनिक काल में योग का प्रचार स्वास्थ्यलाभ के लिए हो रहा है। योगसाधना और निरंतर योगाभ्यास से शरीर सर्वथा स्वस्थ, निरोग एवं संपूर्ण दोषों से मुक्त हो जाता है तथा मोक्ष प्राप्त करने के भी योग्य बन जाता है।

योग-चिकित्सा के मुख्य साधनों में षट्कर्म, यौगिक सूक्ष्म व्यायाम, आसन, मुद्राएँ, बन्ध, प्राणायाम तथा

ध्यान आदि हैं। इसके साथ ही सात्त्विक आहार-विहार तथा पथ्य-भोजन का भी अपना अलग महत्व है। धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक तथा कपालभाति - ये षट्कर्म के नाम से जाने जाते हैं।

योग नामक परम औषधि मन और काया - इन दोनों को प्रभावित करती है। काया तो निरोग हो ही जाती है साथ ही सभी इंद्रियाँ भी नियंत्रित हो जाती हैं। इस प्रकार योग पहले शारीरिक विकारों को दूर करता है, फिर मानसिक दुर्वृत्तियों को दूर करता है और एक सर्वांगीण मनुष्य के निर्माण में अहम भूमिका निभाता है। ■

तपोयोग

आचार्य महाप्रज्ञ

तपोयोग की साधना का प्रथम सूत्र है - आहारशुद्धि। अधिक आहार से शरीर में मल संचित होता है, जिससे नाड़ी-संस्थान शुद्ध नहीं रहता और मन भी निर्मल नहीं रहता। ज्ञान और क्रिया - इन दोनों की अभिव्यक्ति का माध्यम नाड़ी-संस्थान है। मल के संचित होने पर ज्ञान और क्रिया - दोनों में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। नाड़ी-संस्थान के कार्य में कोई अवरोध न हो, मन की निर्मलता बनी रहे, अपान वायु दूषित न हो - इन तथ्यों को ध्यान में रखकर साधक अपने आहार का चुनाव करता है। इन्हीं तथ्यों के आधार पर उपवास, मितभोजन और रस-परित्याग (गरिष्ठ भोजन का वर्जन) सुझाए गए हैं।

तपोयोग की साधना का दूसरा सूत्र है - आसन या कायक्लेश। कायक्लेश का प्रयोजन शरीर को सताना नहीं, बल्कि साधना के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शरीर की क्षमता को विकसित करना है। शरीरगत चैतन्य केंद्रों को जाग्रत करने के लिए आसनों का अत्यंत महत्व है। आसन करने वालों के लिए चैतन्य केंद्रों का ज्ञान होना जरूरी है। उसके आधार पर ही अनुकूल आसनों का चयन किया जा सकता है। ध्यान के लिए भी विभिन्न आसनों का चयन किया जाता है।

तपोयोग की साधना का तीसरा सूत्र है - इंद्रिय संयम। इसकी साधना तीन प्रकार से की जा सकती है - शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श नामक इंद्रिय-विषयों का त्याग करें। इन इंद्रिय-विषयों का उपयोग करते हुए इनमें राग-द्वेष नहीं रखें। इंद्रिय-विषयों के साथ जुड़ने वाले मन को भीतर ले जाएँ जिससे बाहर के विषयों का आकर्षण सहज ही समाप्त हो जाए।

तपोयोग की साधना का चौथा सूत्र है - ध्यान। ज्ञान और ध्यान एक ही चित्त की दो अवस्थाएं हैं। चित्त की चंचल अवस्था को ज्ञान और स्थिर अवस्था को ध्यान कहा जाता है। जो चित्त भिन्न-भिन्न आलंबनों पर स्फुरित होता है, वह उसकी ज्ञानात्मक अवस्था है। इसकी तुलना सूर्य की बिखरी हुई रश्मियों से की जा सकती है। जो चित्त एक ही आलंबन पर स्थिर, निरुद्ध या केंद्रित हो जाता है, वह उसकी ध्यानात्मक अवस्था है।

योगसाधना में प्राणायाम का विशेष महत्व है। श्वास और प्रश्वास की गति को रोकने की क्रिया को प्राणायाम कहा जाता है। रेचक, पूरक और कुंभक - प्राणायाम के ये तीन अंग हैं। प्राणायाम में प्रयुक्त प्राण शब्द का अर्थ सामान्यतया श्वास किया जाता है, किंतु प्राण का मूल अर्थ जीवनीशक्ति है। श्वास तनुपट से नीचे नहीं जाता, जबकि प्राण का संचार पूरे शरीर में होता है। जैन योग में श्वाससंयम और मंदश्वास का विधान प्राणायाम का मुख्य हेतु रहा है।

प्राणायाम की प्रक्रिया और उससे लाभ

मुनि किशनलाल

प्राणायाम श्वासन क्रियाओं का सम्यक् नियमन और नियोजन है। प्राणायाम श्वास-उच्छ्वास का सम्यक अभ्यास है। प्राण का व्यवस्थित विस्तार एवं संयम प्राणायाम है। प्राणायाम से शरीर, रक्त एवं स्नायु मंडल का शोधन होता है।

प्राणायाम की क्रिया से मस्तिष्क की सुप्त शक्तियां जागृत होने लगती हैं तथा शरीर का प्रत्येक अंग स्वस्थ एवं सुंदर बनता है।

प्राणायाम की प्रक्रिया में श्वास की मात्रा, निरोध ही मुख्य हैं। श्वास जितनी गहरी और लम्बी होती है, फेफड़ों को फैलने और रक्त के शोधन कार्य में उतनी ही सहायता मिलती है।

प्राणायाम संजीवनी शक्ति है, जिससे शारीरिक स्वास्थ्य तो बनता ही है साथ ही साध चित्त की निर्मलता भी बढ़ती है। इससे आध्यात्मिक शक्ति को जागृत होने का अवसर उपलब्ध होता है। प्राणायाम मानसिक शांति एवं आध्यात्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। उससे समाधि की उपलब्धि होती है और व्यक्ति अपने स्वरूप की यात्रा करने लगता है। शारीरिक स्वास्थ्य उसका पहला लाभ है।

महर्षि पतंजलि ने प्राणायाम के परिणाम की चर्चा करते हुए लिखा है कि “ततः क्षीयते प्रकाशावरणम्” - प्राणायाम के द्वारा ज्ञान-अज्ञान प्रकाश पर छाया का आवरण क्षीण हो जाता है। चेतना पर छाया का आवरण हट जाता है। प्राणायाम केवल श्वास-प्रश्वास का व्यायाम ही नहीं, अपितु कर्म-निर्जरा की वह महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जिससे चित्त की निर्मलता बढ़ती है, ज्ञान का विकास होता है। इंद्रिय शुद्धि एवं मन की प्रशस्ति एवं एकाग्रता बढ़ती है।

प्राणायाम की क्रिया में स्थान, समय, आसन और विधि का ध्यान रखना आवश्यक है।

प्राणायाम का अभ्यास, शांत, स्वच्छ और खुले स्थान में अति उत्तम रहता है। पर्वत, उद्यान और खुला स्थल प्राणायाम के लिए उपयुक्त स्थान होते हैं। ऐसे स्थान की प्राप्ति सहज न हो तो अपने घर की खुली छत अथवा कमरे में एक ओर प्राणायाम का अभ्यास किया जा सकता है।

प्राणायाम करने का समय प्रातःकाल सूर्योदय से आधा घंटा पूर्व एवं पश्चात अति उत्तम है। प्राणायाम मध्याह्न और सायंकाल में भी किया जा सकता है, परंतु भोजन के बाद दो घंटे तक नहीं किया जाए। दीर्घश्वास का अभ्यास कभी भी किया जा सकता है। प्राणायाम करते समय पद्मासन, सिद्धासन या सुखासन उत्तम आसन हैं परंतु किसी भी सुखपूर्वक स्थिति वाले आसन में रीढ़ को सीधा रखकर प्राणायाम किया जा सकता है।

प्राणायाम सामान्यतः आँखें बंद कर, बाएं हाथ को घुटने पर रखकर दाहिने हाथ से नासापुटों को बंद और खोलकर किया जाता है। परंतु साधक विशुद्धिचक्र पर मन को केंद्रित कर कंठकूप से श्वास-क्रिया करता है तो श्वास स्वतः दीर्घ और धीरे-धीरे आवागमन करने लगती है। इस प्रक्रिया के संकल्प से ही श्वसन-क्रिया को दाँएं-बाँएं या मध्यम सुषुम्ना से जैसा चाहें, वैसा संपादित कर सकते हैं।

प्राणायाम में पूरक, कुंभक, रेचक तीन क्रियाएं होती हैं। 'पूरक' श्वास को अंदर ले जाना, 'रेचक' श्वास को बाहर छोड़ना और श्वास को रोकने की क्रिया को 'कुंभक' कहा जाता है। कुंभक अंतः और बाह्य दो प्रकार से होता है। श्वास ग्रहण कर अन्दर रोके रखने को अंतःकुंभक और श्वास को बाहर निकालकर रोकने को 'बाह्य कुंभक' कहा जाता है। प्राणायाम की तीनों स्थितियों में प्राण का समान रूप से नियमन करना प्राणायाम कहलाता है।

प्राणायाम की प्रक्रिया प्रारंभ करने से पूर्व शरीर की

रचना का सामान्य अवबोध आवश्यक है। श्वास सामान्यतः नाक या मुँह से ली जाती है। मुँह से श्वास लेना उचित नहीं है। नाक से श्वसन क्रिया करते समय एक साथ श्वास को अधिक मात्रा में ग्रहण किया जाता है और वैसे ही छोड़ दिया जाता है। इससे श्वास को फेफड़े और पेट की ओर फैलने का अवसर नहीं मिलता। श्वास की पूर्ण क्रिया करने के लिए श्वास को कंठकूप स्वर यंत्र से खींचना और छोड़ना होता है। विशुद्धि-चक्र के स्थान पर मन केंद्रित होने से, सहज ही उसके विकसित होने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे अनायास ही भाषा की मधुरता, काव्य एवं कला का विकास होता है।

प्राणायाम में पूरक एवं कुंभक को देश, काल एवं संख्या के आधार पर दीर्घ एवं सूक्ष्म बनाया जाता है। सामान्य रूप से श्वास और प्रश्वास की क्रिया करते समय एक साथ दीर्घ श्वास-प्रश्वास नहीं हो पाता है। पूर्ण श्वास-प्रश्वास करने के लिए श्वास-प्रश्वास को धीरे-धीरे पूरक और रेचक कर के दीर्घ बनाया जाता है। श्वास को दीर्घ एवं सूक्ष्म बनाने की दृष्टि से देश, काल एवं संख्या का उपयोग किया जाता है।

देश का तात्पर्य क्षेत्र से है। श्वास-प्रश्वास करते समय नासापुटों से फेफड़ों में कहाँ तक फैलता है उस क्षेत्र विशेष के मापने को देश परिदृष्ट कहा गया है। इसी प्रकार से पूरक, रेचक एवं कुंभक को मापना, समय परिदृष्ट है। (श्वास-प्रश्वास और कुंभक को सेकेंडों में मापना) श्वास को दो सेकेंड, प्रश्वास चार सेकेंड और कुंभक आठ सेकेंड। इसका तात्पर्य यह हुआ कि पूरक से रेचक दुगुना और रेचक से कुंभक दुगुना।

गणना द्वारा भी पूरक, रेचक और कुंभक को मापा जाता है। ॐ का दो बार, चार बार और आठ बार मानस जप द्वारा भी श्वास को नियमित एवं अनुशासित किया जा सकता है।

प्राणायाम के प्रकार

साधना के प्राचीन ग्रंथ हठयोग प्रदीपिका एवं घेरंड संहिता आदि में प्राणायाम के संबंध में निम्न श्लोक दिया गया है -

सहितः सूर्यभेदश्च उज्जयी शीतली तथा ।

भस्त्रिका भ्रामरी मूर्छा केवली चाष्टकुम्भकाः ॥

1. सहित, 2. सूर्यभेदी, 3. उज्जयी, 4. शीतली, 5. भस्त्रिका, 6. भ्रामरी, 7. मूर्छा, 8. केवली, ये आठ प्रकार के कुंभक घेरण्ड संहिता में उल्लिखित हैं।

सूर्यभेदी प्राणायाम

केवल सूर्य स्वर से श्वास को ग्रहण करते हैं, अतः इसे सूर्यभेदी प्राणायाम कहा गया है।

विधि : पद्मासन, स्वस्तिकासन या अन्य किसी भी आसन में स्थिरता से सुखपूर्वक बैठें। मेरुदंड और गर्दन को सीधा रखें। दृष्टि सम्मुख रहे। दाहिने हाथ के अंगूठे को दाहिनी नासिका एवं तर्जनी को भ्रुकुटी के मध्य लगाएँ। मध्यमा से बाँयी नासिका को बंद रखें।

दाहिनी नासिका सूर्य स्वर से धीरे-धीरे श्वास को ग्रहण करें। श्वास को धीरे-धीरे लेने से वह पूर्ण लंबी एवं दीर्घ होती है। नाक के छिद्रों से लेकर गले और फेफड़ों को पूरी तरह श्वास से भरें। इससे श्वास की अधिक मात्रा अंदर पहुंचेगी। यथाशक्ति सुखपूर्वक श्वास को रोके, (कुंभक करें) उसके पश्चात धीरे-धीरे चन्द्र स्वर बायीं नासिका से प्रश्वास करें। कुछ समय बाह्य कुंभक करें अर्थात् बाहर ही प्रश्वास को रोके रखकर ठहरें। फिर सूर्य स्वर दाहिनी नासिका से श्वास को ग्रहण करें, कुंभक कर के चन्द्र स्वर से रेचन करें।

समय - प्राणायाम के इस प्रयोग को तीन बार से प्रारम्भ करके प्रतिदिन एक-एक प्राणायाम को 27 दिन तक बढ़ाएँ।

लाभ - वात एवं कफ का शमन करता है। पित्त बढ़ाता

है। पाचन शक्ति बढ़ाता है। आलस्य को शरीर से दूर रखता है।

शीतली प्राणायाम

विधि - पद्मासन में स्थिरता से बैठें। श्वास को धीरे-धीरे अंदर लें। फेफड़ों को पूरा भरें। तनपुट का दबाव नाभि तक जाए। श्वास को कुंभक कर रोके। जितना आराम से अधिक से अधिक समय तक श्वास-संयम (कुंभक) कर सकें करें। फिर दोनों नासिकाओं से धीरे-धीरे प्रश्वास करें।

समय- एक मिनट से लेकर पांच मिनट तक करें।

लाभ - पित्त विकार दूर करता है। प्यास बुझाता है। पित्त विकास से उत्पन्न रोगों को शांत करता है। रक्तचाप उपशांत करता है। कांति, शांति और शीतलता को बढ़ाता है।

सहित कुंभक

सहित कुंभक के दो प्रकार हैं। सगर्भ और निगर्भ। ऊँ, अहं आदि बीज मंत्रों सहित जो प्राणायाम किया जाता है वह सगर्भ है, जो बिना मंत्र जप के होता है वह निगर्भ कहलाता है।

विधि - प्राणायाम को कनिष्ठ, मध्यम और उत्तम भेद से तीन प्रकार का बताया गया है। जो अभ्यासी आठ बार अहं आदि बीज मंत्र का जप कर पूरक करता है, सोलह बार रेचक करता है, 32 बार में कुंभक रखता है, यह कनिष्ठ प्राणायाम कहलाता है।

इस प्रकार जो सोलह पूरक, चौंसठ कुंभक और बत्तीस रेचक के अभ्यास से प्राणायाम करता है, वह मध्यम प्राणायाम कहलाता है। इसी प्रकार जो बत्तीस पूरक, एक सौ अट्ठाईस कुंभक और चौंसठ रेचक के अभ्यास से प्राणायाम करता है वह उत्तम प्राणायाम कहलाता है।

प्राणायाम का यह अभ्यास पूरक से प्रारंभ करें। बीज-मंत्र का जप करें। साथ-साथ कुंभक करें। जप करते

जाएं और रेचन करें। पुनः पूरक कर जप करें, फिर रेचन करें और जप करें।

उज्जाई प्राणायाम

विधि - पद्मासन में स्थिरता से सुखपूर्वक बैठें। जिह्वा के अग्रभाग को मोड़कर तालू से सटा दें। स्वर यंत्र से श्वास को गले से स्पर्श करता हुआ खींचें। श्वास-प्रश्वास करते समय मधुर ध्वनि कानों को स्पष्ट सुनाई दे। श्वास (पूरक) प्रश्वास (रेचक) धीरे-धीरे शांत भाव से हो। मंत्र जाप के समय इसका प्रयोग किया जा सकता है

लाभ - रक्तचाप का शमन करता है। नाड़ी संस्थान को शक्तिशाली बनाता है। स्वर मधुर होता है। संपूर्ण शरीर में शक्ति का संचार होता है। टॉसिल खाँसी एवं जुकाम की विकृतियाँ दूर होती हैं।

भ्रामरी प्राणायाम

भंवरे की तरह गुंजन होने से इसे भ्रामरी प्राणायाम कहा गया है।

विधि - पद्मासन में स्थिरता से सुखपूर्वक बैठें। दाएं हाथ का अंगूठा दाँयें नथुने पर रखें, लेकिन बंद न करें। पूरक करें। श्वास को धीरे-धीरे ग्रहण करें। दाहिने नथुने को अंगूठे से दबाए रखें। कुछ क्षण रोककर वायु को फेफड़े कंठ और गले से स्पर्श करते हुए बाहर रेचन करें।

श्वास भरते और छोड़ते हुए चित्त को गले पर केंद्रित रखें। गले से भंवरे के गुंजन की तरह ध्वनि करते हुए श्वास-प्रवास की क्रिया करें।

लाभ - भ्रामरी प्राणायाम से स्वरों में मधुरता आती है। वाणी के उच्चारण की स्पष्टता एवं श्वास दीर्घ तथा सूक्ष्म होने लगती हैं।

भस्त्रिका प्राणायाम

श्वास-प्रश्वास को तेजी से लेना और छोड़ना भस्त्रिका प्राणायाम कहलाता है।

विधि - पद्मासन में स्थिरता से सुखपूर्वक बैठें। दाहिने

हाथ का संपुट बनाएं और नाक के आगे लगाएं। रेचन और पूरक बिना रुके गति से 4 से 10 बार करें। इसके पश्चात पूरा रेचन करें, कुछ क्षण कुंभक करें, फिर दाँयें नथुने से श्वास नेकर पूरक करें, कुछ क्षण कुंभक करें, पुनः इसी प्रकार रेचन करें।

भस्त्रिका प्राणायाम ऊष्ण होता है। वायु और कफ के दोषों को दूर करता है और पित्त की अभिवृद्धि करता है।

केवल कुंभक प्राणायाम

विधि - सहज प्राणायाम में पूरक और रेचक क्रिया के समय अकस्मात बीच में ही रुकें। उस समय श्वास-उच्छ्वास जहाँ हो वहीं ठहरें, पूरक और रेचन की क्रिया आगे न करें। इससे मन की स्थिरता एवं शक्ति का विकास होता है।

मूर्छा-प्राणायाम

विधि - पद्मासन में स्थिरता से सुखपूर्वक बैठें। चित्त को विषयों से हटाकर दर्शन केन्द्र दोनों भ्रुकुटियों के मध्य केंद्रित करें। मुख से धीरे-धीरे श्वास को भरें। फिर अंतः कुंभक करें। चित्त को दर्शन केंद्र में लीन होने दें। जालंधर बंध लगाएं, फिर धीरे-धीरे रेचन करें। शांभवी मुद्रा में निर्विकार बना चित्त परम अस्तित्व में लीन बना रहता है। इस समय सुखद अनुभूति होती है। अतः इसे मूर्छा-प्राणायाम कहा गया है। प्रारंभ में इसकी 9 आवृत्ति करें। फिर धीरे-धीरे बढ़ा कर 15 मिनट करें।

लाभ - मन की प्रसन्नता, आनन्द की प्राप्ति और निर्विकारिता प्राप्त होती है। ■

जो लोग संकीर्ण विचार के हैं, वे ही दूसरों के धर्म की निन्दा करते हैं और अपने धर्म को श्रेष्ठ बताकर संप्रदाय गढ़ते हैं। किन्तु जो ईश्वरानुरागी हैं, वे केवल साधन-भजन किया करते हैं, उनके भीतर किसी तरह की दलबंदी नहीं होती। बंधे हुए ताल-तलैयाँ में ही काई आदि जमती है, बहती नहीं में नहीं।

रामकृष्ण परमहंस

भागवत संप्रदाय मानवता के पक्ष में खड़ा एक ऐसा संप्रदाय है, जिसमें मानव कल्याण हेतु परम ऐश्वर्यपूर्व ईश्वर के अवतार को मान्यता दी गई है, जो धर्म और सज्जनों की रक्षा और अधर्म और आततायियों के नाश के लिए समय-समय पर अवतरित होते हैं।

भागवत भाव : मानुष भाव

अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी

भारत में दर्शन का इतिहास बहुत पुराना है। विश्व के नानत्व को देखने, उसके पीछे निहित एकत्व को पहचानने तथा सुंदर साहित्यिक पदावली में उसका वर्णन करने में भारतीय ऋषियों की विशेष रुचि थी। आरंभ में प्रकृति की शक्तियों, जैसे वायु, जल, अग्नि आदि को परम शक्तिशाली समझा गया और उनको अनुकूल बनाने के लिए कर्मकांड अपनाए गए। केनोपनिषद् में व्यक्त एक कथा के अनुसार प्रकृति की सभी शक्तियों का स्रोत एक सर्वशक्तिसंपन्न अधिष्ठान था। इसे ब्रह्म कहा गया। इसी ब्रह्म को जानना जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य माना गया। बौद्धिक विमर्श से यह बात प्रायः स्थिर कर दी गई कि जगत का यह प्रपंच वास्तव में मिथ्या है और इस आभासी जगत का कारण है माया। इस विचारधारा को जिनका समर्थन मिला वे वैदिक दर्शन के नाम से जाने गए। इसके विपरीत जो चिंतन सामने आया उसे अवैदिक दर्शन कहा गया।

वैदिक चिंतन चाहे जितना तर्कसम्मत हो या जितना ही बुद्धिवादी क्यों न हो वह जनसामान्य की जिज्ञासाओं का शमन नहीं कर पाया। फलस्वरूप वैदिक दर्शन की छाया में, सभ्यता के उषःकाल से ही कुछ संप्रदाय प्रचलित हुए, जिनमें सर्वशक्तिमान को निराकार न मानकर साकार रूप में उपलब्ध करने का दावा किया गया। ईसा से दो सौ वर्ष पूर्व ऐसे संप्रदायों का प्रागैतिहासिक उल्लेख मिलता है, जिसमें परम शक्तिमान को मानव शरीर में प्रकट हुआ माना गया था। इस पुरुषाकार अथवा साकार स्वरूप की आराधना की पद्धति भी सुव्यवस्थित हो गई थी। ऐसा माना गया कि विश्व का संचालन विष्णु, नारायण, वासुदेव अथवा अन्य अनेक नामों से अभिहित भगवान द्वारा किया जाता है। वे अपने भक्तों के सुख-दुःख का साक्षी होते हैं तथा उसे नियमित करते हैं। अपने भक्तों के कल्याण और अनिष्ट से उनकी रक्षा के लिए वे

अपने धाम से (जिसे गोलोक, क्षीरसागर आदि कहा गया है) धरती पर उतरते हैं, जिसे अवतार कहा गया। वेदोत्तर ग्रंथ पाद्मत्र (4/2/88) में एक श्लोक में उक्त संप्रदायों की एक सूची प्राप्त होती है, जो इस प्रकार है :

सूरिः सुहृद भागवतः सात्वतः पंचकालवित्।

एकान्तिकः तन्मयश्च पांचरात्रिक इत्यपि।।

अर्थात् तत्कालीन समाज में सूरि, सुहृद, सात्वत, भागवत, पंचकालिक एकान्तिक आदि वे संप्रदाय थे,

जिनमें किसी एक सगुण-साकार मूर्ति को संसार के नियामक के रूप में स्वीकार किया जाता था। बाद में हुए अनुसंधानों से पता चला कि इन सभी संप्रदायों में आदिशक्ति के रूप में मान्य पुरुष का किसी न किसी रूप में भागवत संप्रदाय के वासुदेव कृष्ण से संबंध

है। उदाहरण के लिए सूरियों का संबंध वैदिक सूरियों से जुड़ता है, जो विष्णु के उपासक थे। श्रीकृष्ण विष्णु के अवतार माने गए हैं। सात्वत, श्रीकृष्ण के कुल का ही नाम है। पांचरात्रिक संप्रदाय में भी कृष्ण की ही उपासना की जाती है। इस प्रकार अनेक नामों से प्रसिद्ध इन संप्रदायों में भी श्रीकृष्ण की ही पूजा थी। यही कारण है कि परवर्ती काल में इन सभी संप्रदायों का एक बड़े संप्रदाय में पर्यवसान हो गया और इस प्रकार जो संप्रदाय, समय बीतने के साथ, पुष्ट से पुष्टतर होता गया उसे भागवत संप्रदाय कहा गया। इस संप्रदाय का दार्शनिक आधार श्रीमद्भागवद्गीता में व्यक्त हुआ और वासुदेव श्रीकृष्ण इस संप्रदाय के अनन्य देवता के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

भारत में भागवत संप्रदाय को विपुल प्रचार मिला और

यह भारत के बाहर भी लोगों को आकर्षित करने में सफल हुआ। विदिशा/भिलसा में एक गरुड़ स्तंभ मिलता है। यह स्तंभ तक्षशिला के शासक अंतलिकित के यूनानी दूत हेलियोदोर ने स्थापित कराया था। ए एल बासम ने अपनी पुस्तक *द वंडर दैट वाज़ इंडिया* में इस स्तंभ को ईसापूर्व प्रथम सदी का माना है। इस स्तंभ पर एक लेख उत्कीर्ण है। शब्द विन्यास की दृष्टि से यूनानी भाषा के प्रभाव में लिखित इस लेख में हेलियोदोर ने स्वयं को परम भागवत घोषित किया है। इस लेख से हमें

भागवत भाव समन्वय, लोकसंग्रह तथा समर्पण के तीन स्तंभों पर टिकी एक सुंदर इमारत है। समन्वय की भावना विरोधों को, विभिन्नताओं को अनेकताओं को बाधक नहीं, साधक के रूप में वरण करती है।

भागवत संप्रदाय के संबंध में बहुत सी जानकारी मिलती है। इसके आधार पर डी. डी. कोसंबी ने कहा कि इस समय तक कृष्ण की प्रतिष्ठा तो चुकी थी पर वे विष्णु के अवतार नहीं माने जा रहे थे। संभव है आनेवाले दिनों में ऐसा हुआ हो।

प्राचीन भागवत संप्रदाय का दार्शनिक विवेचन श्रीमद्भगवद् गीता में हुआ है। गीता के नाम से लोकविश्रुत इस ग्रंथ में श्रीकृष्ण के लोकोत्तर चरित का जैसा चित्रण हुआ है उसके आधार पर महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्र ने (भारतीय दर्शन नामक ग्रंथ में) तथा लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने (गीता रहस्य में) गीता को भागवत धर्म का ग्रंथ स्वीकार किया है। श्रीमद्भगवद्गीता की परिभाषा आचार्यों ने अपने-अपने मतानुसार की है। पर इस ग्रंथ के विषय में इस मान्यता को कि 'यह उपनिषद् रूपी गौओं का अमृतोपम दुग्ध है, जिसे अर्जुन रूपी बछड़े के लिए श्रीकृष्णरूपी गोपाल दुह रहे हैं' - किसी ने चुनौती नहीं दी है। भगवद्गीता का उपनिषद से संबंध होते हुए भी अवतारवाद, भक्तिवाद का पक्ष रखना भागवत संप्रदाय की क्रमशः मजबूत होती जा रही स्थिति का ही संकेतक है।

समय के साथ-साथ भागवत संप्रदाय की लोकप्रियता बढ़ती गयी। आचार्य परंपरा ने इस संप्रदाय का दार्शनिक आधार बेहद दृढ़ता के साथ निर्मित किया। मध्यकाल तक इस परंपरा का प्रवाह अविच्छिन्न बना रहा। संतों, वैरागियों तथा भक्तों ने प्राचीन वैष्णव आगमों का आश्रय लेकर जन-जन में श्रीकृष्ण की भक्ति की सरिता बहाई। नामकीर्तन तथा लीलाओं का मंचन करके श्रीकृष्ण की लीलामाधुरी को जनसामान्य की सामूहिक स्मृति में स्थापित कर दिया। तमिल प्रदेश में आलवारों ने, बंगाल के गौड़ीय समाज ने, असम तथा मणिपुर में नववैष्णववादियों ने पुरातन भागवत संप्रदाय को अपने-

अपने तरह से पुष्ट किया। रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, निंबार्काचार्य, मध्वाचार्य सदृश आचार्यों ने इसी संप्रदाय के विभिन्न आयामों का रूपायन किया। इन सबका अत्यंत मधुर परिपाक फिर श्रीमद्भागवत महापुराण में आकर हुआ।

भारत में वैष्णव संप्रदायों की तुलना में अन्य संप्रदायों के विकास का अध्ययन करनेवाले विद्वानों को भी यह देखकर आश्चर्य हुआ है कि विविधताओं से भरा तथा मतमतांतरों से ग्रस्त भारतवर्ष भागवत भाव से आसेतु हिमालय अंतर्ग्रथित है। यह ग्रंथन कहीं प्रकट तो कहीं गुप्त है। इसके सूत्र कहीं तो लोकाचार में मिलते हैं तो कहीं कर्मकांड में, कहीं ये अनुश्रुतियों में व्यक्त होते हैं तो कहीं फक्कड़ता में व्यंजित होते हैं। भागवत भाव कहीं तो अकाट्य तर्कों से प्रतिष्ठित किया गया है तो कहीं यह अटल विश्वास के निरीह तिनके का सहारा लेकर खड़ा मिलता है।

ईसा पूर्व दूसरी सदी से लेकर आज तक प्रवहमान भागवत संप्रदाय की परंपरा ने भारतीय आध्यात्मिक

चिंतन को गहराई से प्रभावित किया है। युगों-युगों से सामाजिक असमानताओं, विरोधाभासों, विधि की विडम्बनाओं आदि से लड़ने में भागवत परंपरा के कुछ तत्त्वों ने मानवसमुदाय की बहुत सहायता की। इस प्रक्रिया में एक विशिष्ट पहचान का विकास होता चला गया। हमारे समकालीन जीवन में इस संप्रदाय की नई पहचान स्थापित हुई है और एक बार फिर से प्राचीन भारतीय जीवन की इस कुसुमित परंपरा का सौरभ बिखरने लगा है। यही सौरभ भागवत भाव है। यह मानवता के पक्ष में खड़ा वह संप्रदाय है, जिसमें परम ऐश्वर्य के स्वामी सबके नियंता माने गए हैं।

ईसा पूर्व दूसरी सदी से लेकर आज तक प्रवहमान भागवत संप्रदाय की परंपरा ने भारतीय आध्यात्मिक चिंतन को गहराई से प्रभावित किया है। युगों-युगों से सामाजिक असमानताओं, विरोधाभासों, विधि की विडम्बनाओं आदि से लड़ने में भागवत परंपरा के कुछ तत्त्वों ने मानवसमुदाय की बहुत सहायता की।

भागवत भाव का मूलाधार है अवतारवाद। भगवान् वासुदेव कृष्ण यहाँ श्रीहरि विष्णु के अवतार के रूप में पूजित हैं। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि धर्म की हानि और अधर्म का उद्भव होने पर वे साधुओं की रक्षा तथा दुष्टों के विनाश के लिए हर युग में संभव होंगे।

यही संभावना अवतार है। अवतार की स्थापना करके भागवत भाव इस बात की घोषणा करता है कि परमशक्ति और उसकी पार्थिव संतानों में पालक-पाल्य का भावनात्मक संबंध है और पाल्य को जब कभी किसी प्रकार की कठिनाई आती है पालक स्वयं को उससे दूर नहीं रख सकेगा। अवतारवाद से उपजी है मूर्तिपूजा की संकल्पना। ईश्वर जगत के कण-कण में विद्यमान होते हैं, अतः उनकी मूर्ति गढ़ने या उनका स्थान विशेष पर मंदिर बनाने की कई बार बुद्धिवादियों द्वारा कटु आलोचना की जाती है। इस संबंध में भागवत भावना यह मानती है कि जिस प्रकार आम का रस वृक्ष के हर अंग में होते हुए भी अपने फल में ही प्रकट होता है कुछ

उसी प्रकार कण-कण में विद्यमान परम शक्तिमान जगतपति अपने अर्चावतार में ही अपने भक्तों के लिए सुलभ होते हैं।

इस प्रकार अवतार, अर्चावतार तथा मंदिर तीर्थों की भागवत परंपरा ईश्वरीय विभूति के मानवीकरण की चेष्टा है। अवतारवाद और मूर्तिपूजा का आधार है श्रद्धा। कहा भी गया है - मानो तो देवता नहीं तो पत्थर। श्रद्धा भागवत संप्रदाय का बहुत ही समादृत मानवीय गुण है। श्रद्धावानं लभते ज्ञानं - भगवान ने गीता में कहा है। आखिर वह कौन सा आकर्षण है, जिससे खिंचकर मानवीय संबंध गतिशील होते

हैं। वह आकर्षण श्रद्धा का है। मनुष्य श्रद्धामय ही होता है, जिसकी जैसी श्रद्धा होती है वह वैसा ही हो जाता है।

सभी प्राणियों में उसी भगवान का वास है - भागवत भाव में इस निश्चय को ऊँची प्रतिष्ठा प्राप्त है। इसी सिद्धांत से मनुष्यों

के बीच नैसर्गिक तथा अनिवार्य एकता की स्थापना हो पाती है। यदि सभी मनुष्य उसी परमात्मा के प्रकाश हैं तो इसमें कौन अपना है और कौन पराया? किसे अपनाना और किसे दुत्कारना? किससे प्रेम करना और किससे घृणा करना? किसी से नहीं। सबके प्रति अनृशंस्य का भाव - अहिंसा का भाव भागवत भावना में अन्यतम है। भागवत भाव वर्णाश्रम व्यवस्था में विश्वास रखता है। सबको अपने-अपने कर्तव्य में सच्ची लगन से लगना चाहिए। कर्तव्य में निरत रहना भागवत भाव है। प्रभुजी तुम चंदन हम पानी जैसे अमर वैष्णव भजन के रचयिता भक्त रैदास ने अपनी आजीविका कमाने के लिए श्रम करना नहीं छोड़ा। वर्णाश्रम धर्म में वर्णों की व्यवस्था

कर्म से जुड़ी है। महाभारत (3/180/20) में कहा गया है कि जिसमें सत्य, दान, क्षमा, सुशीलता तथा करुणा का भाव हो वही ब्राह्मण कहलाता है।

भागवत भाव में मोक्ष को भी लेकर कोई बहुत लालसा नहीं होती। मूल भाव होता है भागवत सृष्टि का आत्यंतिक कल्याण- **कामये दुःखतप्तानां प्राणिणामार्तनाशम्** - कामना सिर्फ यही है कि प्राणियों के कष्टों का शमन हो। यह जब तक नहीं होता भागवत बार-बार जन्म लेगा और प्राणीमात्र की सेवा को नारायण की सेवा मानकर उसमें लगा रहेगा। जिस गरुड़

स्तंभ की चर्चा हम ऊपर कर आए हैं उस स्तंभ पर एक शिलालेख उत्कीर्ण है। इसमें कहा गया है कि स्वर्ग की ओर जाने के तीन चरण क्रमशः दम, त्याग तथा अप्रमाद है। दम अर्थात् अपनी पाशविक वृत्तियों को जीतना। आत्मानुशासन। त्याग अर्थात् संग्रह की वृत्ति को

छोड़ना। सीमित साधनों में असीमित आकांक्षाओं को तृप्त कर पाना संग्रह की वृत्ति के रहते संभव नहीं। त्याग यह संभव कर देता है। अपनी आवश्यकता को सीमित करते हुए अपने सामने खड़े जरूरतमंद की सहायता में आगे आने के लिए त्यागवृत्ति की आवश्यकता है। और अप्रमाद का अर्थ है कि जो करणीय है उसे तुरंत पूरा करो। समय मत गंवाओ। अतः भागवत भाव से भावित जन हर क्षण स्वयं को इन विभूतियों से अलंकृत करके जीवनयात्रा पूरी करते हैं।

अकिंचनता (स्वयं को कुछ भी न समझना) को भागवत भावों में प्रमुखता प्राप्त है। श्रीकृष्ण को अहंकार पसंद नहीं और अकिंचन उनके सखा हैं। विदुरजी, ब्रज के

अवतारवाद और मूर्तिपूजा का आधार है श्रद्धा। कहा भी गया है - मानो तो देवता नहीं तो पत्थर। श्रद्धा भागवत संप्रदाय का बहुत ही समादृत मानवीय गुण है। गीता में कहा गया है - श्रद्धावानं लभते ज्ञानं। आखिर वह कौन सा आकर्षण है, जिससे खिंचकर मानवीय संबंध गतिशील होते हैं। वह आकर्षण श्रद्धा का है।

ग्वाल-बाल सभी अकिंचन हैं पर वे भागवत संपर्क से धन्य हुए लोग हैं। अकिंचनता अनायास नहीं आती। अकिंचनता आती है अपने अहंकार को पूर्णतः उलीच देने में। कहा गया है - **वयं निकिंचनाः शश्वत्रिठिक चनजनप्रियाः**। यह शरीर भोग के लिए नहीं तप के लिए मिला है। सबसे बड़ा तप है लोकसंग्रह। यह तभी संभव है जब हम अकिंचनता अपनाएं। जब तक स्वयं को उलीचते नहीं, निःशेष नहीं करते तब तक भागवत भाव आपमें आएगा कहाँ से?

अकिंचनता अनृशंसता का पोषण करती है। अनृशंसता भागवत भावों के विशिष्ट भाव हैं। यह नृशंसता का विपरीत ध्रुव है। जब हर शरीर परमात्मा का आवास है और सबमें प्रभु की दिव्य विभूति प्रच्छन्न रूप से निवास करती है तो इस धरा-धाम पर उस शरीर की रक्षा और उसका संवर्धन कितना आवश्यक है यह कहना जरूरी नहीं। इसी में आनृशंस्य की सार्थकता है। यही भाव अहिंसा का आधार है। आनृशंस्य की तपस्या में दूसरे का हनन ही नहीं अपनी आत्मा का हनन भी स्वीकार्य नहीं है। गीता में **आत्मैव आत्मनो बंधुः आत्मैव रिपुरात्मनः** जैसी पंक्ति से इसी आत्म के सर्वतोभावेन परिरक्षण का आग्रह मिलता है। इस आग्रह की पूर्ति के लिए आनृशंस्य भाव का पोषण भागवतों को इष्ट है।

स्वामी अखंडानंदजी ने एक प्रवचन में भगवान श्रीकृष्ण के जीवन-प्रसंगों के आधार पर यह स्थापित किया है कि भागवत भाव प्रतिकूलताओं को सहने, उसका समय पर प्रतीकार करने, अपने परिवेश के साथ मैत्रीपूर्ण तथा सहअस्तित्व बनाए रखने, धर्म की संस्थापना हेतु कष्ट

उठाने, प्रिय-अप्रिय, राग-द्वेष, दुःख और सुख के भावों से ऊपर उठकर आगे आने में निहित है।

भागवत भाव समन्वय, लोकसंग्रह तथा समर्पण के तीन स्तंभों पर टिकी एक सुंदर इमारत है। समन्वय की भावना विरोधों को, विभिन्नताओं को, अनेकताओं को बाधक नहीं, साधक के रूप में वरण करती है। लोकसंग्रह का आग्रह सभी प्राणियों को आत्मवत देखने की दृष्टि देता है, जिससे अकिंचनता, अनृशंसता तथा क्षमाशीलता आदि सद्गुणों को हम पहचान तथा अपना पाते हैं। अंत में समर्पण की भावना कुंठा,

निराशा और हताशा से बचाती है और मनोबल को बनाए रखने में सहायक होती है। भगवान श्रीकृष्ण का जीवन इन सद्गुणों का भंडार है। भगवद्गीता के बाद श्रीमद्भागवत महापुराण ने उनके जीवन के दिव्य प्रसंगों को हमारे समक्ष रखकर आनेवाली पीढ़ियों का आत्यंतिक कल्याण किया है। आधुनिक संदर्भ में नरसी मेहता ने भागवत भाव को अपने प्रसिद्ध भजन में कुछ इस प्रकार रेखांकित किया है - **वैष्णवजन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाणे रे।** ■

**युक्तानां खलु महतां परोपकारे
कल्याणी भवति रुजत्स्वपि प्रवृत्तिः।**

परोपकार में लगे हुए सज्जनों की प्रवृत्ति पीड़ा के समय भी कल्याणमयी होती है।

— भारवि

प्रेरक व्यक्तित्व

अंग्रेज होते हुए भी अंग्रेजी शासन द्वारा भारतीयों के उत्पीड़न के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाले दीनबंधु ऐंड्रूज परदुःखकातरता और दया के मूर्तिमान स्वरूप थे। आजीवन भारत में रहकर उन्होंने दीन-दुखियों की सेवा का व्रत लिया था। उनकी दयालुता और दीनों की अहेतुकी सेवा से प्रभावित होकर महात्मा गाँधी ने उन्हें 'दीनबंधु' नाम देकर सम्मानित किया था।

मानवता की सेवा में समर्पित दीनबंधु ऐंड्रूज

इंग्लैंड में टाइन नदी के तट पर स्थित न्यू कैसल नगर में 12 फरवरी, 1871 ई. को जन्म लेनेवाले चार्ल्स फ्रीयर ऐंड्रूज अंग्रेज होकर भी सच्चे भारतीय थे। उन्होंने अपने आपको सदा भारतीय माना और निःस्वार्थ भाव से आजीवन भारत की सेवा में लगे रहे। भारत की आजादी में भी उनका महनीय योगदान था।

भारतीय ऋषियों एवं संत-महात्माओं की तरह महात्मा ऐंड्रूज का जीवन शुभ संस्कारों से भरा था और उनमें सार्वभौम शांति, मानव-कल्याण, सर्वहितकारिता, विशालहृदयता तथा असंकुचित आध्यात्मिक सद्भावना अपरिमेय थी। उनमें दीनजनों के प्रति गहरी आत्मीयता और सहानुभूति थी। दरिद्रों के उत्पीड़न के प्रति वे अत्यंत संवेदनशील थे और उनकी कठिनाइयों एवं समस्याओं के समाधान के लिए वे हमेशा प्रयत्नशील रहते थे। दीन-दुखियों का कष्ट दूर करने के लिए जो स्वयं दीनता का वरण कर ले, उन्हें आराम देने के लिए कष्ट सह ले, वही दैन्य का सत्य चरितार्थ करता है। इस दृष्टि से ऐंड्रूज दैन्य के सजीव प्रतीक थे। उनका पवित्र जीवन चिरस्मरणीय है।

ऐंड्रूज के पिता का नाम जॉन एडविन ऐंड्रूज और माता का नाम मेरी शारलॉट था। दोनों ही सात्त्विक और धार्मिक प्रवृत्ति के प्राणी थे। उनकी सात्त्विकता और धार्मिक रुचि ने चार्ल्स फ्रीयर ऐंड्रूज के जीवन विकास और चारित्रिक उत्थान में महत्वपूर्ण योग दिया था। मेरी शारलॉट की गम्भीर ममता और शांतिप्रियता का ऐंड्रूज पर बड़ा प्रभाव पड़ा। दीनबंधु ऐंड्रूज ने स्वयं स्वीकार किया है कि 'मैंने लोगों से प्रेम करना अपनी माँ से सीखा था। जिस तरह बचपन में माँ ने मुझे स्नेह से सींचा था, उसी तरह मैंने लोगों की सेवा यह समझकर की कि उन्हें अधिकाधिक स्नेह मेरा सहज कर्तव्य है।' उनके पिता आध्यात्मिक पुरुष थे। दीनबंधु

ऐंड्रूज को उनसे आध्यात्मिक जीवन और परहित चिंतन की पवित्र प्रेरणा मिली। पवित्र अंतःकरण वाले पिता से उन्होंने ईश्वर में विश्वास और सत्यनिष्ठा प्राप्त की।

जब वे केवल नौ साल के थे तभी उनके परिवार को घोर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। उनकी माँ के नाम की सम्पत्ति को उनके परिवार में स्वजन धूर्त प्रमुख ट्रस्टी ने हड़प लिया। उनके पिता बड़े चिंतित हो उठे। उनकी माँ को धन जाने का शोक नहीं था, पर अपने पति की चिंता से उन्हें बड़ा दुःख था। संध्या के समय माँ, पिता और ऐंड्रूज ने मिलकर प्रार्थना की, 'यदि कोई शत्रु इस प्रकार विश्वासघात करता तो मैं उसे सहन कर सकता था। पर यह कार्य तो एक परिचित मित्र ने किया, जिनपर मेरा अधिक विश्वास था।' किंतु प्रार्थना करते हुए उन्होंने कहा - 'हे परमात्मा! मेरे स्वजन ने जो अपराध किया है, उसके लिए उसे क्षमा कर देना। उसके हृदय में ऐसी प्रेरणा देना कि वह अपनी भूल समझकर पश्चात्ताप करे और सत्पथ पर चलते हुए अपना जीवन बिताए।'

इस घटना के परिणामस्वरूप ऐंड्रूज के माता-पिता की दशा शोचनीय हो गई। वे इतने गरीब हो गए कि केवल सूखी रोटी पर ही गुजर करने लगे तथा गरीबों की बस्ती में एक छोटे-से मकान में रहने लगे। पर ईश्वर पर उनका विश्वास सदा अडिग बना रहा। इस तरह बचपन में ही उनके पवित्र जीवन, विचार और चिंतन में ईश्वर भक्ति का अक्षय बीज अंकुरित हो उठा।

ऐंड्रूज भारत के बारे में लोगों से सुनकर और पढ़कर उसके प्रति बहुत आकर्षित हो गए थे। उनके मन में इस देश के प्रति एक अनोखा लगाव उत्पन्न हो गया था। वे प्रायः भारत आने के लिए सोचा करते थे। एक बार उन्होंने अपनी माँ से बचपन में कहा था कि 'जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, तब भारत जाऊँगा।' और तेईस साल की अवस्था में ऐंड्रूज सन 1904 ई. में दिल्ली के सेंट

स्टीफेंस कालेज में अध्यापक के रूप में भारत आए। उन्होंने भारत आने पर कहा था कि 'इस देश में आने से मेरा नया जन्म हो गया है। और भारतीय स्वराज्य हमारे लिए धार्मिक सिद्धान्त है।'

दिल्ली निवास की अवधि में उनका कई नेताओं से साक्षात्कार हुआ। उन्हें भारतीय समस्याओं की जानकारी हुई और साथ-ही-साथ उनकी भारत-भक्ति बढ़ती गई। वे तरुणों के मन में स्वराज्य की भावना भरने लगे। उनकी सुदृढ़ मान्यता थी, 'मुझे अपना ध्येय भारत में मिल गया है और मैं एक क्षण के लिए भी इस देश के विषय में यह नहीं सोच सकता कि यह मेरी मातृभूमि से भिन्न है और यह भाव इतने स्वाभाविक और सहज ढंग से आया है कि मैं इसमें संदेह नहीं कर सकता कि यह स्वयं परमात्मा की ओर से आया है।'

30 जून, 1912 ई. को रवीन्द्रनाथ के इंग्लैंड आगमन के उपलक्ष्य में प्रसिद्ध अंग्रेज चित्रकार रोटेंस्टाइन ने अपने निवास-स्थान पर साहित्यकारों, कवियों और कलाकारों की एक साहित्य-गोष्ठी आयोजित, जिसमें ऐंड्रूज भी उपस्थित थे। उस गोष्ठी के संस्मरण में ऐंड्रूज ने लिखा - 'उस रात को जब मैं स्वयं कवि से मिला और उनके गीत सुन रहा था तब मुझे भारत की महान विश्वसंस्कृति की परम कोमलता तथा सौन्दर्य के अपरिमेय रूप का अनुभव हुआ। वह अन्तःप्रकाश और स्पष्ट दृष्टि की रात थी।' रवीन्द्रनाथ की कविता ने उनको बहुत प्रभावित किया। रवीन्द्रनाथ भी उनसे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने शांतिनिकेतन के कार्य में सहयोग देने के लिए ऐंड्रूज को आमंत्रित किया। ऐंड्रूज ने परमात्मा के शांति राज्य में प्रवेश करने का इसे सुनहला अवसर समझा। उन्होंने तत्काल शांतिनिकेतन आने का निश्चय कर लिया और उसी को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उनके स्वागत में उद्गार प्रकट करते हुए एक गीत लिखा था जिसका आशय था

कि हे बंधु! पश्चिम के तीर्थ से तुम प्राणरस की धारा लाए हो। तुमको नमस्कार है। पूर्व ने तुम्हारे गले में प्रेम की वरमाला पहनायी है। हे बंधु! तुम्हारा स्वागत है। तुम्हारे प्रेम में हृदय के द्वार खुल गए हैं। हे बंधु! प्रवेश करो, तुम्हें नमस्कार है। तुम्हें प्रभु के उपहार के रूप में पाया है। हे बंधु! उनके चरणों में नमस्कार करता हूँ।’

शांतिनिकेतन में कार्य प्रारंभ करने के पहले ऐंड्रूज महात्मा गांधी के कार्य में हाथ बँटाने के लिए दक्षिण अफ्रीका गए। वहाँ उन्होंने महात्मा गांधी के प्रति जो श्रद्धा व्यक्त की, उससे पाश्चात्य जगत आश्चर्यचकित हो उठा। ऐंड्रूज ने लिखा है - ‘जब मेरा जहाज भूमि के किनारे पहुँचा, तब हमें समुद्र के तट पर कितने ही हिंदुस्तानी खड़े दिखाई पड़े। श्रीपोलक को मैं पहचान गया। मैंने उनसे पूछा कि गांधीजी कहाँ हैं? महात्माजी निकट खड़े थे, मुस्कराकर उन्होंने कहा कि ‘मैं ही गांधी हूँ।’ उनका दर्शन करते ही मेरे अंतःकरण में यही प्रेरणा हुई कि उनकी चरणधूलि माथे पर चढ़ा लूँ। तुरंत मैंने यही किया। महात्माजी ने कहा कि ‘ऐसा न कीजिए। ऐसा कस्ना मुझे लज्जित करना है।’

ऐंड्रूज ने नेटाल में महात्मा गांधी द्वारा संचालित सत्याग्रह में भाग लिया। वे फिजी में भी रहे। फिजी से लौटकर वे शांतिनिकेतन चले आए और जीवन के अंतिम समय तक वे शांतिनिकेतन में ही बने रहे।

ऐंड्रूज मानते थे कि ईश्वर उस व्यक्ति से प्रसन्न रहते हैं, जो असहाय, बीमार, दीन-दुःखी जनों की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर देता है। ऐसे ही व्यक्ति को प्राणीमात्र में भगवान का दर्शन होता है। एक बार ऐंड्रूज कराची गए थे। उनसे कराची यात्रा के समय एक व्यक्ति ने पूछा - ‘ईश्वर कहाँ हैं? दीनबंधु ने कहा कि ‘मैं आपको सायंकाल ईश्वर के पास ले चलूँगा। शाम को उस नवयुवक के साथ ऐंड्रूज एक अन्त्यज बस्ती में एक बूढ़े भंगी के घर गए। झोपड़ी में एक दस साल का तपेदिक से

पीड़ित बालक था। न उसकी माँ थी और न दादी। बूढ़ा भंगी उस बीमार की सेवा में लगा था। दीनबंधु ऐंड्रूज ने युवक से कहा, ‘भगवान का दर्शन कर लीजिए।’ नवयुवक स्तब्ध हो उठा। वह नवयुवक पहले व्यापार में लगना चाहता था किंतु इस घटना से इतना प्रभावित हुआ कि उसने सबकुछ छोड़छाड़ कर अपना संपूर्ण जीवन दीन-दुःखियों की सेवा में लगा दिया।

दीनबंधु ऐंड्रूज ने अपने जीवन को सदा इस पवित्र विचार से संपन्न रखा कि किसी भी प्राणी का उनसे अपकार न हो। उन्होंने अपने प्रति किए गए अपकार का कभी प्रतिकार न कर उसे सहने की क्षमता बढ़ायी।

दीनबंधु ऐंड्रूज क्षमामूर्ति थे, उनके लिए सब अपने थे। कोई पराया नहीं। उनके जीवन की अनेक घटनाएँ इसे सिद्ध करती हैं। एक बार वे पूर्व अफ्रीका में युगांडा रेलवे द्वारा यात्रा कर रहे थे। कुछ गोरे रेलगाड़ी के डिब्बे में घुस गए। वे ऐंड्रूज को घसीटकर बाहर लाने का यत्न करने लगे। ऐंड्रूज ने रेल की जंजीर पकड़ ली। गोरों ने दाढ़ी पकड़कर उनको खींचा और पूछा, ‘क्या तुम्हीं वह गोरे हो, जो हमारे विरोध में लिखकर यहाँ के निवासियों को भड़काया करते हो?’ इस घटना को लेकर ब्रिटिश संसद में किसी ने प्रश्न किया और पूर्वी अफ्रीका के उन दुष्ट गोरों के प्रति कड़ी कार्रवाई करने की न्यायोचित माँग की। इंग्लैंड के प्रधानमंत्री ने बताया कि श्री ऐंड्रूज ने ही यह इच्छा प्रकट की थी कि ‘जिन लोगों ने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया है, उनके खिलाफ कुछ भी न किया जाए।’ उन्होंने उन दुष्टों को क्षमा कर दिया।

उनके जीवन का एक प्रसंग है, जिससे उनकी दैन्यप्रियता सिद्ध होती है। एक समय वे उत्तर भारत के बड़े-बड़े नगरों का दौरा कर रहे थे। दिसंबर का महीना था। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था। सबेरे-सबेरे एक बड़े स्टेशन पर रेलगाड़ी रुक गई। वे अपने साथियों के साथ उतर पड़े। वे गेट की ओर बढ़ रहे थे कि उन्होंने स्टेशन

मास्टर के कार्यालय के सामने एक भीड़ देखी। भीड़ में फटे-पुराने कपड़े पहने एक स्त्री खड़ी थी। वह जाड़े से थर-थर काँप रही थी। दीनबंधु ऐंड्रूज ने देखा कि गोरा स्टेशन मास्टर स्त्री को बुरी तरह फटकार रहा है। वह स्त्री नतमस्तक खड़ी थी। ऐंड्रूज का हृदय करुणा से द्रवित हो उठा। लोगों से पूछने पर उन्हें पता चला कि स्त्री जाड़े से परेशान होकर स्टेशन मास्टर के कमरे में आग ताप रही थी, पर स्टेशन मास्टर ने उसको बाहर निकाल दिया। ऐंड्रूज के मन में इस बात से बड़ी व्यथा हुई। वे अपने आपको संभाल न सके। उन्होंने स्टेशन मास्टर से कहा, 'आपको लज्जा नहीं आती है? इस स्त्री पर अत्याचार न करके आपको उसके प्रति सहानुभूति दिखानी चाहिए थी।' स्त्री की ओर देखते ही उनकी आँखों से आँसू टपक पड़े। उन्होंने अपना कीमती ऊनी शाल उसके कंधे पर डाल दिया और बिना कुछ कहे आगे बढ़ गए।

कभी-कभी ऐसा संयोग उपस्थित हो जाता था कि उनके पास एक पैसा भी नहीं रहता था। भिखारियों को पैसे देते-देते उनकी जेब खाली हो जाती थी। कलकत्ता की घटना है। सबरे का समय था। एक लड़का अखबार बेचता चला जा रहा था। ऐंड्रूज ने उससे अखबार लेने के लिए बुलाया। लड़के ने समाचारपत्र उनके हाथ में रख दिया। ऐंड्रूज ने जब जेब में हाथ डाला तो वे चौंक उठे। जेब तो भिखारियों को दान देने के कारण पहले ही खाली हो चुकी थी। लड़का उनकी ओर गौर से देखता रहा। लड़के के मुख से सहसा निकल पड़ा, 'आप तो ऐंड्रूज साहब हैं। मैं आपसे पैसे नहीं लूँगा' और वह भीड़ के बीच से आगे बढ़ गया।

दीनबंधु की महानता की यह एक प्रमुख विशेषता थी उनकी सरलता और निष्कपटता। पंजाब में जनरल डायर के सैनिकों द्वारा किए गए अत्याचार की करुण

कथा सुनकर द्रवित हो उठे थे। उन्होंने लोगों से कहा कि मुझे क्षमा करो। अंग्रेजों ने अत्याचार किया है। मैं भी अंग्रेज हूँ। अंग्रेज मेरे भाई हैं। अपने भाइयों के पाप का बोझ मेरे सिर पर है। उनका अपराध मेरा अपराध है।

दीनबंधु ऐंड्रूज लगभग 69 साल तक जीवित रहे और 5 अप्रैल, 1940 को स्वर्ग सिधार गए। जीवन की संध्या में वे महती शांति से परिपूर्ण थे। गांधी जी उनके अंतिम दर्शन के लिए गए तो ऐंड्रूज ने कहा, 'मोहन! स्वराज्य आ रहा है।'

उन्होंने अंतिम क्षणों में कहा था, 'जबसे मैं अस्पताल में पड़ा हूँ, मेरा विश्वास है कि मेरी प्रार्थनाएँ और आशाएँ केवल मेरी अपनी ही यातनाओं को देखते हुए आज सबसे कम महत्व रखती हैं। मैंने प्रत्येक क्षण यही प्रार्थना की है कि ईश्वरीय राज्य पृथ्वी पर स्थापित हो और ईश्वर की ही इच्छा के अनुसार पृथ्वी पर सारा काम हो, जिस तरह स्वर्ग में नित्य होता रहता है।'

महाकवि रवीन्द्रनाथ ने श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा, 'हमारे प्रियतम मित्र चार्ल्स ऐंड्रूज के प्राणरहित शरीर ने आज सर्वग्राही मिट्टी में आश्रय लिया है। मृत्यु से सत्ता का चरम अवसान नहीं हो जाता, यह सोचकर शोक के समय हम धैर्य धारण करने का यत्न करते हैं, फिर भी सांत्वना नहीं पाते।'

महात्मा गांधी ने कहा था, 'यदि मेरे पास समय हो तो मैं आजीवन ऐंड्रूज के गुणों का गान करता रहूँ।'

दीनबंधु ऐंड्रूज ने मानवता की सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया था। उनके निस्वार्थ समर्पित जीवन की ज्योत्सना को उपकृत भारतवासी युगों तक अपनी अंतरात्मा में महसूस करते रहेंगे। ■

बांग्ला कहानी

दूध का दाम

वनफूल

(अनुवाद : डॉ. प्रवीर कुमार मुखोपाध्याय)

ट्रेन आ रही थी। कुछ सजीधजी, छरहरी सुंदरी युवतियां स्टेशन में आई थीं। उनके ही अगल-बगल कुछ बंगाली छोकरे कुछ अनमने भाव से तो कोई जानबूझकर घूम रहे थे। भीड़ में एक बुढ़िया किसी व्यक्ति के होल्डऑल के स्ट्रैप में पैर फंस जाने के कारण गिर गई। इस घटना को किसी ने नहीं देखा। देखने की बात भी नहीं थी। विदेश में अपनी शिष्टता दिखाने की प्रवृत्ति युवतियों के इर्द-गिर्द ही पनपती है। हालांकि सभी लोग युवतियों को खुलेआम या लुकछिप कर देखने में विभोर नहीं थे। जिनके होल्डऑल के स्ट्रैप में पैर फंस जाने की वजह से बुढ़िया गिर गई थी, वे पढ़े-लिखे भद्र व्यक्ति थे और पास में ही खड़े थे। उन्होंने बुढ़िया को धमकाते हुए उपदेश दिया - 'देखकर चल नहीं पाती हो! मेरा तो स्ट्रैप ही फट जा सकता था।' बुढ़िया के दाहिने पैर में काफी मोच आई थी। फिर भी वह लंगड़ाती हुई प्लेटफॉर्म में दौड़-भाग करने लगी। उनको एक जगह बैठने की जरूरत थी। ट्रेन अधिक देर तक रुकेगी नहीं। आखिर हड़बड़ाती हुई वह उस जमाने के एक इंटर क्लास में चढ़ गई। स्वभावतः सभी शोर मचाने जगे। हालांकि इस समय इंटर क्लास का नाम बदलकर सेकंड क्लास हो गया है।

एक बंगाली सज्जन कुछ हटकर उन्हें बैठने की जगह दे सकते थे, क्योंकि वे अपना सामान पसारकर बैठे थे। लेकिन वे हटकर बैठे नहीं और उपदेश देने लगे - 'चढ़ तो गई हो, अब बैठोगी कहाँ?'

'बेटा! मैं नीचे तुम्हारे पैर के पास बैठ जाऊंगी, सिर्फ दो ही स्टेशन की तो बात है, फिर उतर जाऊंगी। तुम लोगों को ज्यादा तकलीफ नहीं दूंगी।'

बुढ़िया उनके पैर के पास ही उनके जूते को सरकाकर बैठ गई। खास दिक्कत नहीं हुई क्योंकि बुढ़िया छोटी कद की थी और वह पैर समेटकर बैठी हुई थी। लेकिन कुछ देर बाद उसे

परेशानी होने लगी। जिस पैर में स्ट्रैप फंस गया था, वहां काफी दर्द हो रहा था। पैर फूल भी गया था। वह सोचने लगी कि उतरूंगी तो कैसे? दो स्टेशन के बाद सिर्फ उतरना ही तो नहीं है, दूसरी ट्रेन में चढ़ना भी है। वह तो पैर हिला भी नहीं पा रही थी, खड़ी कैसे रहेगी? ट्रेन के कमरे में कई बंगाली थे। कुछ तो उसके बेटे की उम्र के तो और कुछ उसके पोते की उम्र के। लेकिन वे उसकी मदद करेंगे? अपने अनुभव से उसे ऐसी उम्मीद नहीं थी, फिर भी आखिरकार उनकी ही मदद लेनी पड़ेगी - कोई चारा भी तो नहीं था।

बुढ़िया जिस स्टेशन में उतरनेवाली थी, वह स्टेशन थोड़ी देर बाद आ गया। यात्रीगण हड़बड़ाते हुए उतरने लगे। बुढ़िया की ओर किसी ने घूम कर भी नहीं देखा।

‘बेटा! मुझे उतार दो - मैं खड़ी नहीं हो पा रही हूँ’ - बुढ़िया की यह करुण स्थिति सभी को सुनाई पड़ी लेकिन अधिकांश लोगों का हावभाव ऐसा था मानो वे कुछ सुन ही नहीं पा रहे हैं।

एक ने कहा - ‘भिखारिन औरत का साहस तो देखो। जा तो रही है बगैर टिकट के और उस पर उतारने में मदद की मांग.....। वे बुढ़िया को भिखारिन समझ बैठे थे। लेकिन बुढ़िया भिखारिन नहीं थी, उसके पास टिकट भी था।

दूसरे ज्ञानी व्यक्ति ने टिप्पणी की ‘ऐसी हेल्पलेस बुढ़िया को रास्ते में अकेले छोड़ दिया है - पता नहीं इसके पति, बाल-बच्चे हैं या नहीं। ताज्जुब की बात है।’

सिगरेट का कश लगाते हुए वे भी उतर गए। गाड़ी में जो बैठे थे उनमें से दो-एक टिफिन कैरियर खोलकर खाने लगे। बुढ़िया की मिनती उन्हें सुनाई थी, लेकिन उस ओर ध्यान देना उन्हें समीचीन नहीं लगा। बुढ़िया दोनों हाथ घसीटते हुए दरवाजे के पास आ गई, लेकिन उसे उतरने की हिम्मत नहीं हुई।

‘ए बुढ़िया! हटो दरवाजे से’ - एक मारवाड़ी यात्री बुढ़िया को लगभग रौंदते हुए भीतर घुस गया। उसके पीछे एक मजबूत शरीरवाला कुली था। उसके सर पर सूटकेस - होल्डऑल। कुली के पीछे चप्पल पहने नील चश्मा लगाए छिपकली नुमा एक छोकरा। उसने अभिनय की मुद्रा में कहा, ‘दयामयी! राह तो छोड़िए। दरवाजे के पास क्यों बैठी हैं?’

‘बेटा! पैर में बहुत चोट है, उतर नहीं पा रही हूँ।’

‘देखें, अगर कोई स्ट्रेचर ला सकूँ।’ वह छोकरा चला गया और फिर लौटा ही नहीं।

मजबूत शरीरवाला वह कुली जो सामान सर पर लेकर ट्रेन के भीतर घुसा था, बाहर निकलने के लिए दरवाजे के पास आया।

‘मैया, कृपया थोड़ा हटकर बैठिए। आने-जाने के रास्ते में क्यों बैठी हैं?’

एकाएक बुढ़िया फूट-फूट कर रोने लगी। ‘मैं उतर नहीं पा रही हूँ बेटा - पैर में चोट लगी है।’

‘आप कहाँ जाएँगी?’

‘गया।’

‘चलिए, हम आपको ले जाते हैं।’ एक बलिष्ठ व्यक्ति छोटे बच्चे को जिस तरह दोनों हाथों से छाती में जकड़कर ले जाता है, ठीक उसी तरह वह कुली उस बुढ़िया को छाती में उठा लिया और सीधे फर्स्ट क्लास वेटिंग रूम में ले गया।

‘माईजी! आप यहाँ बैठिए, गया पैसेंजर थोड़ी देर में आएगी। मैं ठीक टाइम पर ट्रेन में आपको चढ़ा दूँगा।’ बुढ़िया वेटिंग रूम के फर्श पर ही बैठ गई।

वहाँ विदेशी पोशाक पहने हुए दो बंगसंतान दो आराम कुर्सी की हथेली पर पैर फैलाकर लेटे हुए थे। एक समाचार पत्र पढ़ रहे थे और दूसरे अंग्रेजी किताब।

किताब के मुखपृष्ठ पर अर्धनग्न हँसमुख नारी की तस्वीर थी। बुढ़िया को लगा कि वह उसे देखकर व्यंग्य से हँस रही है।

संभवतः आपसी गपशप पहले से चल रही थी। फिर से वह शुरू हुई। 'शिष्टता हमारे देश में भी थी।'

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः! भाई साहब! यह बात तो हमारी मनुसंहिता में भी लिखी हुई है।

जो व्यक्ति नारी की तस्वीरवाली मासिक पत्रिका पढ़ रहे थे, वे शायद इसकी खबर नहीं रखते थे, वे उठ बैठे।

'क्या कह रहे हैं? यह बात मालूम होने पर मैं क्या उस लफंगे को छोड़ देता? मनु के युग में भी हमारे देश में शिष्टता और सभ्यता थी, हमलोग बर्बर नहीं थे, यह तथ्य उस बचुए को अच्छी तरह समझा देता।'

बुढ़िया को लगा कि इसके पहले किसी असली गोरे साहब के साथ शायद उस व्यक्ति की बहस हुई थी। गोरे साहब ने संभवतः बिलैती पोशाक पहने काले गात्र के इस बंग-सुंदर को व्यंग्य से बर्बर कहा था।

बुढ़िया नै मन ही मन कहा - 'तुमलोग बर्बर ही हो। तुममें अवश्य शिष्टता है लेकिन केवल युवती लड़की के मामले में ही वह प्रकट होती है।' बुढ़िया थोड़ी बहुत, बांग्ला, संस्कृत एवं अंग्रेजी जानती थी। अपने जमाने में वह बेथुन स्कूल में पढ़ी थी।

एकाएक उनमें से एक भद्र महोदय ने बुढ़िया को देख लिया।

'अरे, यह कहाँ से आ टपकी?'

'कोई भिखारी-फिखारी होगी।' दूसरे ने अंदाज से यह बात कही।

'सचमुच भिखारियों से सारा देश भर गया है। स्वाधीनता के बाद तो भिखारियों की संख्या और बढ़ गई है। कुछ लोग लाज से मुंह खोलकर भीख भी नहीं मांग सकते हैं।

उस भद्र महोदय ने एक पैसा बुढ़िया की ओर फेंक दिया। बुढ़िया निर्वाक बैठी रही।

'पैसा उठा लो। मैंने तुमको ही दिया है।'

फिर भी बुढ़िया कुछ नहीं बोली। दाता भद्र महोदय को शक हुआ कि शायद बुढ़िया बंगाली नहीं है। फिर उन्होंने राष्ट्रभाषा का सहारा लिया। नौकरी के वास्ते कुछ दिन पहले ही उन्होंने राष्ट्रभाषा की परीक्षा पास की थी।

'पैसा उठा लो! तुम्हीं को दिया है।'

तब बुढ़िया ने साफ-साफ बांग्ला में जवाब दिया - 'बेटा! मैं भिखारिन नहीं हूँ, मैं आपकी ही तरह एक पैसेंजर हूँ।'

'फिर यहाँ क्यों बैठी हो? यह तो अपर क्लास वेटिंग रूम है।'

'मेरे पास भी सेकंड क्लास का टिकट है।'

ठीक उसी समय वह हट्टा-कट्टा कुली दरवाजे पर दिखाई पड़ा।

'चलिए माईजी, गया पैसेंजर आ गया है।'

अपनी गठीली भुजाओं के सहारे वह पुनः बुढ़िया को एक शिशु की तरह छाती में चिपकाकर बाहर चला गया। गया पैसेंजर में थोड़ी-बहुत भीड़ थी लेकिन कुली तो हट्टा-कट्टा था। हर जगह शक्ति की जीत होती है। उसने डरा-धमकाकर एक बेंच के कोने में उस बुढ़िया के लिए एक जगह का इंतजाम कर ही दिया।

बुढ़िया ने उसे दो रुपये दिए।

इस प्रसंग में कुली के साथ हिन्दी में उसकी जो बातचीत हुई, उसका सार इस प्रकार है :-

'मेरी मजदूरी तो आठ आना है। फिर मुझे दो रुपये क्यों दे रही हैं?'

'बेटा! तुमने मेरे लिए इतना कुछ किया इसलिए कुछ

ज्यादा दे रही हूँ।’

‘नहीं माईजी, मुझे माफ कीजिएगा। मैं धर्म नहीं बेचता हूँ।’

‘बेटा! तुम तो मेरे बेटे ही हो, तुम्हें कभी दूध नहीं पिलाया, जो थोड़ी-बहुत दे रही हूँ उसे दूध का दाम मानकर ले लो। तुम्हारी लंबी उम्र हो, भगवान तुम्हारा

भला करे।’

बुढ़िया का गला भर आया। उसकी आँखों में पानी डबडबाने लगा।

कुली कुछ देर हतप्रभ-सा खड़ा रहा, फिर उसने बुढ़िया को प्रणाम किया और उतर गया। ■

धर्म का भाई

सौराष्ट्र में एक प्रसिद्ध एवं सच्चरित्र उदार डाकू था। उसका नाम था कादू मकरानी। मकरानी शरीफ मुसलमान जाति है। बगावत के समय में कादू को तीन दिन तक खुराक नहीं मिली। खुराक की खोज में वेष बदलकर वह एक कस्बे में जा पहुँचा। बीच बाजार में एक युवती अमरूद लेकर बैठी थी। असहाय औरतों, ब्राह्मणों और गोपालकों- ग्वालों को कादू मकरानी कभी लूटता नहीं था और गरीब व्यापारियों से भी वह पूरा मूल्य देकर माल खरीदता था। अतः उसने अमरूद का मूल्य पूछा। उस समय अमरूद डेढ़ आने सेर मिलते थे, किंतु उस चतुर युवती ने कादू को पहचान लिया और कहा – ‘सेर के छह आने हैं, भाई!’

‘तुम्हारे अमरूद बहुत महँगे हैं।’ कादू ने कहा।

ताजे-पके अमरूद भी तो हैं। युवती बोली। मैं आपके साथ कोई जबरदस्ती तो नहीं करती हूँ? पैसे आपकी जेब में हैं और अमरूद मेरे टोकरे में।’

‘अच्छा!’ कादू बोला – ‘चार सेर अमरूद दे दो।’

अमरूद तौलकर युवती ने कादू के झोले में भर दिए और कादू ने अठन्नी निकालकर उस युवती के हाथ पर रख दी।

यह तो अठन्नी है। क्या आपको इतना भी मालूम नहीं कि चार सेर का डेढ़ रुपया होता है? आप पढ़े-लिखे तो हैं न? युवती क्षोभ में बोली।

‘मैं पढ़ा-लिखा तो नहीं हूँ, बहन!’ कादू बोला, ‘किंतु मुझे लेखा-जोखा तो आता है। तुम्हीं ने तो कहा था, ‘पैसे तुम्हारी जेब में हैं और अमरूद मेरे टोकरे में’, किंतु अब तो दोनों ही मेरे हाथ में आ गए। जब अमरूद तेरे पास थे, तूने मनमाना भाव माँगा। अब अमरूद मेरे पास हैं तो मैं भी अपना मनचाहा पैसा दे सकता हूँ।’ युवती कादू का उत्तर सुनकर अवाक रह गई।

‘मगर नहीं।’ थोड़ी देर रुककर कादू बोला, ‘तुमने मुझे ‘भाई’ कहा, और मैंने भी तुझे ‘बहन’ कह दिया। ये आठ आने तो तेरे अमरूद का मूल्य है। बहन को भी कुछ देना होता है, कुछ भी बिना दिए भाई बहन से कैसे विदा हो सकता है,’ कहकर कादू ने अपनी जेब में से रूमाल में लपेटे हुए सोने के दो कंगन निकाले और युवती के हाथ में देते हुए बोला – ‘लो बहन! यह है भाई की तुच्छ भेंट। मगर गरीबों के हाथ महँगे भाव में अमरूद मत बेचना। मुझे लोग ‘कादू मकरानी’ के नाम से जानते हैं।’ कहकर कादू वहाँ से चल दिया। युवती की आँखों से अश्रुप्रवाह चल रहा था और होठों पर था मूक आशीर्वाद – ‘चिरंजीव हो मेरा भाई कादू मकरानी।’

कविताएँ

वीरेन्द्र प्रसाद सिंह

ध्रुव सत्य

कितने तपते
सावन भादों
टप-टप चूती छतरी जाने
ध्रुव सत्य है बात हमारी
उनकी खूंटे की लाचारी
कितने सिर पर
बाल हमारे
सिर की झुकती पगड़ी जाने
पर्णकुटी पर की दरवानी
पूरी स्नेहमयी अगवानी
कितने इर्द-गिर्द
नरभक्षी
अंदर डरती बकरी जाने
यही गलत है भैंस हमारी
क्योंकि उनकी लाठी भारी
कितने और
बचे हैं धागे
सिरहाने की लुगरी जाने। ■

जिंदगी

फैलते वितान-सा
विरोध फैलता गया
जले हुए ब्रणों पर
नमक है जिंदगी

भीगी पलकें हैं
यादों की अलगनी पर
सूखते अतीत का
क्षण है जिंदगी
चौराहा किधर जाता है
केवल बतलाता है
भीड़ में अकेली
कसक है जिंदगी! ■

स्वप्न दर्द मेरे

कभी-कभी
सुमधुर स्वप्न
सहमती कल्पना के
वातायन में
मनमाने टहलते हैं
कभी-कभी
असहाय पीड़ा
परिचित टीस बनकर
कुरेदने लगती है
हृदय का सुकुमार पटल
गुण-दोष उसके
स्वप्न-दर्द मेरे क्यों?
दो ही तो तार हैं
'आत्मीयता' की वीणा में। ■

पूर्णत्व की आकांक्षा एक महनीय भावना है। जिस व्यक्ति में पूर्णत्व प्राप्त करने की भावना पैदा हो जाती है वह अपने जीवन को पवित्र बनाने की दिशा में अग्रसर कर देता है। वह अपने भीतर के दोषों को देखकर, अपनी वर्तमान हीन-दीन दशा की बुराई से परिचित होकर पवित्रता के मार्ग पर अग्रसर हो उठता है और दिव्य जीवन, दिव्य आनन्द और शाश्वत सुख के लिए निरंतर प्रयत्न करना शुरू कर देता है।

जीवन में पूर्णत्व की आकांक्षा का महत्व

पं. बलदेव उपाध्याय

हृदय में पूर्णत्व की आकांक्षा का उदय तभी होता है जब मनुष्य को अपनी अपूर्णता का ज्ञान हो जाता है और उसमें ज्ञानोद्दीपन की इच्छा प्रकट होती है। जब तक वह अपने को अपूर्ण नहीं जानता, तब तक पूर्ण होने की इच्छा का उदय ही क्योंकर हो सकता है। इसीलिए श्रीमद्भगवद्गीता (13/11) में ज्ञान के साधनों के बीच '**जन्म मृत्यु जरा व्याधि दुःख दोषानुदर्शनम्**' को ज्ञान ही माना गया है अर्थात् जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा और रोग दुःखदायी होते हैं और उनमें दोष भरा हुआ है; इस बात का बारंबार विचार करना भी ज्ञानरूप ही है। जब तक इनमें दुःख का ज्ञान नहीं होता, तब तक यथार्थ सुख पाने की इच्छा का उदय नहीं हो सकता।

भोगों की इच्छा तथा पूर्णत्व की आकांक्षा में महान अंतर है। इच्छा सांसारिक वस्तुओं, स्वार्थनिष्ठ अधिकार, अपना प्रभुत्व, तुच्छ सुख तथा इन्द्रियजन्य भोगविलास की चाह है, परंतु पूर्णत्व की आकांक्षा इससे नितान्त भिन्न वस्तु है। आकांक्षा दैवी वस्तुओं, जैसे सदाचार, दया, शुद्ध तथा प्रेम की चाह है। आकांक्षा मनुष्य के लिए अपनी त्रुटियों को दूर कर पवित्र जीवन बिताने के लिए एक बहुत ही आवश्यक साधन है। बहुतों की तो यह अनुभूति है कि मनुष्य पूर्णत्व की आकांक्षा के पंखों के द्वारा पृथ्वी से देवलोक को, अज्ञानता से ज्ञान को और अंत में अंधकार से उच्च ज्ञानलोक को प्राप्त कर लेता है। पूर्णत्व की आकांक्षा से हीन प्राणी तुच्छ, सांसारिक, विषयी तथा अनुत्साही बना रहता है। यदि मनुष्य अपनी वास्तव उन्नति चाहता है, तो उसके हृदय में पूर्णत्व की आकांक्षा की दीपशिखा जलनी ही चाहिए। पंखों से रहित पक्षी उड़ नहीं सकता। उसी भाँति पूर्णत्व की आकांक्षा के बिना मनुष्य न तो अपने को उच्च बना सकता है, न विषय-वासनाओं पर विजय प्राप्त कर सकता है। वह सामान्य प्राणी

के समान अपनी इन्द्रियों का दास बना रहता है, विषयों के अधीन बना रहता है और निर्बल होने के कारण वह घटनाओं की परिवर्तन-धारा में इधर-उधर लुढ़कता रहता है।

पूर्णत्व की आकांक्षा से संपन्न मानव की स्पष्ट पहचान है - अपनी तुच्छ दशा से असंतोष तथा उच्च बनने की चाह। जिस प्रकार प्रबुद्ध मानव आगे बढ़ना चाहता है, निद्रा से जागकर अपने को ज्ञान के मार्ग पर बढ़ते हुए पाता है, उसी प्रकार पूर्णत्व की आकांक्षावाला मनुष्य भी अपनी वर्तमान हीन-दीन दशा की बुराई से परिचित हो जाता है और चाहता है कि वह श्रेष्ठतम स्थिति को प्राप्त करे। इस प्रकार की आकांक्षा करने से मनुष्य को विलक्षण फल प्राप्त होते हैं - ऐसे फल जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता। कठिन-से-कठिन

जब तक संसार के विषयों का स्वाद मनुष्य को मीठा लगता है तब तक वह उनसे ही संतुष्ट रहता है, आगे बढ़ना ही नहीं चाहता। परंतु जब वह उस मीठी वस्तु को तीता मानने लगता है, तब उसके हृदय में ऊँचे-ऊँचे विचार उत्पन्न होते हैं।

वस्तु उसके लिए सुलभ बन जाती है, वास्तव में उन्नति का मार्ग खुल जाता है; उसके हृदय में दिव्य ज्ञान तथा प्रसाद के सब द्वार खुल जाते हैं। कविता, संगीत, गीत आदि पवित्र तथा सुंदर वस्तुओं के पाने का मार्ग भी तभी खुल जाता है, जब वह अपने हृदय को आकांक्षा की उदयभूमि बनाने के लिए तैयार हो जाता है। पर यह आकांक्षा स्थिर भाव से होनी चाहिए। आज दिव्य वस्तु के लिए इच्छा तो हुई किसी उपदेशक की शिक्षा से, परंतु कल ही वह गायब हो जाती है, क्योंकि हमारा हृदय दुर्बल होता है, हमारी भावना कमजोर होती है; हममें अंतःसत्त्व, भीतरी बल का अभाव होता है।

मैंने ऊपर कहा है कि सांसारिक विषयों में दोष का दर्शन ज्ञान का अन्यतम साधन है। इसका अर्थ यह है कि जब तक संसार के विषयों का स्वाद मनुष्य को मीठा लगता है तब तक वह उनसे ही संतुष्ट रहता है, आगे बढ़ना ही नहीं चाहता। परंतु जब वह उस मीठी वस्तु को तीता

मानने लगता है, तब उसके हृदय में ऊँचे-ऊँचे विचार उत्पन्न होते हैं। मानव की वर्तमान दशा का वर्णन भागवत के इस श्लोक में बड़ी सुंदरता से किया गया है -

कुत्राशिषः श्रुतिसुखा मृगतृष्णिरूपाः

क्वेदं कलेवरमशेषरुजां विरोहः ।

निर्विद्यते न तु जनो यदपीति विद्वान्

कामानलं मधुलवैः शमयन् दुरापैः ॥

कानों को सुख देनेवाले सांसारिक विषय मृगतृष्णा के समान हैं। कहाँ वे और कहाँ यह शरीर, जो संपूर्ण रोगों के उद्गम का स्थान है। परंतु इन बातों को भलीभाँति जानने पर भी प्राणी को संसार से वैराग्य नहीं होता। वह छोटे-छोटे मीठे मधु के टुकड़ों से अपने काम की आग को शांत करता रहता है और समझता है कि इसी प्रकार सब कामनाएं स्वतः शांत हो जाएंगी। ऐसी

दयनीय स्थिति है इस मानव की। ऐसी दशा में दिव्य ज्ञान की आकांक्षा का जन्म कहाँ हो? उसका जन्म तो तब होता है जब वह सांसारिक सुखों से वंचित हो, अपवित्रता के कारण दुःख पाने लगे अथवा शोक से नितान्त विह्वल-चित्त हो। मतलब यह है कि जिसे वह अब तक अपनी प्रिय वस्तु समझता आया है उससे उसे धक्का लगना चाहिए। प्रेम का प्रवाह नीचे की ओर न जाकर ऊपर की ओर होना चाहिए। तभी ऐसी उच्च आकांक्षा का उदय होता है।

ऐसी दशा में मनुष्य में उन्नत होने की इच्छा प्रथम आवश्यक साधक है। मनोविज्ञान का यह पक्का नियम है कि जिस वस्तु की जितनी स्पृहा होती है वह वस्तु उतनी ही मिलती है। मनुष्य यदि तुच्छ विषयों की इच्छा तीव्र रूप से करता है तो उसे वे मिल जाते हैं। अतः उच्च तथा श्रेष्ठतम भावों की ओर हमें अपने मन को पहले झुकाना चाहिए। सदा पवित्र विचारों को मन में स्थान

दो। गंदे विचारों से बढ़कर अपवित्रता क्या हो सकती है? विचार ही मनुष्य को पवित्र तथा अपवित्र बनाता है। यदि विचार पवित्र हैं तो मनुष्य पवित्र है। यदि विचार ही अपवित्र हैं, तो मनुष्य भी अपवित्र है। इससे आगे बढ़ने की पहली सीढ़ी है - पवित्र विचारों को जगाना। इस मार्ग का पथिक जीवन में कभी असफल नहीं होता।

मनुष्य ही अपनी त्रुटियों, अभावों तथा अपवित्रताओं के लिए उत्तरदायी है। यदि वह समझता है कि ये वस्तुएं कहीं बाहर से उसमें आ गई हैं, तब तो वह उन्हें भगाने की, हटाने की कभी कोशिश ही नहीं करता। इसीलिए अपनी जिम्मेदारी पहले समझनी चाहिए। अपना अपराध ही नहीं समझेगा, तो उन्हें दूर ही क्यों कर हटायेगा? मनुष्य को चाहिए कि वह पहले अपने अपराधों को समझे

और अपनी बुराई को देखे। कबीर ने ऐसे जीव की भावनाओं को इस दोहे में पूर्णतया प्रकट किया है -

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।

जो तन देखा आपना, मुझ-सा बुरा न कोय।।

परंतु एक बात ध्यान देने की यह है कि बिना परिश्रम तथा प्रयत्न किए अध्यात्म की भी सिद्धि नहीं होती।

‘या लोकद्वयसाधनी चतुरता सा चातुरी चातुरी।’

यही चतुरता वास्तव में चतुरता है जो दोनों लोकों को सिद्ध करनेवाली होती है। जिससे लोक भी सुधरे और परलोक भी सुधरे, वही तो चतुरता है। परिश्रम दोनों के लिए जरूरी होता है। जिस प्रकार व्यापारी लगातार परिश्रम करने से सांसारिक सफलता को पाता है, साधक की भी वही दशा होती है। परमार्थ का मार्ग गुलाब का फूल नहीं है। वह भी बड़ा ही कंटकाकीर्ण मार्ग है। उस पर संभल-संभलकर कदम रखना पड़ता है। प्रयत्न पद-पद पर करना पड़ता है।

जब पूर्णत्व की आकांक्षा का हर्षावेग मन को स्पर्श करता है, तब उसे तुरंत ही सुधार डालता है और अपवित्रता को दूर हटाने लगता है, परंतु इस स्थिति को बनाए रखने के लिए सतत तथा सुदृढ़ प्रयत्न चाहिए। मन में एक अच्छी भावना का जन्म हुआ, परंतु वह देर तक नहीं टिकती। वह संकुचित और क्षणिक होती है। भावना के हटते ही चित्त फिर उसी खंदक में जा गिरता है। अपवित्रताएँ पुराने अभ्यास से उसे चारों ओर से घेर

लेती हैं। इसीलिए अध्यात्म पथ के पथिक को अपने प्रयत्न को निरंतर नूतन बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

शुद्ध जीवन का प्रेमी सदा अपने मन को पूर्णत्व की आकांक्षा के उत्साहदायी प्रकाश से नया बनाता रहता है। वह प्रातःकाल उठता है

और प्रबल विचारों तथा सतत प्रयत्न से अपने मन को दृढ़ करता है। वह जानता है कि मन का स्वभाव ऐसा है कि वह एक क्षण भी विचार में लगे हुए नहीं रह सकता और यदि वह उच्च विचार तथा शुद्ध आकांक्षाओं से वश में रखे जाते हुए सत्य-मार्ग में नहीं चलाया जाएगा तो अवश्यमेव तुच्छ विचार तथा भोग-इच्छाओं का दास बनकर बुरी राह में फँस जाएगा।

भोगेच्छा के समान उच्च आकांक्षा भी दैनिक अभ्यास से पाली जाती है और पुष्ट की जाती है। दैविक पथ-प्रदर्शक के समान इसे खोजकर मन में प्रवेश कराया जा सकता है या उपेक्षा करके मन में घुसने नहीं दिया जा सकता है। प्रतिदिन शांत स्थानों में (मुख्यतया खुले मैदान में) कुछ समय के लिए जाकर पवित्र हर्षावेग की लहरों को उठाने के लिए मानसिक शक्तियों का आह्वान करने से अपने मन को महान आत्मिक विजय तथा दैविक महिमा के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है।

कारण कि ऐसे ही हर्षावेग से ज्ञान उत्पन्न होता है। शांति का प्रारंभ इसी से होता है। मन शुद्ध वस्तुओं का ध्यान कर सके, इसके पहले इसे उनकी श्रेणी में पहुँचना चाहिए। उच्च आकांक्षा वह साधन है जिसके द्वारा इसकी शुद्धि हो सकती है। इसकी सहायता से मन बहुत ही ऊँचा उठता है और दिव्य लोक तक पहुँचकर ईश्वरीय वस्तुओं का अनुभव करने लगता है। मन इसी के द्वारा विवेक पाता है और सच्चे ज्ञान के दैविक प्रकाश से सत्य-पथ पर चलना सीख लेता है। आशय यह है कि सदाचार के लिए पिपासित रहना, शुद्ध जीवन के लिए बुभुक्षित रहना, पूर्णत्व की आकांक्षा के द्वारा हर्ष तथा उत्साह पाना यही ज्ञान की प्राप्ति के लिए सच्चा मार्ग है। दिव्य मार्ग का यही आरंभ है।

निष्कर्ष यह है कि मनुष्य को सदा सोचते रहना चाहिए

कि 'कोऽहं का च मे शक्तिः' अर्थात् मैं कौन हूँ? मेरा स्वरूप क्या है तथा मेरी शक्ति कितनी है? ऐसा जागरूक व्यक्ति ही आगे बढ़ने का अधिकारी होता है और आगे बढ़कर वह अपने लक्ष्य को पा लेता है। जो विषकृमि के समान विषयों में ही आनन्द मनाया करता है, वह कभी आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए मनुष्य को अपनी वर्तमान दशा में दोषों को देखकर दिव्य जीवन, दिव्य आनन्द और शाश्वत सुख के लिए निरंतर प्रयत्न करना चाहिए। पूर्णत्व की आकांक्षा इसी उत्कर्ष की सूचक एक महनीय भावना है। 'महान भावयन् महान भवति' अर्थात् बड़े की भावना करने से मनुष्य महान बनता है। फलतः यह भावना लक्ष्य पर पहुँचानेवाली आरंभ की सीढ़ी है। ■

न्यायाधीश का पद

किसी न्यायालय के दो वकीलों में एक बार वैर हो गया। संयोग से एक वकील को कुछ दिनों में न्यायाधीश का पद मिल गया और उन्हीं की अदालत में दूसरे वकील को अपराधी बनकर आना पड़ा। जीत-हार का निर्णय उन्हीं न्यायाधीश के ऊपर निर्भर था। सभी लोगों की धारणा थी कि न्यायाधीश महाशय इस मामले में पुराना वैर अवश्य निकालेंगे। इतना अच्छा अवसर वे हाथ से कैसे जाने देंगे?

फैसले का दिन आया। सभी फैसला सुनने के लिये उत्सुक थे। न्यायाधीश ने गंभीर स्वर में फैसला सुनाया। फैसला सुनकर सभी आश्चर्यचकित हो उठे क्योंकि फैसला वैरी वकील के पक्ष में था।

न्यायाधीश ने ऐसा क्यों किया - सभी के मन में प्रश्न था। यह बात अपराधी वकील की समझ में भी नहीं आ रही थी। पुराने वैमनस्य का बदला लेने का इतना अच्छा मौका न्यायाधीश ने क्यों खो दिया?

अदालत उठने पर न्यायाधीश जब घर पहुँचे, तब उनके एक मित्र ने उनसे पूछा - 'बदला लेने का सुन्दर मौका आपने क्यों गवाँ दिया? यही तो अवसर था जब उनको किए का फल मिलता।

न्यायाधीश ने उत्तर दिया - 'मैं न्याय का निर्णय करने के लिये न्यायासन पर बैठा था, अपनी दुश्मनी निकालने के लिए नहीं।'

महासभा संवाद

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा तेरापंथ धर्मसंघ एवं समाज की सेवा और मानवता के कल्याण हेतु विभिन्न सेवामूलक एवं संगठनात्मक गतिविधियों का संचालन करती है। वह विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक उन्नयन हेतु भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों का संचालन भी करती है। प्रस्तुत है जून, 2015 के महीने के दौरान महासभा के समाचारों की संक्षिप्त रिपोर्ट।

तेरापंथ के इतिहास में एक नया अध्याय महासभा के सघन प्रयासों का परिणाम आरंभ हुआ 'अणुव्रत एक्सप्रेस'

जय मित्रु जय तुलसी जय महाशयम

आचार्य श्री तुलसी आचार्य श्री महाशयम

भारत सरकार द्वारा आचार्य श्री तुलसी के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति

बीकानेर-चेन्नई एक्सप्रेस ट्रेन का नामकरण "अणुव्रत एक्सप्रेस"

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के सघन प्रयासों की निष्पत्ति

रेल मंत्रालय, भारत सरकार एवं समस्त सहयोगीजन के प्रति हार्दिक आभार एवं साधुवाद

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

3, पार्लियामेंट रोड इन्डिया, कोयंबटूर - 430004

युगप्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के अमर अवदान अणुव्रत अभियान को चिरस्थायी बनाने एवं उसकी गूँज जन-जन तक पहुंचाने हेतु जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा एवं आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति द्वारा उनके जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 'अणुव्रत एक्सप्रेस' के नाम से किसी ट्रेन के नामकरण के लिए किए गए सघन प्रयासों के फलस्वरूप भारत सरकार के रेल मंत्रालय ने दिनांक 15 जून, 2015 को बीकानेर-चेन्नई एक्सप्रेस का नामकरण 'अणुव्रत एक्सप्रेस' किया है। इसके फलस्वरूप तेरापंथ के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया है और संपूर्ण तेरापंथ समाज के लिए अत्यंत गौरव का हेतु बना है।

वस्तुतः महासभा द्वारा इसके लिए वर्ष 2012 में ही प्रयास प्रारम्भ किया गया था।

इस नामकरण हेतु किए गए प्रयासों का इतिहास बहुत ही रोचक और अनुशंसनीय है।

सर्वप्रथम महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू के नेतृत्व में तत्कालीन प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ द्वारा आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के शासकीय संयोजक



३६५

ACHARYA TULSI JANANI SHIKHARI SAMAROH 2013 - 2014

Date : 01-09-2012



३६५

ACHARYA TULSI JANANI SHIKHARI SAMAROH 2013 - 2014

Date : 02-05-2013

Shri Mukul Roy
Hon.ble Minister of Railway
Govt. of India, Railway Ministry
New Delhi

Shri Pawan Bansal
Hon.ble Minister of Railway
Govt. of India, Railway Ministry
New Delhi

Sub: "Acharya Tulsi Centenary Commemoration – Naming / Re-naming a Train

Sub: "Acharya Tulsi Centenary Commemoration – Naming / Re-naming a Train

Hon'ble Sr,
Acharya Tulsi was the renowned Jain Guru and distinguished Religious Leader, became a monk at the age of eleven in the year 1925 and "Acharya" of the Terapanth sect in the year 1936. He initiated more than 776 monks/nuns. He has been an accomplished poet and author of over 100 books on various subjects. He started Anuvrata Movement in the year 1948, under the aegis of Anuvrat Movement various campaigns were undertaken for creating people's awareness and respect for moral values and them to assimilate these values in their life. Jain Vistva Bharti Institute (Deemed University) established in the year 1989 under his visionary and spiritual leadership in the state of R. Radhaterishman in his book "Living with Purpose" included him in the world's 14 great persons.

Hon'ble Sr,
Acharya Tulsi was the renowned Jain Guru and distinguished Religious Leader, became a monk at the age of eleven in the year 1925 and "Acharya" of the Terapanth sect in the year 1936. He initiated more than 776 monks/nuns. He has been an accomplished poet and author of over 100 books on various subjects. He started Anuvrata Movement in the year 1948, under the aegis of Anuvrat Movement various campaigns were undertaken for creating people's awareness and respect for moral values and them to assimilate these values in their life. Jain Vistva Bharti Institute (Deemed University) established in the year 1989 under his visionary and spiritual leadership in the state of R. Radhaterishman in his book "Living with Purpose" included him in the world's 14 great persons.



३६५

ACHARYA TULSI JANANI SHIKHARI SAMAROH 2013 - 2014



३६५

ACHARYA TULSI JANANI SHIKHARI SAMAROH 2013 - 2014

Shri C P Joshi
Hon'ble Minister of Railways
Government of India
New Delhi

Smt. Sonia Gandhi
President - Indian National Congress
24, Akbar Road
New Delhi- 110 011

Date : 03-06-2013

Sub: Acharya Tulsi Centenary Commemoration – Naming

Sub: Acharya Tulsi Centenary Commemoration – Naming / Re-naming a Train

Hon'ble Sr,
Acharya Tulsi (October 20, 1914 – June 23, 1997) the Jain guru and hailed from a devout family of Jain traders in Ladhur, Rajasthan. He was an Acharya of the Terapanth sect in 1936. He initiated more than 776 monks/nuns. He has been an accomplished poet and author of over 100 books on various subjects. He started his Anuvrata movement in 1948, under the aegis of Anuvrat Movement various campaigns were undertaken for creating people's awareness and respect for moral values and them to assimilate these values in their life.
Woman empowerment was one of the key campaigns undertaken by Acharya Tulsi. He has been a proponent of Jainism not just for the Jains but for the entire humanity. Acharya Tulsi's passage of 84 years and over 100,000 miles on foot came to an end on June 23, 1997.
Dr. Radhaterishman in his "Living with Purpose" included him in the world's 14 great persons. He was President V.V. Giri in 1971.
It would be futile unless the national character was developed. On March 2, 1949 he launched the national movement to spread this idea (also known as 'Jeeva Jeeva'). Conceived in five principles (Truth, Non-violence, Non-attachment, Non-stealing and Celibacy), the Movement was inspired for their personal lives. By experiencing self-transformation, citizens could move towards a

Date : 03-06-2013



३६५

ACHARYA TULSI JANANI SHIKHARI SAMAROH 2013 - 2014

Shri Manmohan Malhotra
Hon'ble Minister of Railways
Government of India
New Delhi

Date : 05-08-2013

Sub: Acharya Tulsi Centenary Commemoration – Naming / Re-naming a Train

Hon'ble Sr,
Acharya Tulsi (October 20, 1914 – June 23, 1997) the Jain guru and founder of the Anuvrata Movement hailed from a devout family of Jain traders in Ladhur, Rajasthan. He was an Acharya of the Terapanth sect in 1936. He initiated more than 776 monks/nuns. He has been an accomplished poet and author of over 100 books on various subjects. He started his Anuvrata movement in 1948, under the aegis of Anuvrat Movement various campaigns were undertaken for creating people's awareness and respect for moral values and them to assimilate these values in their life.
Woman empowerment was one of the key campaigns undertaken by Acharya Tulsi. He has been a proponent of Jainism not just for the Jains but for the entire humanity. Acharya Tulsi's passage of 84 years and over 100,000 miles on foot came to an end on June 23, 1997.
Dr. Radhaterishman in his "Living with Purpose" included him in the world's 14 great persons. He was President V.V. Giri in 1971.
It would be futile unless the national character was developed. On March 2, 1949 he launched the national movement to spread this idea (also known as 'Jeeva Jeeva'). Conceived in five principles (Truth, Non-violence, Non-attachment, Non-stealing and Celibacy), the Movement was inspired for their personal lives. By experiencing self-transformation, citizens could move towards a

founder of the Anuvrata Movement Acharya Tulsi became a monk in 1925 and an Acharya of the Terapanth sect in the year 1936. He initiated more than 776 monks/nuns. He has been an accomplished poet and author of over 100 books on various subjects. He started Anuvrata Movement in the year 1948, under the aegis of Anuvrat Movement various campaigns were undertaken for creating people's awareness and respect for moral values and them to assimilate these values in their life. Jain Vistva Bharti Institute (Deemed University) established in the year 1989 under his visionary and spiritual leadership in the state of R. Radhaterishman in his book "Living with Purpose" included him in the world's 14 great persons. He was President V.V. Giri in 1971.
It would be futile unless the national character was developed. On March 2, 1949 he launched the national movement to spread this idea (also known as 'Jeeva Jeeva'). Conceived in five principles (Truth, Non-violence, Non-attachment, Non-stealing and Celibacy), the Movement was inspired for their personal lives. By experiencing self-transformation, citizens could move towards a

acharya. He has been a proponent of Jainism not just for the Jains but for the entire humanity. Acharya Tulsi's passage of 84 years and over 100,000 miles on foot came to an end on June 23, 1997.

in the world's 14 great persons. He was President V.V. Giri in 1971.

It would be futile unless the national character was developed. On March 2, 1949 he launched the national movement to spread this idea (also known as 'Jeeva Jeeva'). Conceived in five principles (Truth, Non-violence, Non-attachment, Non-stealing and Celibacy), the Movement was inspired for their personal lives. By experiencing self-transformation, citizens could move towards a

JAIN SAMAROH SAMITI
M, 10130000000@gmail.com • MOB - 01 854804007 854804000

ACHARYA TULSI JANANI SITA

ANUVRAT BHAVAN, 210, DEENDRALAL UPADHYAY MARG, NEW DELHI 110 002 E-MAIL

ACHARYA TULSI JANANI SHIKHARI SAMAROH SAMITI

ANUVRAT BHAVAN, 210, DEENDRALAL UPADHYAY MARG, NEW DELHI 110 002 E-MAIL 10130000000@gmail.com • MOB - 01 854804007 854804000



Shri D. V. Badamanna Gowda
The Hon'ble Railway Minister
Govt. of India
Railway Ministry
New Delhi

July 23, 2014

Sub: "Acharya Tulsi Centenary Year Celebration-2013-14" - Request to Launch a New Train titled as "ANUVRAT EXPRESS".

Hon'ble Sir,

At the outset we extend our heartfelt congratulations and best wishes on getting elected as Member of the Parliament and subsequently receiving great confidence by appointing you as RAILWAY MINISTER by the Hon'ble Prime Minister of India. We appreciate your visionary leadership and look forward to achieve greater heights under your leadership.

Acharya Tulsi was the renowned Jain Guru and distinguished Religious Leader, became a monk at the age of eleven in the year 1925 and "Acharya" of the Theravada sect in the year 1936. He initiated more than 776 monks/nuns. He has been an accomplished poet and author of over 100 books on various subjects. He started Anuvrat Movement in the year 1946, under the aegis of Anuvrat Movement various nation-wide campaigns were undertaken for creating people's awareness and respect for social values and to inspire them to assimilate these values in their life. Jain Vastva Shiksha Institute (Deemed University) was established in the year 1988 under his visionary and spiritual leadership in the state of Rajasthan. Dr. Ruchabhawan in his book: "Living with Purpose" included him in the world's 14 great persons. He was given the title "Yuga-Prasthan" in a function presided over by President V.V. Giri in the year 1971.

We are celebrating year 2013-14 as Centenary Year and under the pious presence of our 11 Acharya the "Acharya Mahashraman" along with hundreds of monks/nuns several events are being organized in Delhi and we humbly request you to launch a new train titled as "ANUVRAT EXPRESS" to mark a true recognition to the charismatic legendary personality "Jain Acharya Tulsi" who contributed significantly for the nation development and to publicize his principles of "ANUVRAT and ANEVASIA" more effectively for the benefit of larger humanity so as to create comprehensive awareness to inspire common people for the optimum results.

We are enclosing herewith a Book Called "PIONEER SAINT OF THE AGE-ACHARYA TULSI" for your kind perusal covering the life of unparalleled Legendary Guru who contributed extensively and relentlessly for several decades for betterment of the humanity and nation development, millions have been enriched by inculcating his principles in the respective life.

Please consider our request and take appropriate steps to launch new train titled as "ANUVRAT EXPRESS" in memory of Jain Patriarch "Acharya Tulsi" who contributed remarkably significant to the society/nation and we believe that launching of "ANUVRAT EXPRESS" train shall add substantial values to the society at large and ultimately the nation will gain enormously.

Thanking you,

Kamal Dugar
Chief Convener

Acharya Tulsi Birth Centenary Celebration Committee

Enc: Book-"PIONEER SAINT OF THE AGE-ACHARYA TULSI"

ACHARYA TULSI JANAM SHATABDI SAMAROH SAMITHI

ANUVRAT BHAVAN, 210 DEENDRAYA UPADHYAY MARG, NEW DELHI-110002. E-MAIL: to:ajsm@acharya.org.in • MOB: +91 8864995071 • 8864834808

की हैसियत से दिनांक 01 सितंबर, 2012 को तत्कालीन रेल मंत्री श्री मुकुल राय को पत्र लिखकर एवं उनसे व्यक्तिगत स्तर पर मुलाकात करके आचार्य तुलसी द्वारा चलाए गए अणुव्रत अभियान को चिरस्मरणीय बनाने हेतु अणुव्रत के नाम से किसी रेल के नामकरण का अनुरोध किया गया। श्री मुकुल राय द्वारा रेल मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिए जाने के बाद श्री कमल कुमार दुगड़ ने 02 फरवरी, 2013 को नव नियुक्त रेल मंत्री श्री पवन बंसल को पत्र लिखकर पुनः इस हेतु अनुरोध किया। श्री पवन बंसल के रेल मंत्री न रहने पर श्री दुगड़ ने 03 जून, 2013 को नए रेल मंत्री श्री सी पी जोशी को पुनः पत्र लिखा और उनसे तत्संबंधी कार्रवाई करने का अनुरोध किया।

रेल के नामकरण के कार्य में विशेष प्रगति नहीं देखते हुए श्री दुगड़ ने अपने इस अभियान को तेज करते हुए 03 जून, 2013 को ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी को भी पत्र लिखकर आचार्य तुलसी के विराट व्यक्तित्व, उनके जनकल्याणकारी अवदानों का उल्लेख करते हुए

जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उनके महत्वपूर्ण अभियान अणुव्रत के नाम से किसी रेल के नामकरण हेतु आवश्यक पहल करने और रेल मंत्रालय द्वारा शीघ्र कदम उठाए जाने में उसने अपने प्रभाव का उपयोग करने हेतु अनुरोध किया।

उसी तारीख को श्रीमती सोनिया गांधी को एक और पत्र लिखकर श्री दुगड़ ने उनसे अनुरोध किया कि इसके पूर्व उन्होंने श्री मुकुल राय, श्री सी पी जोशी, श्री पवन बंसल, श्री अधीर रंजन चौधुरी, श्री मपन्ना मल्लिकार्जुन खड़गे एवं अन्य संबंधित अधिकारियों को पत्र लिखा है और इस संबंध में आवश्यक कार्रवाई करने का अनुरोध किया है। अतः आपकी पहल से इस दिशा में शीघ्र कोई ठोस कदम उठाए जाने की अपेक्षा है।

श्री कमल कुमार दुगड़ के इस पत्र के उत्तर में श्रीमती सोनिया गांधी ने अपने पत्र सं. जेड-11011/104/2013-एनआरसी-8441 दिनांक 14 जून, 2013 के द्वारा श्री दुगड़ को सूचित किया कि मुझे आपका पत्र मिला है और मैं इसे संबंधित प्राधिकारी को

SONIA GANDHI
CHAIRPERSON
NATIONAL ADVISORY COUNCIL



2, MOTILAL NEHRU PLACE
NEW DELHI-110001
PHONE: 011-23062600
23062582
FAX: 011-23062599

No. Z.11011/104/2013-NRC-8441

14th June 2013

Dear Shri Kamal Kumar Dugar,

I have received your letter of 3rd June 2013 regarding naming/re-naming a Train on the occasion of Acharya Tulsi Centenary Commemoration.

It is being forwarded to the concerned authority.

With good wishes.

Yours sincerely,

Shri Kamal Kumar Dugar
Shastriya Sanjyok
Acharya Tulsi Janam Shatabdi Samaroh Samithi
Anuvrat Bhawan, 210 Deendraya Upadhyay Marg
New Delhi-110002

दीर्घ सोनिया
2002 to 1991 8102
DHIRAJ SRIVASTAVA
Private Secretary to Chairperson



सरकारी कार्यालय
राज्य सचिव
GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL ADVISORY COUNCIL
NEW DELHI

No.Z.11011/104/2013-NAC 19.5.15

19 June, 2013

Dear

Please find enclosed herewith copy of the correspondence dated 14th June, 2013, between Smt. Sonia Gandhi, Chairperson, National Advisory Council and Shri Kamal Kumar Dugar, Acharya Tulsi Janam Shatabdi Samaroh Samiti, regarding naming/re-naming a Train on the occasion of Acharya Tulsi Centenary Commemoration.

I have been desired to request you to kindly have the matter looked into appropriately.

With regards,

Yours sincerely

Sd/-
(Dhiraj Srivastava)

Encl. As above.

Shri Rajender Kumar Kataria
Private Secretary to the
Minister of Railways
Rail Bhawan, New Delhi

Copy to: Shri Kamal Kumar Dugar, Shaskiya Sanyojak, Acharya Tulsi
Janam Shatabdi Samaroh Samiti, Anusvat Bhawan, 210
Daendayal Upadhyay Marg, New Delhi-110002.

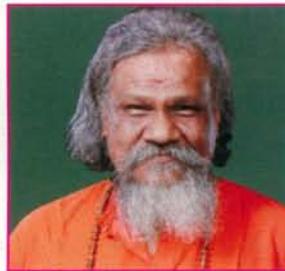
(Dhiraj Srivastava)

वर्ष 2014 के प्रारंभ में आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह के मुख्य संयोजक और जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष पद का दायित्व ग्रहण करने के पश्चात श्री कमल कुमार दुगड़ में इस दिशा में नए सिरे कार्य प्रारंभ किया और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु तत्कालीन सरकार, रेल मंत्री एवं रेल मंत्रालय के वरिष्ठ जनों से संपर्क जारी रखा गया। उन्होंने 17 जून, 2014 और 23 जुलाई, 2014 को तत्कालीन रेल मंत्री श्री डी वी सदानन्द गौडा को पत्र लिखकर राजस्थान के जोधपुर, लाडनू, बीकानेर इत्यादि नगरों एवं कस्बों को जोड़ने वाले रेलमार्ग में किसी भी एक रेल का नामकरण 'अणुव्रत एक्सप्रेस' करने हेतु सार्थक प्रयास करने का अनुरोध किया।

इसी बीच भारत में नई सरकार के गठन हो जाने के फलस्वरूप श्री कमल कुमार दुगड़ ने इस दिशा में फिर से कार्यवाही प्रारंभ की।

25 जुलाई 2014 को मुनि कुमारश्रमणजी एवं मुनि जयंतकुमारजी की उपस्थिति में लोकसभा में शून्यकाल के दौरान बीकानेर के सांसद श्री अर्जुनराम मेघवाल तथा चूरू के सांसद श्री राहुल कस्वां ने आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की चर्चा करते हुए उनके जन्मशताब्दी वर्ष में सरकार के समक्ष विभिन्न मांगें

प्रस्तुत कीं। दोनों नेताओं का क्रमशः भुवनेश्वर के सांसद श्री प्रसन्नकुमार पाटसानी तथा नागौर के सांसद श्री सी आर चौधरी ने समर्थन किया। उनके द्वारा प्रस्तुत विचार और अनुरोध लोकसभा की



कार्यवाही में अंकित हो गए। आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी की यह एक विशेष उपलब्धि है।

नागौर, चूरू, बीकानेर आदि क्षेत्रों के सांसदों ने भी आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व-कर्तृत्व एवं उनके जन्म शताब्दी वर्ष की ओर लोकसभाध्यक्ष एवं सांसदों का ध्यान आकर्षित किया।

अग्रेषित कर रही हैं। इसके साथ ही श्रीमती सोनिया गांधी के निजी सचिव श्री धीरज श्रीवास्तव ने रेल मंत्री के निजी सचिव श्री राजेंद्र कुमार कटारिया को अपने पत्र सं. जेड. 11011/104/2013-एनएसी/8513 दिनांक 20 जून, 2013 के द्वारा श्रीमती सोनिया गांधी और श्री कमल कुमार दुगड़ के बीच हुए पत्राचार का हवाला देते हुए उनसे अनुरोध किया इस विषय में उचित कदम उठाने की कृपा करें और उसकी प्रति श्री कमल कुमार दुगड़ को भी प्रेषित की।

श्रीमती सोनिया गांधी के पत्रों की प्रतियों के साथ श्री कमल कुमार दुगड़ ने तृणमूल कांग्रेस के सांसद श्री सोमेन मित्र को साथ लेकर तत्कालीन रेल मंत्री श्री मापन्ना मल्लिकार्जुन खड्गे से लोकसभा भवन में उनके कार्यालय में भेंट की और इस कार्य में तत्परता दिखाने हेतु अनुरोध किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि बहुत जल्द ही इस संबंध में कार्यवाही की जाएगी।

इस तरह निरंतर प्रयास चलता और इस बीच रेल मंत्रालय के नेतृत्व में भी लगातार परिवर्तन होता रहा परंतु श्री दुगड़ ने अपने प्रयास में निरंतर गतिशीलता बनाए रखी।

आचार्य श्री तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में श्री अर्जुन सिंह मेघवाल द्वारा संसद में दिया गया वक्तव्य एवं अणुव्रत एक्सप्रेस के संबंध में जारी प्रेस नोट



ARJUN RAM MEGHWAL, I.A.S. (Retd.)
MEMBER OF PARLIAMENT (LOK SABHA)
BIKANER, RAJASTHAN
 • CHIEF WHIP BJP (Lok Sabha)
 • CHAIRMAN, HOUSE COMMITTEE, LOK SABHA
MEMBER
 • Standing Committee on Railways
 • Business Advisory Committee
 • Ethics Committee
 • Indian Parliamentary Group
 • Consultative Committee for the Ministry of External Affairs
 • National Khadi and Village Industries Board
 • Governing Council of SSA



अर्जुन राम मेघवाल, आई.एस. (रिटाईर)
संसद सदस्य (लोक सभा)
बीकानेर, राजस्थान
 • मुख्य वरिष्ठ बीजेपी (लोक सभा)
 • अध्यक्ष, आंध्र सचिवालय
सदस्य
 • रेल संबंधी स्थायी समिति
 • बिजनेस आडवरी समिति
 • अंध्र सचिवालय
 • भारतीय संसदीय समूह
 • विदेश विभाग के सलाहकार समिति
 • राष्ट्रीय खादी और ग्रामीण उद्योग बोर्ड
 • शांति निधि संचालन समिति के सदस्य

प्रेस नोट

“बीकानेर-वैर्नाई एक्सप्रेस ट्रेन का नाम “अणुव्रत एक्सप्रेस” हुआ

नई दिल्ली/ दिनांक 24.8.2015

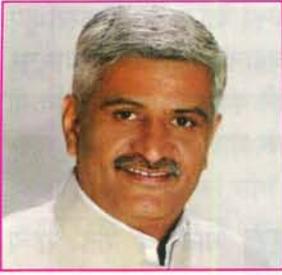
बीकानेर सांसद अर्जुन राम मेघवाल के अध्यक्ष प्रयत्न के बाद बीकानेर-वैर्नाई एक्सप्रेस, ट्रेन नं. 22631/32 का नाम परिवर्तित कर “अणुव्रत एक्सप्रेस” कर दिया गया है। वर्तमान में आचार्य तुलसी का जन्मशताब्दी वर्ष चल रहा है। तैरापथ समाज एवं अणुव्रत के संस्थापक आचार्य तुलसी के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में ही इस ट्रेन का नाम परिवर्तित किया गया है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के छोटे-छोटे ब्रतों के माध्यम से पूरी दुनिया में चरित्र एवं संस्कार निर्माण की शिक्षा दी थी। बीकानेर सांसद अर्जुन राम मेघवाल ने 31 अगस्त 2014 को तत्कालीन रेल मंत्री सदानन्द गौड़ा से भेंट कर इस ट्रेन का नाम अणुव्रत एक्सप्रेस करने का निवेदन किया था जिसके प्रत्युत्तर में रेल मंत्री का पत्र भी प्राप्त हुआ था। इसके पश्चात् लोकसभा में शून्यकाल के दौरान भी इस मुद्दे को बीकानेर सांसद ने उठाया था। 7 मई 2015 को जैन समाज के मुख्य लोगों के साथ रेल मंत्री सुरेश प्रभु के साथ उनके संसद भवन स्थित वैम्बर में मुलाकात की और इस ट्रेन के नाम परिवर्तन हेतु पत्र सौंपा। मंत्री जी ने सम्बन्धित अधिकारियों को बुलाकर बीकानेर-वैर्नाई एक्सप्रेस ट्रेन का नाम अणुव्रत एक्सप्रेस करने के निर्देश दिये। इसके बाद पुनः रेलमंत्रालय में मंत्रीजी से मिलकर सम्बन्धित कार्य की जानकारी प्राप्त की। रेल मंत्री ने शीघ्र ही बीकानेर-वैर्नाई एक्सप्रेस ट्रेन का नाम अणुव्रत एक्सप्रेस करने की बात कही। अब रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु का पत्र प्राप्त हो गया है जिसमें उन्होंने लिखा है कि बीकानेर-वैर्नाई एक्सप्रेस ट्रेन का नाम परिवर्तित कर “अणुव्रत एक्सप्रेस” कर दिया गया है। यह ट्रेन सप्ताह में एक बार बीकानेर से चलकर वैर्नाई पहुँचती है तथा पुनः वैर्नाई से चलकर बीकानेर पहुँचती है। इस ट्रेन का नाम “अणुव्रत एक्सप्रेस” होने से लोगों में आचार्य तुलसी द्वारा प्रतिपादित अणुव्रत के सिद्धान्तों का संदेश शीघ्रता से पहुँचता तथा उनके जन्मशताब्दी वर्ष में राखी श्रद्धाजलि भी होगी।


 अर्जुन राम मेघवाल
 निजी सचिव

Office Address: 141, Parliament House, New Delhi-110 001, Phone: 011-23034719, Telefax: 011-23019598
 Delhi Resl.: 20, Windsor Place, New Delhi-110 001, Phone: 011-23714778, Telefax: 011-23714779
 Permanent Resl.: "Sansad Sewa Kendra", C-66, K.K. Colony, Bikaner (Rajasthan)

श्री अर्जुन मेघवाल ने संसद में शून्यकाल में आचार्य तुलसी द्वारा भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाने तथा सार्वजनिक जीवन में नैतिकता के मानदंड विकसित करने में किए गए महत्वपूर्ण योगदान का उल्लेख किया और कहा कि “आचार्य तुलसी ने 26 अप्रैल, 1950 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से राष्ट्रपति भवन में मुलाकात कर उन्हें अणुव्रत के बारे में जानकारी दी थी। इसके बाद 19 दिसम्बर, 1974 को संसद भवन में आचार्य

तुलसी का सांसदों के समक्ष उद्बोधन भी हुआ था। जीवन में चरित्र निर्माण एवं नैतिकता के विकास के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की स्थापना की थी। आचार्य तुलसी ने विधायिका में नैतिकता के विकास के लिए अपने स्तर पर अणुव्रत संसदीय मंच की भी स्थापना की थी, जो आज भी कार्यरत है।” इसके बाद चूरू के सांसद श्री राहुल कस्वां ने भी शून्यकाल में आचार्य तुलसी द्वारा चलाए गए नैतिकता और भाईचारे के मिशन का उल्लेख किया और कहा कि “भारत की एक लाख किलोमीटर की पदयात्रा कर उन्होंने लाखों व्यक्तियों को नशामुक्त बनाने और पूरे देश में नैतिकता को अपनाने का एक अभियान चलाया, जो पूरे भारतवर्ष में अणुव्रत आन्दोलन के नाम से विख्यात है। माननीय सांसद श्री सी आर चौधरी ने भी उनके विचारों का समर्थन किया।”



श्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, सांसद, जोधपुर ने दिनांक 4 अगस्त, 2014 को लोकसभा में आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उनकी

जन्म शताब्दी के संदर्भ में सरकार के समक्ष अपनी मांगों प्रस्तुत कीं। उन्होंने कहा कि हमारा देश अध्यात्म प्रधान देश है। इस देश में अनेक संतों, विचारकों, मनीषियों, दार्शनिकों ने जो विचार और दर्शन प्रतिपादित किए हैं, उनसे हमारी संस्कृति एक मिली-जुली संस्कृति, एक गंगा-जमुनी संस्कृति के रूप में आगे बढ़ी है। यहाँ आर्यभट्ट से लेकर विश्वामित्र तक, तुलसी से लेकर मीरा, रहीम, रैदास, कबीर आदि अनेक दार्शनिक हुए हैं। अगर मैं पुराने समय की चर्चा न करूँ तो महात्मा गांधी से लेकर गुरु गोलवलकर तक अनेक ऐसे दार्शनिक हुए हैं, जिनके दर्शन का प्रभाव इस देश की संस्कृति पर दिखाई देता है। अनेक युगसापेक्ष, कालसापेक्ष और कालनिरपेक्ष दर्शन और विचार हमारी संस्कृति को प्रभावित करते हैं। वर्तमान वर्ष एक ऐसे महामनीषी का जन्म शताब्दी वर्ष है, जिसने अपनी विशिष्ट प्रतिभा, अपनी कालसापेक्ष दृष्टि, अपनी सृजनात्मक चेतना, अपनी पारदर्शी मनीषा से इस पूरे देश को एक दर्शन दिया था। जो दर्शन और सिद्धांत साधु-संन्यासियों के लिए बनाए गए थे, उन दर्शनों और सिद्धांतों को उस विलक्षण संत ने आम आदमी के लिए अणुव्रत के रूप में प्रतिस्थापित किया।

आचार्य तुलसी ऐसे मनीषी थे, जिनसे इस देश में जितनी भी राजनैतिक विचारधाराएँ हैं और उनका नेतृत्व करने वाले अग्रणी पुरुष हैं, उन सबको न केवल मार्गदर्शन मिला है, बल्कि उन्नत विचार भी मिला।

उन्होंने सभापति महोदय के माध्यम से सदन का ध्यान आकर्षित करते हुए सरकार से आग्रह किया कि उस महान विचारक को उसके विचार और दर्शन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए इस वर्ष को एक विशेष वर्ष के रूप में घोषित करे। साथ ही उनकी जन्म शताब्दी वर्ष में

एक डाक टिकट जल्द से जल्द जारी करे तथा एक कल्याणकारी योजना देश भर में उनके नाम से प्रारंभ करे। 6 अगस्त, 2014 को मध्यप्रदेश के सांसद श्री सत्यनारायण जटिया ने राज्यसभा में इस विषय को उठाया। श्री सत्यनारायण जटिया ने देश की सांस्कृतिक-आध्यात्मिक संपदा, श्रमण परंपरा, सम्यक दर्शन-ज्ञान-चारित्र-तप संयम की साधना, परम धर्म अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य के महाव्रतों के अनुशीलन और भगवान महावीर की देशनाओं की परंपरा में युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के अवदानों का उल्लेख किया।

इन सांसदों के विचारों से देश की संसद में आचार्य श्री तुलसी के प्रति श्रद्धा की एक नई लहर पैदा हुई और उनके अणुव्रत अभियान को चिरस्थायी करने हेतु किसी ट्रेन के नामकरण हेतु महासभा द्वारा की जा रही पहल को बल मिला।

तदुपरांत दिनांक 30 जुलाई, 2014 को श्री कमल कुमार दुगाड़ के नेतृत्व में महासभा के प्रतिनिधि मंडल ने



Sri Manoj Sinha
Hon'ble Minister of State for Railways
Govt. of India
New Delhi

03.09.2014
02.12.2014

Sub: "Acharya Tulsi Centenary Year Celebration-2013-14" - Request to Launch a New Train titled as "ANUVRAT EXPRESS".

Hon'ble Sir,

Acharya Tulsi was the renowned Jain Guru and distinguished Religious Leader, became a monk at the age of eleven in the year 1925 and "Acharya" of the Terapanth sect in the year 1936. He initiated more than 776 monks/nuns. He has been an accomplished poet and author of over 100 books on various subjects. He started Anuvrat Movement in the year 1948. Under the aegis of Anuvrat Movement various nation-wide campaigns were undertaken for creating people's awareness and respect for moral values and to inspire them to assimilate these values in their life. Jain Vastva Bharti Institute (Deemed University) was established in the year 1989 under his visionary and spiritual leadership in the state of Rajasthan. Dr. Radhakrishnan in his book "Living with Purpose" included him in the world's 14 great persons. He was given the title "Yuga-Pradhan" in a function presided over by President V.V. Giri in the year 1971.

We are celebrating year 2013-14 as Centenary Year and under the pious presence of our 11-Acharya the "Acharya Mahashtraman" along with hundreds of monks/nuns several events are being organized in Delhi and we humbly request you to launch a new train titled as "ANUVRAT EXPRESS" to mark a true recognition to the charismatic legendary personality "Jain Acharya Tulsi" who contributed significantly for the nation development and to publicize his principles of "ANUVRAT and AHINMSA" more effectively for the benefit of larger humanity, so as to create comprehensive awareness to inspire common people for the optimum results.

Please consider our request and take appropriate steps to launch new train titled as "ANUVRAT EXPRESS" in memory of Jain Patriarch "Acharya Tulsi" who contributed remarkably significant to the socialization and we believe that launching of "ANUVRAT EXPRESS" train shall add substantial values to the society at large and ultimately the nation will gain enormously.

Thanking you,


Kamal Dugar
Chief Convener

ACHARYA TULSI JANAM SATABDI SAMAROH SAMITI

ANUVRAT BHARATI, 218, DEENARAJ, GPO OFFICE MARKET, NEW DELHI 110 002. E-MAIL: anuvrat@anuvrat.org.in • WEB: - 11.83486207.83486208

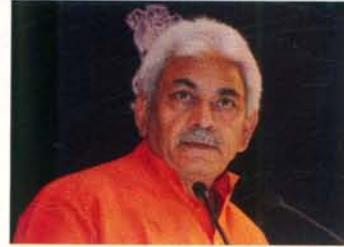
आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में केन्द्र सरकार के अनेक मंत्रियों तथा लोकसभा एवं राज्यसभा के विभिन्न सांसदों से संपर्क किया। इस प्रतिनिधि मंडल में श्री कमल कुमार दुगड़ के साथ-साथ महासभा के न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़, महामंत्री श्री विनोद बैद एवं कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ शामिल थे। उन्होंने लोकसभा की अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन, शहरी विकास मंत्री श्री वेंकैया नायडु, कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह, सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर, गृह राज्यमंत्री श्री किरेन रिजिजु, विदेश राज्यमंत्री जनरल वी. के. सिंह से भेंट की।

प्रतिनिधि मंडल ने माननीय सांसदों को राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी के महान व्यक्तित्व तथा कर्तृत्व से परिचय कराते हुए उनके महान अवदानों तथा उनके द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन की जानकारी दी। इसके साथ ही पिछले लगभग तीन वर्षों में समय-समय पर माननीय सांसदगण श्री सुदीप वंद्योपाध्याय, श्री अनुराग ठाकुर, श्री शाहनवाज हुसैन, श्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, श्री सत्यनारायण जेटिया, श्री सुखेंदु शेखर राय, श्री प्रसन्न कुमार पटसानी, श्री सी आर चौधुरी, श्री विवेक गुप्ता, श्री अर्जुन राम मेघवाल, श्री राहुल कस्वा आदि से संपर्क किया और लोकसभा में जाकर अणुव्रत एक्सप्रेस के नामकरण एवं अन्य सामाजिक कार्यों के लिए विशेष प्रयास किया।

तत्पश्चात अगस्त 2014 में महासभा के वर्तमान अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवं शासकीय संयोजक श्री तुलसी कुमार दुगड़ केन्द्रीय रेल राज्यमंत्री श्री मनोज सिन्हा से रेल भवन में मिले और उन्हें आचार्य श्री तुलसी और उनके विभिन्न अवदानों के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा उनके महान अवदान अणुव्रत के नाम से किसी ट्रेन के नामकरण के संबंध में विस्तार से बातचीत की और पिछले दो वर्षों से हो रहे प्रयासों तथा पत्राचार की प्रतियाँ भी उन्हें सौंपीं। इसके साथ ही आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के तृतीय चरण में भाग लेने हेतु आमंत्रित किया। श्री दुगड़ के अनुरोध को स्वीकार करते हुए माननीय रेल राज्यमंत्री दिनांक 5 सितंबर, 2014 को आयोजित तृतीय चरण के कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

इस अवसर पर महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने

रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा का स्वागत करते हुए आचार्य तुलसी के महान अवदान अणुव्रत के नाम पर 'अणुव्रत एक्सप्रेस ट्रेन' चलाने का पुनः अनुरोध किया ताकि देश के लोग अणुव्रत के बारे में जानें और जन-जन में चेतना जागृत हो।



माननीय रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा ने आचार्य श्री तुलसी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा कि मानव एवं समाज के उन्नयन हेतु

आचार्य तुलसी ने जो कार्य किया है वह स्तुत्य है। उन्होंने भगवान महावीर के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाया एवं राष्ट्रीय एकता के लिए योगदान दिया। ऐसे संतों के प्रयास से सामाजिक व राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है, प्राणवायु मिलती है। ऐसे महामानव के महान अवदान अणुव्रत के नाम पर एक किसी रेल का नामकरण करना गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि अणुव्रत एक्सप्रेस के लिए हमें मौखिक प्रस्ताव मिला है और मैंने सुना है कि आप पिछले दो-तीन वर्षों से इसके लिए प्रयास कर रहे हैं। इस संबंध में पत्र मिलते ही मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि इस पर त्वरित कार्रवाई की जाएगी।

महासभा के अध्यक्ष महोदय ने युगप्रवर्तक आचार्य तुलसी द्वारा अणुव्रत के माध्यम से देश में चलाए गए नैतिक अभियान को चिरस्थायी करने हेतु उनके अणुव्रत के नाम से किसी रेल का नामकरण करने का अनुरोध का पत्र तत्काल उन्हें निवेदित किया।



भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के अध्यक्ष एवं सांसद श्री अनुराग ठाकुर भी तृतीय चरण के इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे और उन्होंने

भी आचार्य तुलसी के महान अवदान अणुव्रत की चर्चा करते हुए कहा कि उस अभियान के नाम से किसी रेल के

नामकरण बहुत ही उचित मांग है और उन्होंने माननीय रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा जी से आग्रह किया कि अणुव्रत के नाम पर रेल चलाने की इनकी मांग बिलकुल उचित है और इसे जरूर मंजूर किया जाना चाहिए। किसी महान संत के नाम पर या उनकी सोच पर किसी ट्रेन का नाम हो इससे ज्यादा खुशी की बात नहीं हो सकती।

रेलराज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा ने दिल्ली में परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में पूरे समाज के सम्मुख यह घोषणा की कि यथाशीघ्र इस हेतु कार्रवाई की जाएगी एवं 'अणुव्रत एक्सप्रेस' के नाम से किसी ट्रेन का नामकरण किया जाएगा।

महासभा को सात्विक गौरव है कि आचार्य श्री तुलसी एवं उनके अभियान "अणुव्रत आन्दोलन" के द्वारा

व्यापक स्तर पर नैतिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार एवं जन-जन में नैतिकता के विकास हेतु अमूल्य योगदान के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए सरकार द्वारा इस आशय की विधिवत घोषणा कर बीकानेर चेन्नई ट्रेन का नामकरण 'अणुव्रत एक्सप्रेस' किया गया है। इस आशय से सम्बन्धित सरकारी आदेश दिनांक 15 जून 2015 को रेल मंत्रालय द्वारा जारी किया गया है।

माननीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने अपने बीकानेर के सांसद श्री अर्जुन राम मेघवाल को संबोधित दिनांक 22 जून, 2015 द्वारा बीकानेर-चेन्नई एक्सप्रेस को 'अणुव्रत एक्सप्रेस' नाम दिए जाने की सूचना दी एवं उनके प्रयासों की सराहना की।

रेल राज्यमंत्री श्री मनोज सिन्हा ने स्वयं रेल भवन में महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवं न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़ को संबोधित पत्र दिनांक 23 जून, 2015 द्वारा बीकानेर-चेन्नई एक्सप्रेस, ट्रेन सं. 22631/32 को 'अणुव्रत एक्सप्रेस' के नाम से पुनर्नामित किए जाने की सहर्ष सूचना दी है एवं इससे संबंधित पत्र भेंट किया है।



23 जून को रेल मंत्रालय दिल्ली में रेल राज्यमंत्री श्री मनोज सिन्हा इस आशय का निर्णय पत्र महासभा अध्यक्ष श्री कमल दुगड़ एवं न्यासी श्री तुलसी दुगड़ को प्रदान करते हुए।



भारत सरकार
राज्य मंत्रालय
मंत्रालय
एन.टी. रोड, नई दिल्ली-110 002
Ministry of Railways
Government of India
New Delhi - 110 002

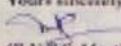
R.V.P.S. Murthy
Dated: 23rd June, 2015

Dear Shri Kamal Dugar Ji,

Kindly refer to your letter dated 1st Sept., 2014 and dated 04th February, 2015 addressed to Hon'ble Minister of State for Railways, Shri Manoj Sinha regarding naming of any train as 'ANUVRAT EXPRESS' to commemorate Acharya Tulsi Centenary Year 2013-14 and Anuvrat Movement that was initiated by him nation-wide in 1986 for creating people's awareness and respect for moral values and for inculcating them in their personal lives.

Hon'ble Minister is happy to advise you that while paying a rich tribute to Acharya Tulsi and Anuvrat Movement, effective from 15th June, 2015, Train No.22631/32 Bikaner-Chennai Express has been renamed as 'ANUVRAT EXPRESS' and a copy of the order is attached. Hon'ble Minister has also praised the tireless efforts made by you, Convener of Samity and Shri Tulsi Dugar in this context.

With regards,

Yours sincerely,

(R.V.P.S. Murthy)

Shri Kamal Dugar
Chief Convener
Acharya Tulsi Janam Shatabdi Samaroh Samity
Anuvrat Bhavan
210, Deen Dayal Upadhyay Marg
New Delhi - 110 002

(क.प. नं. ३०.०१. ३५१)
(३१ जून २०१५, सुबह)
श्री. कमल दुगड़ के सम्बन्ध में
आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह
समिति के अध्यक्ष श्री. क.प. नं. ३०.०१. ३५१
नई दिल्ली, नई दिल्ली

सुरेश प्रभु
SURESH PRABHU



रेल मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली
MINISTER OF RAILWAYS
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI



No. 2013/Chg-II/36/9

2 JUN 2015

Dear Shri Meghwal Ji,

Kindly refer to your letter dated 31.07.2014, addressed to my predecessor, regarding naming of 16125/12126 Jodhpur-Chennai Express as "Anuvrat Express" and another letter dated 08.05.2015, for naming 22631/22632 Bikaner-Chennai Express "Anuvrat Express". You had also been persistently meeting me and writing to me on this matter.

I am happy to inform you that your efforts have fructified and Train No. 22631/22632 Bikaner-Chennai Express has been named as "Anuvrat Express".

With regards,

Yours sincerely,

(Suresh Prabhu)

Shri Arjun Ram Meghwal
Hon'ble Member of Parliament
20, Windsor Place,
New Delhi - 110 001

239, जैन भवन, जैन भवन, नई दिल्ली-110001
238, Ministry of Railways, Rail Bhawan, New Delhi-110001
Tel.: 011-23381213, Fax: 011-23387333
sureshprabhu@b.railnet.gov.in, sureshprabhu@gov.in

संपूर्ण तेरापंथ समाज और महासभा इस महान उपलब्धि के लिए परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री महाश्रमणजी के प्रति अत्यंत कृतज्ञ है कि आपश्री के मंगल आध्यात्मिक आशीर्वाद का संबल लेकर सन 2012 से महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू के नेतृत्व में तत्कालीन शासकीय संयोजक श्री कमल कुमार दुगड़ एवं महासभा के न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़ ने अपने व्यापक संपर्कों का उपयोग कर समाज को नई ऊँचाई देने में स्वयं को समर्पित किया और पिछले लगभग ढाई वर्षों से अनवरत इस कार्य में लगे रहे। दुगड़ बंधुओं ने सिर्फ इसी महत उद्देश्य को लेकर लगभग 20-22 बार दिल्ली की यात्रा की और 4-5 बार लोकसभा में गए ताकि तेरापंथ के महाप्रतापी युगपुरुष आचार्य श्री तुलसी के अवदानों का व्यापक प्रचार-प्रसार हो। यद्यपि इसमें विलंब हुआ, समय भी लगा, लेकिन ये दोनों बंधु थके नहीं और अपने प्रयासों में कमी नहीं आने दी। उन्हें माननीय सांसदों एवं जनप्रतिनिधियों का सहयोग मिला और ये दोनों भाई अंततः आचार्यप्रवर के असीम आशीर्वाद से अपने लक्ष्य में सफल हुए और इनके अनवरत प्रयासों के फलस्वरूप तेरापंथ धर्मसंघ एवं

भारत सरकार द्वारा आचार्य तुलसी के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति
बीकानेर-चेन्नई एक्सप्रेस ट्रेन का नामकरण 'अणुव्रत एक्सप्रेस'



जन प्रतिनिधि के रूप में ट्रेन के नामकरण के सघन प्रयासों में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के प्रस्ताव की सफल क्रियान्वति में समय-समय पर आप सभी सांसदों का विशेष सहयोग रहा।

सम्पूर्ण जैन समाज आप सभी के प्रति तथा माननीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु, रेल राज्यमंत्री श्री मनोज सिन्हा, रेल मंत्रालय एवं सभी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोगियों के प्रति साधुवाद तथा कृतज्ञता ज्ञापित करता है।



सूचना एवं प्रसारण विभाग - जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा



समाज को अणुव्रत एक्सप्रेस के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर एक गौरवमयी मुकाम प्राप्त हुआ।

महासभा भारत सरकार, माननीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु, रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा, श्री सुदीप वंद्योपाध्याय, श्री अनुराग ठाकुर, श्री शाहनवाज हुसैन, श्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, श्री सत्यनारायण जेटिया, श्री सुखेंद्रु शेखर राय, श्री प्रसन्न कुमार पटसानी, श्री सी आर चौधुरी, श्री विवेक गुप्ता, श्री अर्जुन राम मेघवाल, श्री राहुल कस्वा एवं रेल मंत्रालय के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती है। इन सभी जनप्रतिनिधियों ने समय-समय पर इस महान कार्य को आगे बढ़ाने एवं संपादित करने में उल्लेखनीय सहयोग दिया है।

महासभा पुनः आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवं न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़ के साथ-साथ सभी सहयोगी जनों के प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित करती है और इस कार्य में सहयोगी सभी महानुभावों को साधुवाद देती है। ■

महासभा के तत्वावधान में शासनसेवी स्व. मूलचन्द जी बोथरा की स्मृति सभा का आयोजन

तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य शासनसेवी स्व. मूलचन्द बोथरा के संथारापूर्वक देहावसान के अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा की पहल पर स्मृति सभा का आयोजन आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वी श्री त्रिशला कुमारीजी के सान्निध्य में कोलकाता के बांगुड़ संसद भवन में किया गया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी ने कहा कि हमने बोथराजी को अपने पंचवर्षीय दीर्घकालीन बीकानेर प्रवास में निकटता से देखा। उनके रोमरोम में श्रद्धा भक्ति की भावना थी। वे एक अनन्य गुरुभक्त और साधु-साध्वीवृन्द के दास थे। उनके पूरे परिवार में गहरे धार्मिक संस्कार हैं। अपने संस्कारों और नियमों के पालन के प्रति उनकी जागरूकता अनुकरणीय है।

श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य श्री बनेचन्द मालू ने कहा कि बोथराजी उदारमना समाजसेवी होने के साथ-साथ सहज-सरल व्यक्तित्व के धनी थे। वे अत्यन्त समर्पित एवं पूज्यप्रवरों के विशेष कृपापात्र श्रावक थे। उनका जीवन जन-जन के लिए प्रेरणादायक है।

जय तुलसी फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र कुमार दुगड़ ने श्री मूलचन्द जी बोथरा के जीवन की विशिष्टताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि जयतुलसी फाउंडेशन की स्थापना काल से ही जिन विशिष्ट परिवारों का प्रमुख योगदान रहा है, श्री बोथराजी का परिवार उनमें से एक है।



जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने कहा कि विभिन्न संघीय प्रवृत्तियों एवं पूज्य प्रवर के अवदानों को आगे बढ़ाने में मूलचन्दजी बोथरा एवं उनके परिवार का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। महासभा के द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्वों को संघ क्षितिज पर प्रस्तुत कर उनके अवदानों को प्रचारित-प्रसारित किया जाए ताकि जन-जन को प्रेरणा प्राप्त हो।

बोथरा परिवार के निकट सम्बन्धी श्री अशोक हीरावत ने मूलचन्दजी बोथरा के जीवन से जुड़े संस्मरणों की प्रस्तुति देते हुए बताया कि वे गुरुईगित की आराधना को कितना महत्व देते थे।

स्मृति सभा के संयोजकीय वक्तव्य में महासभा के उपाध्यक्ष श्री तरुण सेठिया ने महासभा अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवं महासभा परिवार की ओर से बोथरा जी को श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजनों के माध्यम से हम अपने सामाजिक दायित्वों के निर्वहन का प्रयास कर रहे हैं, जिससे समाज को ऐसे गौरवशाली व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त हो सके।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पूर्वांचल कलकत्ता के अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र श्यामसुखा ने भी स्व. बोथराजी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

शुभकरणजी दस्सानी की जन्मशताब्दी पर महासभा द्वारा विनम्र श्रद्धांजलि

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता आचार्य तुलसी के युग के एक दूरदर्शी एवं चिंतनशील कार्यकर्ता शुभकरणजी दस्सानी को उनकी जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ की अध्यक्षता में महासभा परिवार द्वारा श्रद्धांजलि दी गई और आचार्य तुलसी के युग में तेरापंथ के बहुमुखी विकास में उनके उल्लेखनीय योगदान को रेखांकित किया। तेरापंथ के इतिहास में अनेक विरल विशेषताओं से युक्त श्रावकों का इतिवृत्त संगृहीत है, जिन्होंने अपने संघ की श्रीवृद्धि एवं समाज-हित के लिए स्वयं को सर्वात्मना समर्पित किया है। उन्होंने गुरु आज्ञा एवं मर्यादा का पालन करते हुए धर्म, गुरु और गण की अहर्निश सेवा की है, अहंकार एवं ममकार का विसर्जन कर पूरी निष्ठा



एवं जागरूकता के साथ अपने धर्मसंघ को उत्कर्ष के शिखर पर पहुँचाने में योगदान किया है और निज का गौण रख प्रत्येक कार्य में संघीयवृत्ति को प्राथमिकता दी है। तेरापंथ धर्मसंघ को विश्व स्तर पर गौरवान्वित करने में योगभूत बने ऐसे अनेक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने धर्मसंघ के लिए स्वयं को सर्वात्मना समर्पित किया है, उन्हीं में एक हैं स्वनामधन्य श्री शुभकरण दस्सानी।

महासभा द्वारा ऐसे विरल विशेषताओं से युक्त एवं समर्पित श्रावकों एवं कार्यकर्ताओं का समय-समय पर सम्मान एवं उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित कर समाज की नई पीढ़ी को प्रेरित करने का प्रयास किया जाता है और समाज एवं संघ की सेवा में उन्हें तन-मन-धन से सहयोग करने के लिए प्रेरित करने और आगे आने हेतु उनका आह्वान किया जाता है। इससे समाज में एक स्वस्थ परंपरा की नींव पड़ती है और युवा पीढ़ी में बढ़चढ़ कर कार्य करने का उत्साह बढ़ता है।

संघ एवं समाज के लिए अन्यतम कार्य करने वाले आचार्य तुलसी के परम विश्वस्त श्रावक श्री शुभकरण दस्सानी को उनकी जन्मशताब्दी के पावन प्रसंग पर महासभा की ओर से श्रद्धाभिनन्दन !

श्री दस्सानी के व्यक्तित्व, कर्तृत्व और संघ एवं समाज की सेवा में किए गए कार्यों का एक संक्षिप्त परिचयात्मक लेख अगले पृष्ठ पर दिया जा रहा है। ■

शुभकरणजी दस्सानी की जन्मशताब्दी पर विशेष

दूरदर्शी एवं चिंतनशील कार्यकर्ता : शुभकरणजी दस्सानी



तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में आचार्य तुलसी का युग अभिनव संभावनाओं से भरा हुआ क्रांतिकारी युग था। उस समय एक अत्यंत प्रखर, प्रतापी और प्रबल नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ एवं समाज दोनों उत्थान और उन्नयन के नए शिखर की ओर अग्रसर होने लगा था। धर्म, अध्यात्म, साधना, शिक्षा, संस्कार, सेवा, संगठन, समन्वय आदि के क्षेत्र में नए-नए आयाम खुलने लगे

थे। धार्मिक कूपमंडूकताओं को दूर करने के साथ-साथ सामाजिक कुरूढ़ियों एवं कुसंस्कारों को दूर करने की दिशा में क्रांतिकारी कदम उठाए जाने लगे थे।

आचार्य तुलसी ने मात्र बाईस वर्ष की आयु में महान तेरापंथ धर्मसंघ की बागडोर संभाली थी और उन्हें अपनी युग-परिवर्तनकारी परियोजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए कुछ ऐसे दूरदर्शी, चिंतनशील सक्रिय कार्यकर्ताओं की आवश्यकता थी, जो लीक से हटकर कार्य करने में योग्य बन सके। आचार्य तुलसी की इस आकांक्षा की पूर्ति करने में जिन अनेक कार्यकर्ताओं ने अपना संपूर्ण समर्पण, समर्थन और सश्रद्ध सहभागिता समर्पित की थी, उनमें शुभकरणजी दस्सानीका नाम अग्रिम पंक्ति में दर्ज है।

शुभकरणजी दस्सानी को आचार्य तुलसीयुग का अत्यंत प्रतिभाशाली, प्रबुद्ध, दूरदर्शी, अदम्य क्रियाशील, अभूतपूर्व स्वप्नद्रष्टा और अनन्य सेवाभावी माना जाता है। उन्होंने आचार्य तुलसी को आध्यात्मिक, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक,





सामाजिक और मानवतावादी कार्यों के क्षेत्र में नई दिशाभूमि और नया परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करने में अभिनव योगदान दिया। संपूर्ण तेरापंथ समाज को एक प्रभामय पथ प्रदान करने और जीवन की एक अभिनव दिशा तथा चिंतन को एक नया आयाम देने हेतु वे सदैव सक्रिय रहते थे। तेरापंथ में तुलसी युग का इतिहास उनके अवदानों से भरा हुआ है।

शुभकरणजी दस्सानी का जन्म 20 जून, 1915 को सरदारशहर, चूरू (राजस्थान) में हुआ था। उनके पिता का नाम मोतीलालजी दस्सानी था। दस्सानीजी अपने नाना हजारीमलजी रामपुरिया के पास रहते थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कलकत्ता में हुई। प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक हर वर्ष प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने वाले दस्सानी जी दसवीं के बाद पारिवारिक कारणों से स्कूली शिक्षा जारी नहीं रख सके और यूरोपियन शिक्षकों द्वारा घर पर ही राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र की गहन शिक्षा प्राप्त की। हिंदी, अंग्रेजी, बंगला, राजस्थानी आदि अनेक भाषाओं पर उनका अच्छा अधिकार था।

दस्सानीजी बहुत ही प्रतिभाशाली, बुद्धिमान, सूझबूझ संपन्न एवं कर्तृत्वशील व्यक्ति थे। उनमें किसी भी विषय

को तार्किक ढंग से प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता थी। युवावस्था में ही उनमें सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि विषयों में गहरी रुचि जागृत हो गई थी और इन दिशाओं में लीक से हटकर सोचने और कार्य करने की रुझान पैदा हो गई थी। राष्ट्रियता के प्रति जागरूक होकर उन्होंने देश हित में स्वयं को समर्पित किया और अनेक नेताओं के संपर्क में आए। सामाजिक क्षेत्र में भी कुसंस्कारों को मिटाने की प्रबल भावना उनमें प्रारंभ से ही उत्पन्न हो गई थी। वे धार्मिक क्षेत्र में क्रांतिकारी दृष्टि रखते थे और यही कारण था कि वे तेरापंथ धर्मसंघ में नवोदित भास्कर के रूप में उदित आचार्य तुलसी के संपर्क में आए और धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उनकी आधुनिक सोच को कार्यान्वित करने हेतु स्वयं को समर्पित किया। आचार्य तुलसी के नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ के माध्यम से समाज में नवजागरण लाते और अनेक प्रकार की कुप्रथाओं को दूर करने में वे बड़े सहयोगी सिद्ध हुए।

शुभकरणजी दस्सानी का जीवन विविधताओं से परिपूर्ण था। उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के प्रमुख पहलुओं को विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है।

आचार्य तुलसी के धर्म-संदेशवाहक

आचार्य तुलसी के साथ शुभकरणजी दस्सानी का प्रथम परिचय उस समय हुआ, जब वे अपनी मुनि दीक्षा के पश्चात प्रथम महीने में लाडनूं से सुजानगढ़ पधारे। उस समय शुभकरणजी दस्सानी वहाँ अपने नाना हजारीमलजी रामपुरिया के पास रहते थे। प्रथम दृष्टि में ही मुनि तुलसी को यह प्रतीत हुआ कि शुभकरणजी बहुत प्रतिभाशाली युवक है। शुभकरणजी के मन में भी



मुनि तुलसी के प्रति आकर्षण पैदा हुआ और मुनि तुलसी के आचार्य पद पर पदारोहण के पश्चात के प्रथम बीकानेर चातुर्मास के दौरान आचार्य श्री ने जब उन्हें निकटता से देखा तो पाया कि वह एक कल्पनाशील युवक है एवं अनुभव किया कि साधु-साध्वियों को आधुनिक परिवेश से परिचित कराने में उनका विशेष योगदान हो सकता है। उसी समय से आचार्य तुलसी के साथ उनका गहरा आध्यात्मिक संबंध जुड़ गया।

इसके बाद से जब भी दोनों आपस में मिलते तो परस्पर सामाजिक, राजनैतिक और शैक्षणिक विषयों के साथ-साथ तेरापंथ धर्मसंघ के विकास के बारे में भी विचार-विमर्श करते। आचार्यश्री ने दस्सानीजी के साथ व्यापक स्तर पर संघीय छवि निर्माण एवं युगीन संदर्भों में एवं प्रवचन करने संबंधी महत्वपूर्ण चर्चाएं कीं। नए चिंतन के बीजवपन के साथ उसी प्रवासकाल में तेरापंथ धर्मसंघ में नए युग का प्रवेश हुआ।

विक्रम संवत् 1994 में दस्सानीजी के द्वारा किए गए पत्राचार के आधार पर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के विद्वान प्रोफेसर एफ. डब्ल्यू थॉमस ने आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में उपस्थित होकर जैन धर्म और तेरापंथ संबंधी अनेक जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। प्रो. थामस संस्कृत के विद्वान थे एवं उनके साथ वार्तालाप संस्कृत में हुआ। इसके अलावा अंग्रेजी एवं राजस्थानी भाषा में हुए वार्तालाप में भाषानुवाद का कार्य श्री दस्सानीजी ने कुशलता के साथ किया।

चर्चा वार्ता के उपरांत प्रो. थामस ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए तेरापंथ संगठन की सुव्यवस्था और तेईस वर्षीय युवा आचार्य श्री तुलसी की संचालन क्षमता के प्रति अपने हार्दिक उद्गार व्यक्त किए। प्रो. थॉमस का यह संपर्क आगे चलकर अन्य महत्वपूर्ण संपर्कों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। उसी क्रम में इंग्लैंड प्रवासी एवं बारहव्रतधारी जैन अनुयायी हर्बर्ट वारेन के साथ संपर्क हुआ। दस्सानीजी के माध्यम से उनके साथ व्यापक पत्राचार किया गया, जिसमें जैन दर्शन संबंधी विशद चर्चा हुई, जो नए क्षितिज के उद्घाटन में लाभप्रद सिद्ध हुआ।

आचार्य श्री तुलसी के 31वें जन्मदिवस पर दस्सानीजी ने हिंदी में कुछ निबंध लिखे, जिनमें साहित्यिक भाषा और भावों का प्रवाह था। इसके फलस्वरूप वहाँ उपस्थित साधु-साध्वियों में निबंध पढ़ने की उत्सुकता जगी एवं चारित्रात्माओं में हिन्दी पढ़ने और लिखने की प्रेरणा पैदा हुई। यहीं से तेरापंथ धर्मसंघ में हिंदी सीखने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

आदर्श साहित्य संघ के प्रारंभिक समय में दस्सानीजी ने साहित्य मंत्री के रूप में सेवाएं प्रदान कीं। अणुव्रत अभियान की प्रारंभिक भूमिका की चिंतन गोष्ठियों में चयनित साधुओं के साथ-साथ उपस्थित चंद श्रावकों में दस्सानीजी भी रहते थे। 'जैन सिद्धांत दीपिका' के हिंदी अनुवाद में मुनि नथमलजी (टमकोर) आदि साधुओं के साथ दस्सानीजी की भी भागीदारी थी।

बालदीक्षा विरोधी आंदोलन का सामना करने में सक्रिय एवं अग्रणी भूमिका निर्वहन करने वालों में शुभकरणजी दस्सानी भी थे। तत्कालीन मंत्री मुनिश्री मगनलालजी की प्रेरणा से वे दिल्ली गए और गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल से मिले और स्थिति के निराकरण का मार्ग प्रशस्त किया। उस समय राज्य सरकार दीक्षा के विरोध में थी, परंतु केन्द्र सरकार के पूर्ण सहयोग से वह कार्यक्रम अंततः निर्विघ्न संपन्न हुआ।

एक समय था जब तेरापंथ के आचार्यों का यात्रा क्षेत्र अत्यंत सीमित था। दस्सानीजी ने आचार्य तुलसी को इस सोच में परिवर्तन करने एवं नए क्षेत्रों के स्पर्श करते हुए दिल्ली में पदार्पण हेतु निवेदन किया। उस समय यह एक अप्रत्याशित प्रस्ताव था, किंतु दस्सानीजी ने इसको अत्यंत सूझबूझ के साथ प्रस्तुत किया था। आचार्यप्रवर





की मानसिकता के निर्माण के पश्चात मंत्री मुनिश्री मगनलालजी के साथ चर्चा कर उन्हें भी इस चिंतन के साथ जोड़ा और तेरापंथ धर्मसंघ में एक और नए अध्याय का सूत्रपात हो गया।

दस्सानीजी अणुव्रत आंदोलन के सक्रिय एवं शीर्षस्थ पंक्ति के कार्यकर्ता थे। वे काफी समय तक अणुव्रत इंटरनेशनल के अध्यक्ष रहे और इस संस्था के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अहिंसा एवं शांति के संदेश को प्रसारित किया। उनके नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन हुआ।

राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए कार्य

शुभकरणजी दस्सानी के जीवन की शुरुआत सामाजिक कार्यक्रमों से हुई। उन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय को गौण कर राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं एवं स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान देना जरूरी समझा। स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी जा रही थी, तब उस समय के प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं, स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखा एवं अपना हर संभव सहयोग प्रदान किया। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, जयप्रकाश नारायण आदि शीर्ष नेताओं से उनका व्यक्तिगत सम्पर्क रहा एवं जैन समुदाय की ओर से उच्च स्तर पर राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में दस्सानीजी के माध्यम से उल्लेखनीय सहयोग समय-समय पर प्रदान किया गया।

सन् 1947 में स्वतंत्र भारत की प्रथम संसद का गठन हुआ

तो प्रथम संविधान निर्माण में दस्सानीजी ने अपने चिंतन एवं विचारों का महत्वपूर्ण योगदान दिया। सर गोपाल स्वामी अयंगर, सर अलादी कृष्णा स्वामी, डॉ. अम्बेडकर, सर बी. एन. राव, सर सप्रू, एन. जयकर आदि विशिष्ट संविधान निर्माताओं के साथ मिलकर भारतीय संविधान के निर्माण में अपना यत्किंचित सहयोग प्रदान किया।

पंजाब समझौते में भूमिका

वर्ष 1985 में पंजाब का आतंकवाद और हिंसा का खूनी दौर अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था। पूरे देश को यह समस्या घुन की तरह खाई जा रही थी। सभी चाहते थे कि यह समस्या सुलझ जाए एवं पंजाब में शांति, सौहार्द एवं समन्वय का वातावरण स्थापित हो। अनेक स्तरों पर अनेक व्यक्तित्व इस दृष्टि से प्रयत्नशील थे। ऐसे समय में शुभकरणजी दस्सानी अकाली दल के अध्यक्ष संत श्री हरचंद सिंह लोंगोवाल से पंजाब में जाकर मिले और उन्हें भारत सरकार से समझौता वार्ता करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रयत्न के रूप में वे संत श्री हरचंद सिंह लोंगोवाल एवं श्री सुरजीत सिंह बरनाला को लेकर राजस्थान के एक छोटे-से ग्राम आमेट पहुँचे, जहाँ पूज्य आचार्य श्री तुलसी एवं युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ विराज रहे थे और श्री बरनाला एवं श्री लोंगोवाल दो दिन तक आमेट में रहे, जहाँ दस्सानीजी के प्रयत्नों से आचार्य श्री तुलसी ने लोंगोवाल को पंजाब समझौते के लिए सरकार से बातचीत करने हेतु प्रेरित किया। इसके फलस्वरूप 24 जुलाई, 1985 को दिल्ली में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी एवं संत लोंगोवाल के बीच पंजाब समझौता हुआ। 27 जुलाई, 1985 को



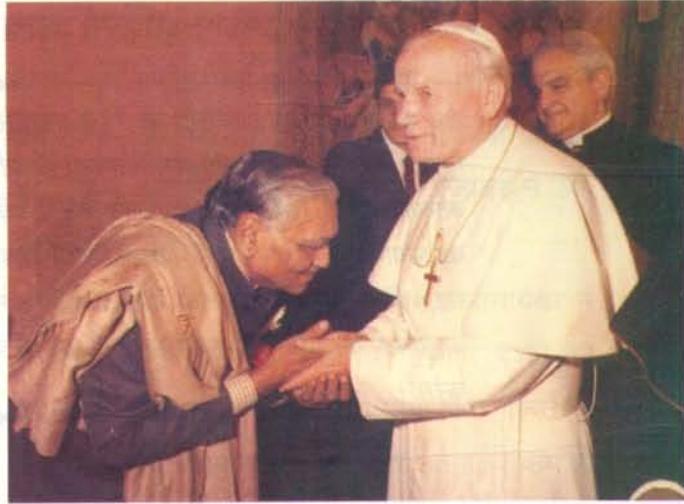
तत्कालीन गृहमंत्री श्री एस. बी. चव्हाण स्वयं आमेट गए और राजीव गांधी और लॉगोवाल के बीच हुए हस्ताक्षरित समझौते में आचार्य श्री तुलसी एवं शुभकरणजी दस्सानी की महत्त्वपूर्ण भूमिका के लिए आभार प्रदर्शित किया।

राष्ट्रीय नेताओं से व्यापक जन-सम्पर्क

दस्सानीजी में एक सफल नेतृत्व के सभी गुण विद्यमान थे। उनका स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू एवं प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद से लेकर 11वीं लोकसभा तक सभी राजनेताओं के साथ नजदीकी संपर्क था। इनमें डॉ. राधाकृष्णन, फखरुद्दीन अली अहमद, डॉ. जाकिर हुसैन, ज्ञानी जैलसिंह, डॉ. शंकरदयाल शर्मा, जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी एवं राजीव गांधी आदि शामिल हैं। समय-समय पर इन संपर्कों के माध्यम से राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं को सुलझाने में दस्सानीजी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। राजस्थान के चहुँमुखी विकास के लिए भी दस्सानीजी ने इन संपर्कों का सदुपयोग किया।

अंतरराष्ट्रीय जगत से दस्सानीजी के संपर्क

शुभकरणजी दस्सानी ने न केवल राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में बल्कि अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में भी भारत के सांस्कृतिक एवं रचनात्मक मूल्यों को मजबूती देने की दृष्टि से समय-समय पर प्रयत्न किए। बल्कि इसके लिए वे विश्व के अनेक देशों की यात्राएं भी कीं। अमरीका के राष्ट्रपति श्री रेगन एवं श्रीमती रेगन के साथ उनका निकट संपर्क था। नोबल पुरस्कार विजेता एवं जर्मनी के चांसलर बिली ब्रांट के साथ दस्सानीजी ने जर्मनी यात्रा के दौरान लंबी वार्ता की। बिली ब्रांट ने दस्सानीजी के शांति एवं अहिंसा के प्रयत्नों की सराहना की एवं भारत के सांस्कृतिक गौरव को बढ़ाने के लिए उनकी तड़प को महसूस किया। पोप जॉन पाल (द्वितीय) द्वारा आयोजित विश्व प्रार्थना सभा में दस्सानीजी को कई वर्षों तक जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए आमंत्रित किया गया। दस्सानीजी ने उनके आमंत्रण पर रोम की यात्रा की।



सामाजिक सुधार में भूमिका

नशामुक्ति, अपराध मुक्ति, नारी उत्थान, सांप्रदायिक सद्भाव, मिलावट विरोध, अस्पृश्यता एवं छुआछूत उन्मूलन जैसे सामाजिक कार्यक्रमों को लेकर दस्सानीजी ने लगभग संपूर्ण देश की लंबी-लंबी यात्राएं कीं।

दस्सानीजी भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत आदि के सिद्धांत से काफी प्रभावित थे और मानवता के कल्याण हेतु उनका प्रचार-प्रसार करने एवं शांति के संदेश को देश एवं दुनिया में फैलाना चाहते थे। इस कार्य में उन्हें आचार्य श्री तुलसी का वरदहस्त मिला और उनके नेतृत्व में महावीर एवं जैन धर्म की अच्छी प्रतिष्ठा पूरे देश में हुई।

दस्सानीजी ने केंद्र सरकार का जैन धर्म के जनकल्याणकारी सिद्धांतों के प्रति ध्यान आकर्षित किया और जैन धर्म के विविध कार्यक्रमों में समर्थन देने हेतु आग्रह किया। इसके कई दूरगामी लाभ हुए।

दस्सानीजी का पूरा जीवन परहित की भावना से प्रेरित था। उन्होंने जो भी किया वह किसी पद, यश तथा सम्मान की आकांक्षा के लिए नहीं था। उनके मन किसी राजनीतिक लाभ की आकांक्षा भी नहीं थी। सार्वजनिक एवं लोक कल्याणकारी जीवन जीते हुए भी दस्सानीजी राजनीति से सर्वथा पृथक रहे और निःस्वार्थ भाव से देश, समाज और धर्म की सेवा में संलग्न रहे। ■

अहिंसा यात्रा अमृत संदेश

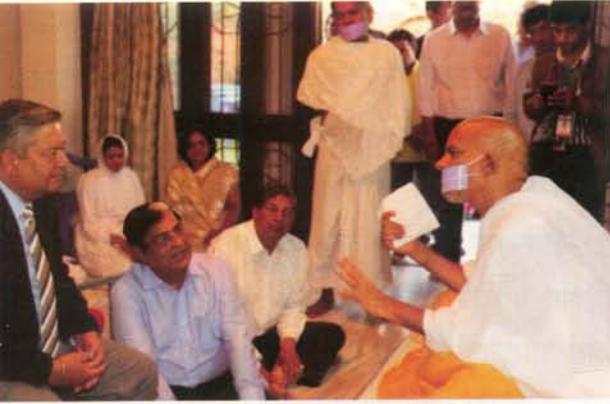
जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अनुशास्ता परम पावन आचार्य श्री महाश्रमण पूरे देश एवं विदेशों में सद्भावना के संप्रसार, नैतिकता की प्रतिष्ठा एवं नशामुक्ति हेतु पदयात्रा कर रहे हैं और इस आध्यात्मिक अहिंसा यात्रा के द्वारा जन-जन में अहिंसा की अलख जगा रहे हैं। पूज्यश्री की अहिंसा यात्रा बहुआयामी एवं बहुदृश्यीय है, जिसका लाभ सामान्य जन से लेकर समाज के शीर्षस्थ लोगों तक को सहज मिल रहा है। प्रस्तुत है मई, 2015 के महीने में की गई अहिंसा यात्रा की उपलब्धियाँ एवं आचार्यश्री के अमृत संदेश का सार, जो पाठकों के समक्ष चिंतन का एक अभिनव आयाम उद्घाटित करेगा।



1 मई, 2015 को आचार्य श्री महाश्रमण काठमांडू में ही विराजित रहे और श्रद्धालुओं को अपनी वरद छाया प्रदान की। प्रातःकालीन कार्यक्रम में अपने मंगल प्रवचन में आचार्यश्री ने मृषावाद के कारणों की चर्चा करते हुए उससे बचने की प्रेरणा प्रदान की।

2 मई 2015 को आचार्यप्रवर ने काठमांडू में अपने मंगल प्रवचन में वित्त और वृत्त - इन दो शब्दों को व्याख्यायित करते हुए वित्तार्जन में प्रामाणिकता तथा वित्त के उपभोग में संयम के द्वारा वृत्त (चारित्र) को संरक्षित रखने की प्रेरणा प्रदान की।

3 मई 2015 को आचार्यप्रवर ने अपने 42वें दीक्षा दिवस के अवसर पर भूकंप की त्रासदी में



कालधर्म को प्राप्त तथा उससे प्रभावित और पीड़ित लोगों के प्रति आध्यात्मिक मंगलभावना का प्रयोग करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर ने इस प्रसंग में फरमाया कि भूकंप के कारण कालधर्म को प्राप्त और दुःखित लोगों के प्रति आध्यात्मिक मंगलभावना के रूप में जप का प्रयोग किया जा रहा है। उनकी आत्मा को चित्तसमाधि प्राप्त हो, वे दुःखमुक्त बनें। आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में ऋजुता को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की।

4 मई 2015 को आचार्यवर ने भूकंप पीड़ितों के लिए आध्यात्मिक मंगलभावना करने का निर्देश दिया। आज नेपाल के पूर्व सेनाध्यक्ष श्री रुक्मांगत कटुवाल ने पूज्यवर के दर्शन किए। नेपाल स्थित भारतीय दूतावास के काउंसलर श्री अरुष जैन, उद्योगपति श्री सतीश मोर, हिमालय टाइम्स के एक्जिक्यूटिव एडवाइजर तथा सीईओ श्री नवीन जैन ने भी आचार्यवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

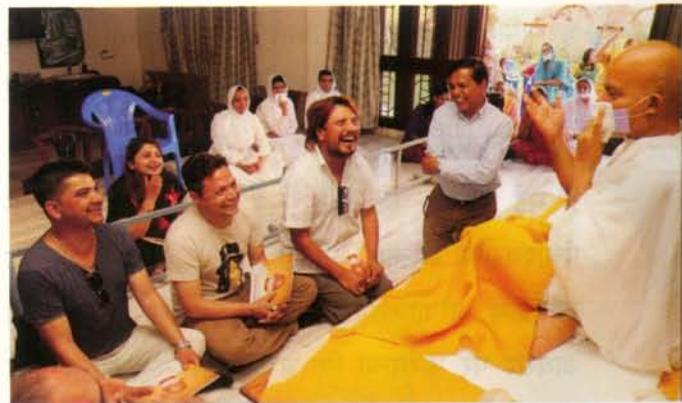
5 मई 2015 को आचार्यवर ने अपने प्रवचन में फरमाया कि आसक्तिरहित प्रवृत्ति काफी अंशों में पाप कर्मों से बचाव करने वाली बन जाती है। आसक्ति से दुःख उत्पन्न होता है, जबकि अनासक्ति शान्ति प्रदात्री है।

आज नेपाल पुलिस के पूर्व महानिदेशक श्री कुबेरसिंह राणा, पूर्व उद्योग मंत्री श्री अनिल झा, सुप्रसिद्ध हास्य अभिनेता श्री दीपकराज गिरि, हास्य अभिनेत्री दीपाश्री निरौला ने आचार्यवर के दर्शन किए। पूज्यवर ने उन्हें मंगल प्रेरणा प्रदान की।

6 मई 2015 को कार्यक्रम के अन्तर्गत आचार्यवर ने फरमाया कि जैन साधना पद्धति में सम्यक दर्शन का बहुत महत्त्व है। इसके लिए राग-द्वेषमुक्त होना जरूरी है। जितना कषाय प्रतनु बनेगा, राग-द्वेष उतना ही कम हो सकेगा। नौ तत्त्वों को भलीभांति समझना तथा देव, गुरु और धर्म के प्रति श्रद्धा रखना सम्यक्त्व है।

आज स्थानीय सभासद (सांसद) श्री गगन थापा, सिने अभिनेत्री सुश्री झरना थापा, अभिनेता श्री प्रकाश सुवेदी, नया पत्रिका के सीनियर रिपोर्टर श्री सुदीप कुमार ढुंगाना ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

7 मई 2015 को प्रातःकालीन कार्यक्रम भूकंप के संदर्भ में आत्मशान्ति की प्रार्थना के रूप में समायोजित हुआ, जिसमें विभिन्न संप्रदायों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। डॉ. चिन्तामणि योगी, अन्तरराष्ट्रीय धार्मिक संस्थान की सुश्री सीमा खान, बौद्ध भिक्षुणी डॉ. अनुजा, वहाँई धर्मगुरु श्री नरेन्द्र पाण्डेय, रिलिजन फॉर पीस की





अध्यक्ष श्रीमती इन्दिरा मानंधर, सिख धर्म के ग्रंथी ज्ञानी गुरुबख्शासिंह, अंतर धार्मिक परिषद के अध्यक्ष श्री दामोदर गौतम, ईसाई धर्म के फादर विल रोबिन ने भूकंप में मृतात्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा को मानव कल्याण के लिए वरदायी बताया।

आज नेपाल की शिक्षामंत्री चित्रलेखा यादव, नेपाल में भारत के राजदूत श्री रणजीत रे, नेपाल विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्री शशि थापा, नेपाल के प्रधानमंत्री की सलाहकार श्रीमती मृदुला कोइराला, भूतपूर्व मंत्री श्री अर्जुनरसिंह केसी, भागवत कथाकार पं. दीनबन्धु पोखरेल ने आचार्यवर के दर्शन किए। आचार्यवर ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की।

8 मई 2015 को आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में फरमाया कि जीवन में पराक्रम का महत्त्व होता है, किन्तु पराक्रम विवेकपूर्ण और सम्यक् होना चाहिए। आदमी को सत्पुरुषार्थ करना चाहिए।

9 मई 2015 को आचार्यवर की मंगल सन्निधि में पंचदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर के समापन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। आचार्यवर ने इस अवसर पर फरमाया कि बचपन में संन्यासी बनकर

आजीवन उज्ज्वल रूप में संयम के परिपालन का अर्थ है अपनी आत्मा को मोक्ष की ओर अग्रसारित कर देना।

10 मई 2015 को आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में फरमाया कि धर्म, अर्थ और काम को त्रिवर्ग कहा गया है। जीवन को रथ मान लिया जाए तो उसका एक पहिया है अर्थ तो दूसरा है काम। उसका सारथि है धर्म। यदि अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश रहे तो जीवन-रथ सम्यक् रूप से आगे बढ़ सकता है।

11 मई 2015 को आचार्यवर नेपाल के राष्ट्रपति भवन (शीतल निवास) परिसर में पधारे। वहाँ राष्ट्रपति से कहा कि हमारी आध्यात्मिक संवेदना नेपाल के साथ है और हम कामना करते हैं कि नेपाल की जनता सुख-शांति को प्राप्त हो। राष्ट्रपति ने कहा कि आचार्यश्री! इस भूकंप से धरती जरूर फट गई, किन्तु दिल जुड़ गए। सभी लोग पार्टी, धर्म, जाति एवं समाज की दूरियों को भूलकर भूकंप पीड़ितों की सहायता में जुट गए।

11 मई 2015 को आचार्यप्रवर ने प्रवचन में फरमाया कि हम अपने मन को पवित्र विचारों से भावित करते रहें। मन की पवित्रता का बहुत महत्त्व होता है, क्योंकि जैसी भावना होती है, वैसे ही परिणाम भी आ जाते हैं।

नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री और माओवादी पार्टी के





अध्यक्ष श्री बाबूराम भट्टराई आज मध्याह्न में आचार्यवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

12 मई 2015 को काठमांडू तेरापंथ महिला मंडल द्वारा रिशतों को मजबूत कैसे बनाएं – विषयक कार्यक्रम का समायोजन हुआ। इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने फरमाया कि गार्हस्थ में रिशतों का बहुत महत्त्व है। मधुर परस्परता, एक-दूसरे को सहयोग करने की भावना रिशतों का मजबूत आधार बन सकती है।

कार्यक्रम में विशेष रूप से नेपाल सरकार की ऊर्जामंत्री श्रीमती राधा ज्वाली उपस्थित थीं।

13 मई 2015 को आचार्यप्रवर ने प्रथम भूकंप के बाद काठमांडू छोड़ने की साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं की प्रार्थना को स्वीकार न करते हुए अपनी आगामी यात्रा को यथावत रखने की घोषणा की।

14 मई 2015 को आचार्यप्रवर ने आत्मा और शरीर के संबंध की चर्चा करते हुए फरमाया कि आत्मा नए-नए शरीर धारण करती रहती है। बार-बार जन्म लेना और मृत्यु को प्राप्त होना दुःख का हेतु है। क्रोध, मान, माया और लोभ - ये चार कषाय पुनर्जन्म के कारण बनते हैं।

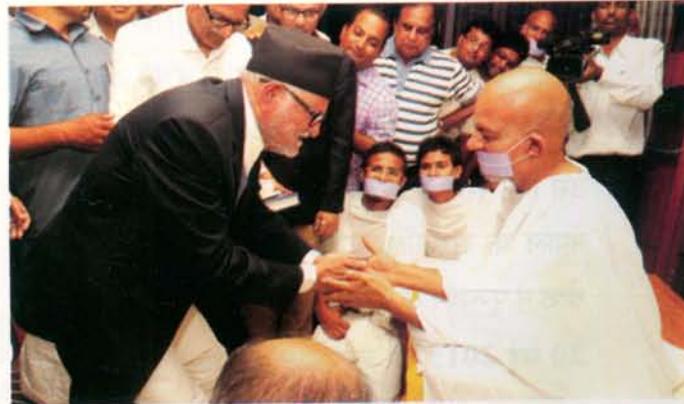
15 मई 2015 को आचार्यप्रवर ने दान के महत्त्व को

उद्घाटित किया और फरमाया कि दान की पृष्ठभूमि में उदारता और सहयोग की भावना होती है। दान के दो प्रकार हैं - लौकिक और लोकोत्तर। लौकिक दान का सांसारिक महत्त्व है। लोक व्यवहार में उसकी काफी उपयोगिता है। संयमी को आहार देना, किसी को तत्त्वज्ञान करवाना, सम्यक् ज्ञान देना, अभयदान देना लोकोत्तर दान है। यह आध्यात्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

आज रात्रि में माओवादी पार्टी के सचेतक श्री गिरिराजमणि पोखरेल तथा पशुपतिनाथ मंदिर के सचिव श्री गोविन्द तण्डर ने आचार्यवर के दर्शन कर पथदर्शन प्राप्त किया।

16 मई 2015 को आचार्यवर ने साधु-साध्वियों और विराटनगर से समागत श्रावकों की उपस्थिति में अपनी आगामी यात्रा को यथावत रखने की घोषणा की।

18 मई 2015 को आचार्यप्रवर ने धार्मिक साधना पद्धति में जप की महत्ता प्रतिपादित की और उसे आत्मशुद्धि एवं भावशुद्धि का सुन्दर उपक्रम बताया। आचार्यवर ने पैसों के अहंकार, आसक्ति और दुरुपयोग से बचने की प्रेरणा प्रदान की। उस दिन नेपाल अख्तियार दुरुपयोग अनुसंधान आयोग के अध्यक्ष श्री





लोकमान्य कार्की, नेपाल के पूर्व उपप्रधानमंत्री तथा नेपाली कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री रामचन्द्र पोडेल, नेपाल के खाद्य आपूर्ति तथा वाणिज्य मंत्री श्री सुनील थापा व नेपाल ट्रेड यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री खिलनाथ दहाल ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन मार्गदर्शन प्राप्त किया। नेपाल के एक प्रमुख समाचार पत्र गोरखा पत्र के प्रधान संपादक श्री सीताराम अग्रहरि ने मध्याह्न में आचार्यवर का भूकंप आदि के संदर्भ में साक्षात्कार लिया।

19 मई 2015 को आचार्यवर प्रवास स्थल से प्रस्थान कर पुलिस मुख्यालय में पधारे, जहाँ अमर प्रहरी स्मारक के समीप समायोजित कार्यक्रम में सभी जातियों, वर्गों, धर्मों एवं संप्रदायों में परस्पर सद्भावना बनाए रखने और कटुता एवं विद्वेष को त्यागने की प्रेरणा दी। आचार्यश्री ने अपने व्यक्तिगत जीवन में ईमानदारी का पालन करने एवं झूठ, चोरी आदि से बचने तथा जीवन को नशामुक्त रखने का पाथेय दिया।

उस दिन रूस के राजदूत डॉ. सरग्यू वी वेलेजिन और नेपाल के संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री सुरेशमान श्रेष्ठ ने पूज्यवर के दर्शन कर पावन पाथेय प्राप्त किया।

20 मई 2015 को काठमांडू के एकमासीय प्रवास को

समाप्त कर अहिंसा यात्रा के अगले पड़ाव हेतु प्रस्थान करने के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने लोगों को धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा दी। आज नेपाल के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री रामकुमारप्रसाद शाह, नेपाल के उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री श्री वामदेव गौतम, नेपाल के शहरी विकास मंत्री श्री नारायण खड्का ने पूज्यवर के दर्शन किए।

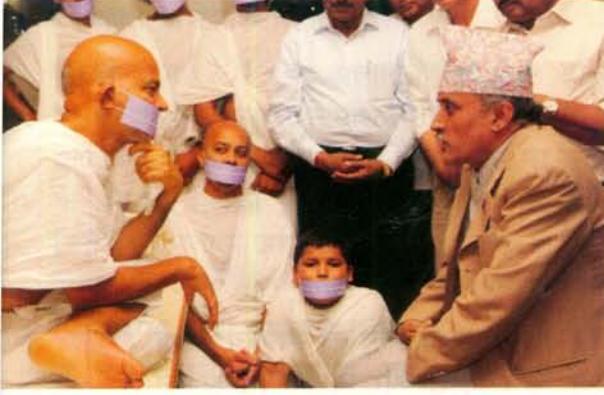
21 मई 2015 को आचार्यवर भक्तपुर जिला में प्रवेश किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत आचार्यवर ने उत्कृष्ट मंगल धर्म के तीन आयामों को विवेचित किया।

22 मई 2015 को आचार्यवर ठीमी से सांगा की ओर प्रस्थित हुए। आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में ज्ञान की महत्ता को विवेचित किया।

23 मई 2015 को परम श्रद्धेय आचार्यवर चोकौट स्थित काठमांडू यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ मेडिकल साइंस में पधारे और यहाँ आयोजित कार्यक्रम में सुखी पारिवारिक जीवन के सूत्रों सहिष्णुता, निःस्वार्थभाव और अनाग्रह वृत्ति की चर्चा की।

24 मई 2015 को आचार्यवर पतलेखेत स्थित श्री हनुमान उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। यहाँ से





11.5 किमी का विहार कर मेथिनकोट स्थित जनक उच्च माध्यामिक विद्यालय में पधारे। आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में समय के सदुपयोग की प्रेरणा प्रदान की।

25 मई 2015 को आचार्यवर मंगलटार के इलाका प्रहरी कार्यालय में पधारे। सहायक पुलिस निरीक्षक श्री भरत लामा ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत आचार्यवर ने अभय की चेतना को परिपुष्ट बनाने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर की प्रेरणा से ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

26 मई 2015 को आचार्यवर मुल्कोट स्थित जापानी क्वाटर्स में पधारे, जहाँ प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत लोगों को आत्मदर्शन की प्रेरणा प्रदान की।

27 मई 2015 को आचार्यवर सितलपाटी स्थित सामुदायिक मेलमिलाप केन्द्र के समीप पधारे। यहाँ आयोजित कार्यक्रम में आचार्यवर ने त्याग की चेतना को विकसित करने की प्रेरणा प्रदान की।

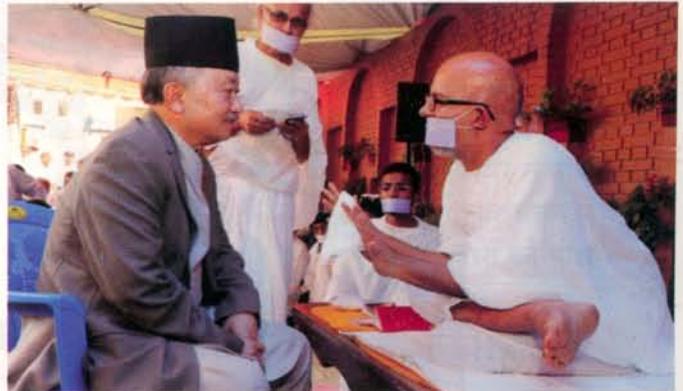
28 मई 2015 को आचार्यवर खनियाखर्क जनता उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे और वहाँ उपस्थित समाज

को पराक्रमसाध्य आत्मकल्याणस्वरूप धर्म को यथासंभव सक्षमता की स्थिति में करने की प्रेरणा प्रदान की।

29 मई 2015 को पूज्यवर ढुंगरे भान्ज्यांग स्थित श्री छत्रबहादुर श्रेष्ठ के निवार पर पधारे। वहाँ आयोजित कार्यक्रम के दौरान आचार्यवर ने जीवन को धर्मयुक्त बनाने की प्रेरणा प्रदान की। नेपाल पुलिस के स्थानीय डीएसपी श्री एस.के. महतो ने अपने साथियों के साथ आचार्यवर के दर्शन कर पावन संबोध प्राप्त किया।

30 मई 2015 को आचार्यवर करकरे पधारे। श्री कमला उच्च माध्यामिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत पूज्यवर ने कर्तव्यनिष्ठा के महत्त्व को विवेचित किया। नेपाल पुलिस के एआईजी श्री गणेश राई आचार्यवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए और उनसे प्रेरणा प्राप्त की।

31 मई 2015 को आचार्यश्री भीमान पधारे। यहाँ समायोजित कार्यक्रम में समुपस्थित समाज को परिष्कार की भावना जागृत करने और अपनी भूलों को सुधारने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यश्री की प्रेरणा से ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। ■



संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

परम श्रद्धेय आचार्यवर श्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में काठमांडू की स्थानीय प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा स्थानीय बालक-बालिकाओं के लिए संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन 5-9 मई, 2015 के दौरान किया गया। इस शिविर में तेरह से अठारह वर्ष तक के बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। इसमें बालकों की संख्या 28 बालिकाओं की संख्या 58 थी। ध्यातव्य है कि आचार्यवर के काठमांडू प्रवास के दौरान केवल बालकों के लिए प्रथम अन्तरराष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर समायोज्य था, किन्तु नेपाल में आए भयंकर भूकंप के बाद उसे निरस्त कर दिया गया और स्थानीय बालक-बालिकाओं के लिए ही शिविर आयोजित किया गया।

प्रातः नौ बजे से अपराह्न चार बजे तक चलने वाले इस शिविर में संभागी बालकों को मुनि कमलकुमारजी, मुनि आलोककुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि आकाशकुमारजी ने प्रशिक्षण दिया।

शिविर में संभागी बालिकाओं को साध्वी सुमतिप्रभाजी, साध्वी लब्धिप्रभाजी, साध्वी कौशलप्रभाजी, साध्वी विशालयशाजी, साध्वी ख्यातियशाजी, साध्वी शशिप्रभाजी, साध्वी आरोग्यश्रीजी, साध्वी संबुद्धयशाजी, साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी, साध्वी प्रांजलप्रभाजी, साध्वी मैत्रीयशाजी, साध्वी प्रणवप्रभाजी एवं समणी



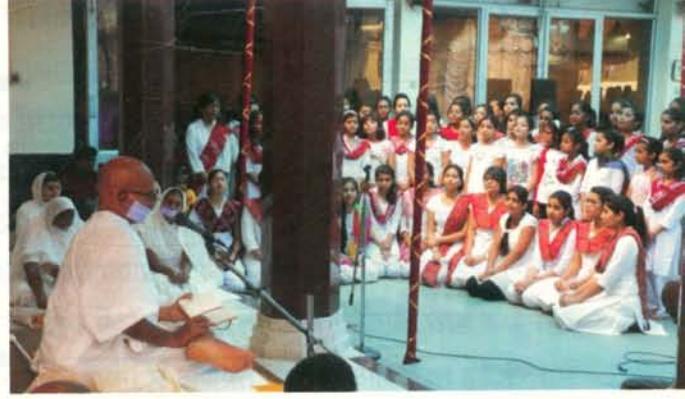
सौम्यप्रज्ञाजी ने प्रशिक्षण दिया।

दिनांक 9 मई 2015 को आचार्यवर की मंगल सन्निधि में पंचदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर के समापन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर शिविर के दौरान बालकों की देखरेख करने वाले मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने अपने विचार प्रकट किए। शिविर में संभागी कन्याओं ने समूहगीत का संगान किया। बालक हर्षित दूगड़, सुश्री जाह्नवी नाहटा एवं सुश्री नंदिनी जैन ने शिविरकालीन अनुभवों को बांटा। काठमांडू कन्यामंडल की बालिकाओं ने पूज्यवर द्वारा रचित गीत का संगान किया। पूज्यवर के संसारपक्षीय अग्रज श्री सुजानमलजी दूगड़ की पुत्रवधू श्रीमती मधु दूगड़ ने गीत के माध्यम से पूज्यवर की अभ्यर्थना की।

प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री लोकमान्य गोलछा, शिविर संयोजक श्री ललित नाहटा ने कार्यक्रम में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने अभिभाषण में कहा कि आज हमारे सामने बड़ी संख्या में किशोर बैठे हैं। संस्कार निर्माण शिविर बच्चों में संस्कार भरने का एक सुन्दर माध्यम है। इन बच्चों ने शिविर में जो सीखा है, उसे याद रखें और उसके अनुरूप अपने जीवन को बनाने का प्रयास करें। मुख्यनियोजिकाजी ने पेन्सिल के रूपक से बच्चों को प्रेरणा दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन से पूर्व शिविरार्थियों से जैन धर्म और तेरापंथ के इतिहास से संबंधित कुछ प्रश्न किए। पुनः अपने मंगल प्रवचन में कहा कि दया जीवन का एक गुण होता है। दयावान व्यक्ति अनेक पापों से बच जाता है। दया के दो रूप बताए गए हैं - लौकिक दया और लोकोत्तर दया। देह संबंधी दया लौकिक और आत्मा संबंधी दया लोकोत्तर होती है। संसार में लौकिक दया का भी महत्त्व है, तभी तो एक जगह विपत्ति आती है और कितने ही देशों के लोग सेवा/सहायता के लिए आ जाते हैं। किसी को समझा कर हिंसा आदि का परित्याग करवाना लोकोत्तर अनुकंपा है। दैहिक या लौकिक अनुकंपा से युक्त सेवा से उपकृत की आत्मा का उत्थान नहीं होता, किन्तु



लोकोत्तर अनुकंपा से उपकृत की आत्मा उत्थान को प्राप्त हो सकती है और उपकारी भी अपनी आत्मा का उत्थान कर सकते हैं।

साधु का नियम है - देख-देखकर चलना। इस नियम की पृष्ठभूमि में दया ही है। गृहस्थ भी यदि चलते समय यह ध्यान दे कि हमारे पैर के नीचे आकर कोई चींटी आदि न मर जाए तो वह भी कुछ अंशों में दया का पालन कर सकता है। इस प्रकार यदि ध्यान दिया जाए तो जीवन की अन्य क्रियाओं में हिंसा से बचा जा सकता है। पूज्यवर ने कहा कि वे बच्चे भाग्यशाली होते हैं, जिनके मन में दीक्षित होने की भावना आ जाती है। हमारे कितने छोटे-छोटे साधु-साध्वियां हैं। उनका कितना भाग्य है कि छोटी अवस्था में ही संन्यास लेने का अवसर प्राप्त हो गया। बड़े-बड़े व्यक्ति जो काम नहीं कर सकते, वह छोटे-छोटे साधुओं ने कर दिया। कोई विशेष भाग्य जाग जाता है कि बालावस्था अथवा किशोरावस्था में दीक्षित होने का अवसर मिल जाता है। शिविर के संभागी बच्चों को दीक्षा के बारे में सोचना चाहिए। जैसे गोचरी की भावना भाते हैं, वैसे ही शिविरार्थियों के माता-पिता मन में भावना करें कि मेरी संतान साधु-साध्वी बने। बच्चे साधु-साध्वी बनें या न बनें, इस प्रकार की भावना भी अपने आप में अच्छी बात होती है। आचार्यवर ने कहा कि बचपन में संन्यासी बनकर आजीवन उज्ज्वल रूप में संयम के परिपालन का अर्थ है अपनी आत्मा को मोक्ष की ओर अग्रसारित कर देना।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। ■

सभा संवाद

तेरापंथी सभाओं में विराजित चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में सभाओं के तत्त्वावधान में विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में समय-समय पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि पूरे देश में संस्कारित समाज का निर्माण और आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का विकास हो सके। इसी क्रम में प्रस्तुत है विभिन्न सभाओं द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, धुबड़ी

दायित्वबोध कार्यशाला का आयोजन

आचार्यश्री महाश्रमणजी के असम प्रवास को ऐतिहासिक, सफल, अद्वितीय, अविस्मरणीय एवं अनुपम बनाने के लिए साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी, ठाणा-6 के सान्निध्य एवं धुबड़ी तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में धुबड़ी में असम प्रांत-स्तरीय स्वागत समारोह एवं दायित्व-बोध कार्यशाला का समायोजन हुआ। इस कार्यशाला में ब्यावर आसाम के बरपेटा, बंगाईगांव, कोकड़ाझाड़, ग्वालपाड़ा, लखीपुर, तेजपुर, सापटग्राम, बिलासीपाड़ा, गौरीपुर, गौहाटी, कालडब्बा, गोलागंज आदि क्षेत्रों के लगभग सात सौ भाई-बहन संभागी बने।

इस अवसर पर साध्वीश्री ने श्रावक-श्राविकाओं में दायित्व-बोध चेतना का संचार करते हुए अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि हमारा दायित्वशील श्रावक समाज धर्मसंघ के प्रति सर्वात्मना समर्पित और अपने संघीय दायित्व के प्रति सर्वथा सचेष्ट तथा जागरूक है। हमें आचार्यश्री के इस बहुप्रतीक्षित प्रवास को अन्यतम बनाने हेतु अपने समय तथा श्रम का सम्यक नियोजन करना है।

साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने दायित्व की प्रेरणा देते हुए कहा कि असम की इस धरा पर दो हजार सोलह में पूज्यश्री की अगवानी में हमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप की गंगा बहानी है। हमने सोचा है कि पूज्यश्री का आसाम प्रवास विघ्न-शामक, तुष्टि, पुष्टि एवं संतुष्टि प्रदायक हो

इसलिए एक वर्ष तक प्रतिदिन तीन आयंबिल होने चाहिए। पचरंगी तप-महायज्ञ में सबको अपनी आहुति देनी है और भी अनेक कार्यक्रम समायोजित करने हैं। हमारी अपेक्षा है कि सभी भाई-बहन सभी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लें। साध्वी कर्णिकाश्रीजी, साध्वी मैत्रीप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

महासभा के प्रभारी श्री दिलीप दुगाड़ एवं गौहाटी सभा के मंत्री श्री निर्मल कोटेचा ने कहा कि हर श्रावक को इस महान अवसर पर अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेना है। गौहाटी ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री रणजीत मालू, धुबड़ी सभाध्यक्ष श्री कमल गोलछा, बंगाईगांव सभाध्यक्ष श्री पुखराज सुराना आदि ने अपने उद्गार व्यक्त किए। तेयुप अध्यक्ष श्री आनन्द बरड़िया ने विचार व्यक्त किए। साध्वी सुधाप्रभाजी ने प्रभावक संचालन किया।

कार्यक्रम का प्रारंभिक संचालन श्री कमल बैद ने किया। आभार ज्ञापन श्री अभयराज बुच्चा ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बंगाईगांव अणुव्रत संगोष्ठी का समायोजन

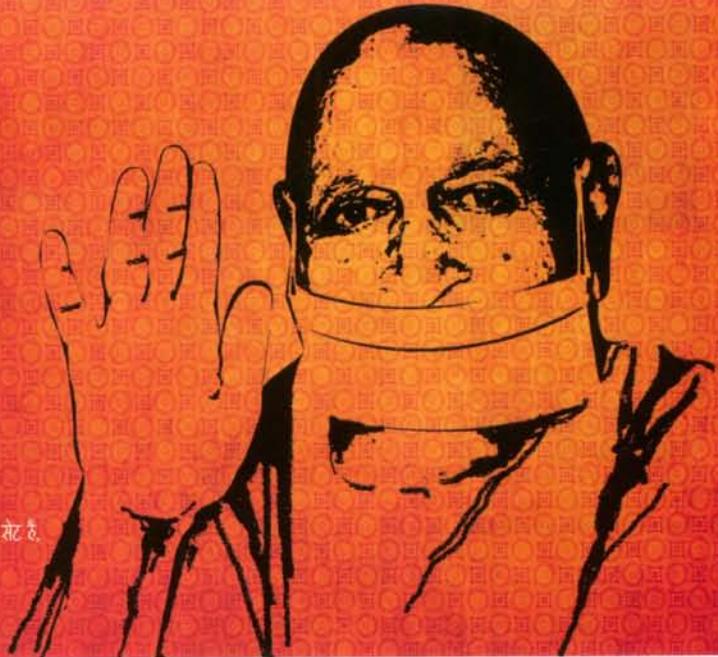
साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में बंगाईगांव तेरापंथी सभा के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में अणुव्रत संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें स्वस्थ समाज निर्माण में अणुव्रत के योगदाय विषय पर विस्तृत चर्चा हुई। इस संगोष्ठी में विधायक श्री फणिभूषण चौधरी, महापौर श्री दिबु भाई चौधरी सहित अनेक चिकित्सक, अधिवक्ता, प्रोफेसर, सी.ए. समाजसेवी एवं सैंकड़ों जैनेतर समाज के लोग उपस्थित हुए। इस अवसर पर साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संसार में अंधेरा और प्रकाश दोनों सहगामी हैं। वे निरन्तर एक-दूसरे के साथ रहते हैं।

सूचना

तुलसी
वाङ्मय

संघित है जिसमें
युगपुरुष के
जीवन की
सघन साधना
गहन चिंतन
भजस भनुभव
और ज्ञान का
ज्योतिर्मय संसार!

तुलसी वाङ्मय में श्रावण तुलसी द्वारा रचित 108 बंधों का सेट है।
किबका मूल्य रु. 16200/- प्रति सेट है।
पैकिंग और कूरियर चार्ज रु. 3500/- अतिरिक्त।
यह एडवंस बुकिंग पर ही उपलब्ध है।



सवाल व्यक्ति का है। वह अंधकार को चाहता है या प्रकाश को। साध्वीश्री मंगलप्रजाजी ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन ने आचार शुद्धि के साथ समाज सुधार में भी अपनी अग्रणी भूमिका निभाई है। समाज में व्याप्त अशिक्षा, मृत्युभोज, पर्दाप्रथा, दहेजप्रथा आदि समस्याओं के उन्मूलन में अणुव्रत ने अग्रणी भूमिका निभाई है। साध्वीश्री समत्वयशाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। विधायक श्री फणिभूषण चौधरी ने समाज सुधार में अणुव्रत की भूमिका से सहमति जताते हुए अणुव्रत आंदोलन को समर्थन देने का संकल्प व्यक्त किया। सभाध्यक्ष श्री पुखराज सुराणा, श्री अभयराज कोठारी ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के प्रारंभ में मंगल संगान श्रीमती शांति बैद, श्रीमती राजु लुणिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने किया। श्री रूपचन्द सेठिया ने आभार ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम की सफल संयोजना में श्री पुखराज सुराणा, श्री

प्रदीप बैद, श्री अनिल सुराणा, श्री अखैराज जैन, श्री प्रकाश बैद आदि कार्यकर्ताओं का श्रम मुखर हुआ।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायपुर साध्वीवृंद का रायपुर नगर में मंगल प्रवेश

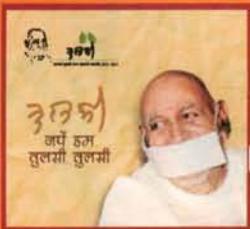
साध्वीश्री राकेशकुमारीजी अपनी सहयोगिनी साध्वी मलयविभाजी, साध्वी विपुलयशाजी व साध्वी जिज्ञाशाप्रभाजी के साथ रायपुर नगर में मंगल प्रवेश किया। इस अवसर पर श्रद्धालु भक्तों द्वारा भावभीनी अगवानी की गई। रायपुर के सभाध्यक्ष श्री प्रेमचन्द बुरड़ ने साध्वीश्री के प्रति मंगलभावना प्रस्तुत करते हुए उनका श्रद्धासिक्त स्वागत किया।

साध्वीश्री राकेश कुमारीजी ने रायपुर के श्रावक समाज को जागरूकता में सक्रिय बनने की प्रेरणा दी और कहा कि हमारा जीवन नैतिक, चरित्रवान व प्रामाणिक बने तथा धर्मसंघ की प्रभावना में हमारे जीवन की सांसे लगे।



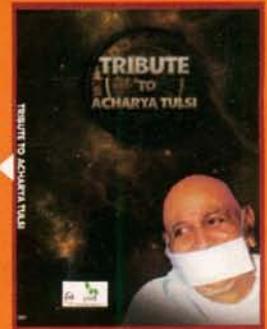
"तुलसी गाथा" आचार्य तुलसी के जीवन पर आधारित एनीमेशन फिल्म की डी वी डी (अर्थात् 25 मिनट लगभग) उपलब्ध है। विशेष दर रु. 100/- प्रति डी वी डी + पैकिंग एवं कोरियर खर्च।

ट्रिव्यूट टु आचार्य तुलसी डीवीडी में आचार्य श्री तुलसी के बारे में देश के विशिष्ट राजनयिकों, सार्वजनिक क्षेत्र के महानुभावों आदि के द्वारा प्रकट किए गए उद्गारों का समावेश किया गया है। विशेष दर रु. 100 प्रति डी वी डी+ पैकिंग एवं कोरियर खर्च।



"जपें हम तुलसी-तुलसी" सीडी जिसमें आचार्य तुलसी के एवं उनके विषय में रचित गीतों को देश के विख्यात पार्थगायकों ने स्वर दिया, अब उपलब्ध है। विशेष दर रु. 30/- प्रति सीडी + पैकिंग एवं डाक खर्च।

सूचना



उपर्युक्त सीडी मंगवाने हेतु महासभा कार्यालय को इमेल अथवा पत्र द्वारा यथाशीघ्र सूचित करें। सभी सभाएं विशेष ध्यान देकर अपने क्षेत्र की अपेक्षानुसार शीघ्र सीडी एवं डी वी डी का आरक्षण कराएँ।

आभार ज्ञापन श्री धर्मचन्द भंसाली ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, केसिंगा

साध्वीवृंद का केसिंगा में मंगल प्रवेश

साध्वीश्री सम्यकप्रभा, ठाणा-4 के केसिंगा शुभागमन पर सभा की ओर से स्वागत समारोह का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि श्रावक समाज इस प्रवास काल के दौरान ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप में अभिस्नात बने। साध्वीश्री मलयप्रभाजी ने कहा कि केसिंगा की धरा उर्वरा है। उनके प्रवास से धर्म ध्यान की अलख जगे, नई दिशा प्राप्त हो। साध्वीश्री सौम्यप्रभा जी एवं साध्वीश्री वर्धमानयशाजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभा के अध्यक्ष श्री शंकरलाल जैन, श्री रामनिवास जैन, श्री जीतमल जैन, श्रीमती अर्चना जैन, श्री राजेश जैन आदि ने गीतिका व भाषण आदि से भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रवीण जैन ने किया।

इस अवसर पर साध्वीश्री की प्रेरणा एवं मलयप्रभाजी के

निर्देशन में चक्र घुमाओ - भाग्य चमकाओ नामक ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमें 11 ग्रुपों ने अपनी-अपनी टीमों के साथ भाग लिया। प्रथम, द्वितीय व तृतीय विजेताओं व प्रतियोगिता में भाग लेने वालों को श्री सुन्दरलाल जैन (पूर्व सभाध्यक्ष) की ओर से पुरस्कृत किया गया।

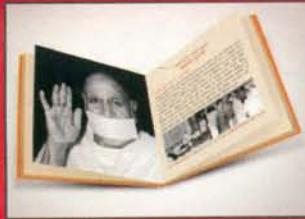
साध्वीवृंद के प्रवास काल में साध्वीश्री मलयप्रभाजी के निर्देशन में तत्वज्ञान, जैन इतिहास, तेरापंथ की जानकारी से सम्बन्धित ज्ञानवर्धक नित्य 7 से 8 बजे क्लाश चलती है, जिसमें कन्या, महिला एवं ज्ञानरसिक ज्ञानार्थियों की उपस्थिति उत्साहजनक थी। तेरापंथी सभा के मंत्री श्री अजित जैन ने कार्यक्रमों का व्यवस्थित संचालन किया।

तप अभिनंदन समारोह

साध्वीश्री सम्यकप्रभाजी के सान्निध्य में तपस्वी भाई श्री अनूप जैन का अट्टाई तप का अभिनन्दन समारोह मनाया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री सम्यकप्रभाजी ने

सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका

सूचना



आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक सुंदर, आकर्षक एवं उपयोगी स्मारिका आचार्यप्रवर के चित्र एवं जन्म शताब्दी के मीनाकारी युक्त लोगो सहित सिल्वर प्लेटेड कॉइन के साथ प्रकाशित की गई है। इस स्मारिका में कॉइन के साथ गुरुदेव के जीवन से जुड़े विशिष्ट प्रसंगों की सचित्र प्रस्तुति दी गई है। सचित्र कॉइन युक्त यह स्मारिका प्रत्येक परिवार हेतु एक संग्रहणीय निधि है।

इसे यथासंभव तेरापंथी समाज के सभी परिवारों के साथ-साथ जन-साधारण तक पहुँचाने की दृष्टि से प्रति स्मारिका (कॉइन सहित) मात्र 300 रु. की सहयोग राशि पर सुलभ कराया जा रहा है। इसकी अग्रिम बुकिंग हेतु महासभा कार्यालय से संपर्क करें।

तप का महत्व बताते हुए तपस्वी के तप की अनुमोदना एवं उनके दृढ़ संकल्प की भूरि-भूरि प्रशंसा की। साध्वीश्री मलयप्रभाजी, साध्वीश्री सौम्यप्रभाजी एवं साध्वीश्री वर्धमानयशाजी ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। सभा के अध्यक्ष श्री शंकरलाल जैन ने तपस्वी भाई के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। मंगलाचरण कन्यामंडल ने किया। महिला मंडल की ओर से श्रीमती अर्चना जैन, तेरापंथ युवक परिषद, मुमुक्षु अंजली आदि ने गीतिका व भाषण द्वारा तप अभिनन्दन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुरेश जैन ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, चिकमंगलूर प्रेक्षाध्यान एवं अणुव्रत पर कार्यक्रम

साध्वीश्री काव्यलताजी अपनी सहवर्तिनी साध्वीवृंद के साथ मैसूर सभा से विहार कर हासन की ओर प्रस्थित

रहते हुए जगह-जगह अध्यात्मक की स्रोतस्विनी प्रवाहित कर जनसामान्य को उसमें अवगाहन के लिए पावन संदेश प्रदान किया। मैसूर से चलकर वे ब्रह्मकुमारी आश्रम में पहुँची, जहाँ आश्रम की प्रमुखा ब्रह्मकुमारी शारदाजी और उनके सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीजी ने प्रेक्षाध्यान के विविध प्रयोग करवाए और उसकी विस्तृत चर्चा करते हुए *आत्म-साक्षात्कार प्रेक्षाध्यान के द्वारा* गीत का संगान किया।

साध्वीश्री ने अपने विहार के क्रम में चिकमंगलूर, मैसूर, के.आर. नगर, बैंगलूर आदि क्षेत्रों में अपने प्रवचनों में कहा कि दुनिया में अनेक प्रकार के धर्म सम्प्रदाय हैं पर तेरापंथ सम्प्रदाय एक अद्वितीय सम्प्रदाय है जहाँ मानव सेवा को विशेष महत्त्व दिया गया है।

चिकमंगलूर सभा के अध्यक्ष श्री ताराचन्द सेठिया ने विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी टीम के साथ उपस्थित होकर

सूचना

तुलसी स्मृति ग्रंथ

जो समर्पित है...
उनकी प्रभावना को
उनके विचारों को
उनकी कहानियों को
और स्वयं उनको।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष पर प्रकाशित तुलसी स्मृति ग्रंथ आगामी शताब्दियों के लिए अद्वितीय साबित होगा। अध्ययन और प्रेरणा का स्रोत बनेगा। ग्रंथ का आध्यात्मिक पहलू इसे अलौकिक बनाता है और संस्मरण जे जुड़ा भाग मानवीय पहलू दिखाता है।

तुलसी स्मृति ग्रंथ एडवांस बुकिंग पर ही उपलब्ध है। ग्रंथ का विक्रय मूल्य पैकिंग एवं कूरियर चार्ज सहित रु. 6500/- है।

कृपया स्मृति ग्रंथ के बुकिंग हेतु महासभा के प्रधान कार्यालय से संपर्क करें।

कार्यक्रमों को सफल बनाने में अपना दायित्व निभाया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हासन

साध्वीवृंद का हासन में मंगल प्रवेश

साध्वीश्री काव्यलताजी ने अपनी सहवर्तिनी साध्वियों - साध्वी ज्योतियशा, साध्वी सुरभिप्रभा, साध्वी वैभवयशा के साथ हासन में भव्य जुलूस व उत्साहपूर्ण वातावरण में मंगल प्रवेश किया। इस अवसर पर स्वागत समारोह में सभा को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री ने फरमाया कि हासन श्रद्धा का अच्छा क्षेत्र है। यह धर्मसंघ आज्ञा, मर्यादा, अनुशासन व सेवा के संस्कारों से ही उत्तरोत्तर

विकास कर रहा है। साध्वी सुरभिप्रभा ने भी विचार रखे। सभाध्यक्ष श्री चांदमल सुराणा ने साध्वीश्री का स्वागत करते हुए लम्बे प्रवास की अर्ज की।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

कर्नाटक की हासन सभा के तत्वावधान में साध्वीश्री काव्यलताजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि तनाव के इस युग में अगर स्वस्थ, प्रसन्न रहना है तो प्रेक्षाध्यान को अपनाएँ, क्योंकि चित्त की शुद्धि के लिए प्रेक्षाध्यान रामवाण औषध है।

सूचना

केन्द्रीय उपासक प्रशिक्षण शिविर

(दिनांक 04 अगस्त से 14 अगस्त 2015)

परम पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आगामी 04 अगस्त से 14 अगस्त 2015 तक विराटनगर में उपासक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होने जा रहा है।

नए उपासक बनने वालों के लिए

दिनांक 04 अगस्त को मध्याह्न में प्रवेश परीक्षा आयोजित होगी। प्रवेश परीक्षा में चयनित भाई-बहनों को ही शिविर में प्रवेश दिया जा सकेगा। प्रशिक्षण के पश्चात 12 अगस्त को चयन प्रक्रिया (परीक्षा) होगी।

सहयोगी से प्रवक्ता उपासक बनने वालों के लिए

जो सहयोगी उपासक दो बार या उससे अधिक पर्युषण यात्रा कर चुके हैं एवं प्रवक्ता उपासक बनना चाहते हैं उनके लिए निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार लिखित, वक्तृत्व शैली व समूह-चर्चा (Group Discussion) इन तीन रूपों में चयन प्रक्रिया होगी। 12 अगस्त को लिखित परीक्षा संभावित है। प्रवक्ता उपासक बनने के इच्छुक भाई-बहन 08 अगस्त तक वहाँ पहुंचने का लक्ष्य रखें।

सम्मेलन व सेमिनार

दिनांक 12-13-14 अगस्त 2015 को उपासक सम्मेलन व 'अहिंसा दर्शन' पर सेमिनार का आयोजन किया गया है। इसमें सहयोगी व प्रवक्ता सभी उपासक भाग ले सकते हैं।

इस बारे में अधिक जानकारी के लिए उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक डालिमचन्द नौलखा - 09327071376 एवं सह-संयोजक महाबीर प्रताप दुगड़ - 09331019455 पर संपर्क किया जा सकता है।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

विनोद बैद
महामंत्री

साध्वी सुरभिप्रभाजी ने आत्म साक्षात्कार के गीत को मधुर स्वर दिया। साध्वी वैभवयशाजी ने कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा, समवृत्ति श्वास प्रेक्षा आदि के महत्त्वपूर्ण प्रयोग करवाते हुए ध्यान जीवन के लिए कितना उपयोगी है इस पर विचार रखा। श्री विमल कोठारी ने संचालन किया।

सकारात्मक सोच पर संगोष्ठी

साध्वीश्री काव्यलताजी के सान्निध्य में हासन सभा द्वारा सकारात्मक सोच पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें साध्वीश्री ने हासन तेरापंथ भवन में श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि सकारात्मक सोच एक मंत्र है। धर्म की शुरुआत भी अपनी सोच से करना चाहिए। परिवार में खुशहाली के लिए भी सकारात्मक शैली को अपनाना होगा। जिसके जीवन में सहनशीलता, शालीन भाषा, मृदु व्यवहार,

उदारता आ जाती है उसका जीवन खुशहाल हो जाता है। परिवार में खुशहाली आ जाती है और पल-पल आनन्द का स्रोत प्रवाहित होता रहता है। साध्वी ज्योतिषशाजी ने धर्म के शाश्वत सत्य पर सुन्दर विचार रखे। श्री विमल कोठारी ने कार्यक्रम का सुंदर समायोजन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बालोतरा

बालोतरा में साध्वीवृंद का पावन प्रवास

साध्वीश्री कनकरेखाजी ने अपनी सहवर्तिनी साध्वीश्री गुणप्रेक्षाजी, साध्वीश्री संवरविभाजी व साध्वीश्री केवलप्रभाजी फलसुंड, केसुला, सवाउ, बायतु आदि क्षेत्रों में संघप्रभावना करती हुई बालोतरा में लगभग ढाई महीने का प्रवास सानन्द सम्पन्न किया। साध्वीश्री के अथक परिश्रम से सभा, युवक परिषद, कन्यामंडल, ज्ञानशाला, किशोरमंडल सभी में नया जोश एवं नया उत्साह जगा। सभी संस्थाओं ने जागरूकता के साथ

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन

14-15-16 अगस्त 2015 विराटनगर (नेपाल)

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य एवं दिशानिर्देशन में तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन 2015 का त्रिदिवसीय आयोजन 14-15-16 अगस्त, 2015 को विराटनगर (नेपाल) में आयोजित किया जा रहा है।

सम्मेलन में सभी सभाओं के वरिष्ठ पदाधिकारियों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है। सम्मेलन के विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान संघीय व सामाजिक गतिविधियों के संबंध में विशद चर्चाएं होंगी।

उक्त अवसर पर महासभा से एफिलियेटेड तेरापंथी सभाओं में से निर्धारित अर्हताओं के आधार पर एक श्रेष्ठ सभा एवं दो विशिष्ट सभाओं का चयन भी किया जाएगा।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

विनोद बैद
महामंत्री

विविध कार्यक्रमों में संभागी बनकर साध्वीश्रीजी के प्रवास को सार्थक व सफल बनाया। साध्वीवृंद के प्रवास काल में सभा के तत्वावधान में आचार्य महाप्रज्ञ की 6ठी पुण्य तिथि, महावीर जयन्ती, अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस, व्यक्तित्व विकास कार्यशाला, अक्षय-तृतीया का भव्य समायोजन, सिवांची-मालाणी स्तरीय कन्या संस्कार निर्माण शिविर, ज्ञानशाला संस्कार निर्माण शिविर आदि का आयोजन किया गया।

पद्मा देवी का 48 दिन का अविस्मरणीय संधारा
मोमासर निवासी एवं बालोतरा प्रवासी स्व. माणकचन्दजी संचेती की धर्मपत्नी श्रीमती पद्मा देवी का 48 दिन का संधारा पूरी सजगता के साथ चला। साध्वीश्री कनकरेखाजी आदि साध्वीवृन्द ने विशेष रूप से उन्हें आध्यात्मिक संबल प्रदान किया। ध्यातव्य है कि 80 वर्षीय साधिका ने समता का शृंगार कर अपनी जीवन यात्रा संपन्न की। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में साध्वीवृंद, स्थानीय सभा के अध्यक्ष और

स्थानीय ज्ञानशालाओं के लिए सूचना

ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़ा

(26 जुलाई 2015 से 9 अगस्त 2015)

ज्ञानशाला केंद्रीय प्रारूप के अनुसार सभी स्थानीय ज्ञानशालाओं को वर्ष में एक बार ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़ा मनाना चाहिए। वर्ष 2015 का ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़ा अभियान दिनांक 26 जुलाई 2015 से 9 अगस्त 2015 तक मनाने का निर्णय किया गया है, जिसकी विधिवत जानकारी ज्ञानशाला परिपत्र के माध्यम से अलग से सभी ज्ञानशालाओं को भेजी जा रही है।

ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़े के अंतर्गत स्थानीय स्तर पर ज्ञानशाला की दृष्टि से समाज के सभी परिवारों के सर्वेक्षण करना व एक सघन अभियान चलाकर उनका संपर्क करना जिसके अंतर्गत मुख्य रूप से निम्न कार्य हो सकते हैं -

1. परिवार में अभिभावकों को ज्ञानशाला के उद्देश्यों से अवगत कराना, ज्ञानशाला के महत्व को बताना व सहयोग की अपील करना।
2. परिवार में ज्ञानशाला योग्य बच्चों का विवरण (Data) बनाना व ज्ञानशाला में आने हेतु निवेदन करना।
3. जो बच्चे ज्ञानशाला में नहीं आते हैं उनके कारणों का पता लगाना व निवारण हेतु प्रयास करना।
4. ज्ञानशाला प्रशिक्षक बनने योग्य महिला / कन्या या पुरुष से संपर्क कर उन्हें ज्ञानशाला प्रशिक्षक योजना से अवगत कराना व उनकी सेवाओं के लिए निवेदन करना।
5. किसी एक रविवार या अवकाश के दिन स्थानीय स्तर पर एक रैली का आयोजन करना जिससे समाज में ज्ञानशाला के महत्व एवं उसके प्रति जागरुकता का संदेश प्रसारित हो।

उपरोक्त सूचित 26 जुलाई 2015 से 9 अगस्त 2015 के मध्य तीनों संस्थाएं तेरापंथी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद व ज्ञानशाला के प्रशिक्षक मिलकर स्थानीय स्तर पर विराजित चारित्र आत्माओं की दृष्टि के अनुसार उपरोक्त कार्य को कराएं जिसमें ज्ञानशाला मिशन को गति मिल सके।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

CA सोहनराज चौपड़ा
(ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक)
09426171518

विनोद बैद
महामंत्री

साधिका के परिवार के सदस्यों ने अपनी भावांजलि अर्पित की।

स्मृति सभा का भव्य कार्यक्रम

साध्वीश्री शिवमालाजी और साध्वीश्री कनकरेखाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन के विशाल हॉल में श्रद्धा की प्रतिमूर्ति वदामि देवी (मीठी माँ) बाफणा के संथारा समापन समारोह के उपलक्ष्य में स्मृति सभा का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी शिवमालाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा श्रावक के तीसरे मनोरथ से शृंगार करनेवाली श्राविका ने 29 दिन

का अनशन सानन्द सम्पन्न किया। साध्वीश्री कनकरेखाजी ने स्मृति सभा को संबोधित करते हुए कहा कि श्रद्धा की प्रतिमूर्ति मीठी माँ स्व. लक्ष्मीचन्द्रजी बाफणा की धर्मपत्नी को अनशन प्रत्याख्यान करवाने का मुझे सौभाग्य मिला। दृढ़ साहसी, साधिका मीठी माँ की सहनशीलता बेजोड़ थी। उन्होंने संघीय संस्कारों से पूरे परिवार को सुरभित किया। सेवाभावना उनका विशिष्ट गुण था। इस अवसर पर साध्वीश्री अमितरेखा जी ने भी अपनी भावना व्यक्त की। सिवांची-मालाणी के अध्यक्ष श्री डूंगरचन्द भंसाली, सभाध्यक्ष श्री मांगीलाल

सूचना

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ (बाल पीढ़ी के संस्कार निर्माण का उपक्रम)

तेरापंथी महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के ज्ञानशाला वर्ष 2015 में निम्न कार्यक्रम निर्धारित है।

कार्यक्रम	: दिनांक
1. ज्ञानशाला प्रकोष्ठ वार्षिक कार्यशाला, दिल्ली	: 27-28 जून, 2015
2. केंद्रीय ज्ञानशाला त्रिदिवसीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, विराटनगर	: 15-16-17 अगस्त 2015
3. राष्ट्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन, विराटनगर	: 18-19-20 अगस्त, 2015
4. ज्ञानशाला दिवस	: 30.08.2015
5. ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा 2015	: 04.10.2015 रविवार समय 1 से 4
6. ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा 2015	: 10.01.2016 रविवार समय 2 से 4

ज्ञानशाला का परिपत्र सभी ज्ञानशालाओं को जुलाई प्रथम सप्ताह में भेजा जा रहा है। ज्ञानशाला बच्चों का नया किट व ज्ञानशाला सामग्री, पाठ्यक्रम पुस्तकें आदि महासभा कार्यालय, कोलकाता में उपलब्ध है। स्थानीय ज्ञानशालाएं व संचालक संस्थाएँ अपनी मांग वहाँ भेज सकते हैं।

श्रद्धेय आचार्य प्रवर की सन्निधि में विराटनगर में होने वाले ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन में प्रति ज्ञानशाला 2 से 3 व वर्ष 2013 में स्नातक उत्तीर्ण प्रशिक्षक भाग लेने हेतु अपने आवेदन ज्ञानशाला प्रकोष्ठ कार्यालय, अहमदाबाद शीघ्र भेजें।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

CA सोहनराज चौपड़ा
(ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक)
09426171518

विनोद बैद
महामंत्री

सालेचा, श्री गौतम वेदमुथा, श्री पुखराज तलेसरा, श्री सुमेरमल बाफणा, श्री राजेश बाफणा आदि ने भी साधिका के प्रति अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। कार्यक्रम का संचालन श्री महेन्द्र बैद ने किया। इस अवसर पर जसोल, पचपदरा, टापरा, बायतु, कनाना, असाडा आदि क्षेत्रों से श्रद्धा समर्पित करने हेतु श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

सिवांची-मालाणी क्षेत्रीय तेरापंथ संस्थान, बालोतरा

श्रावक सम्मेलन का आयोजन

संस्थान के तत्वावधान में साध्वीश्री कनकरेखाजी के सान्निध्य में सिवांची-मालाणी श्रावक सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें 11 क्षेत्रों से लगभग 200 श्रावकों ने प्रतिभागिता की। संस्थान के अध्यक्ष श्री डूंगरमल भंसाली ने अपनी टीम के साथ प्रतिभागियों का सम्मान किया। कुशल संचालन मंत्री श्री गौतम वेदमुथा ने किया।

कन्या संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

साध्वीश्री कनकरेखा जी के सान्निध्य में सिवांची मालाणी संस्थान के तत्वावधान में कन्या संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 125 कन्याओं ने भाग लिया। शिविर में प्रशिक्षण के दौरान साध्वी गुणप्रेक्षाजी, साध्वी संवरप्रभाजी, साध्वी केवलप्रभाजी सहयोगी बनी। मुख्य प्रशिक्षक श्री डालमचन्द नौलखा, मुख्य वक्ता अणुव्रत समिति के महामंत्री श्री मर्यादा कोठारी ने अपने विचार रखे। इसके साथ उपासक श्री गौतम वेदमुथा, श्री पुष्परज कोठारी, श्री मोतीलाल जीरावला आदि का योगदान रहा। पंचदिवसीय शिविर

में शिविर में विविध प्रशिक्षण के साथ व्यक्तित्व निर्माण के कुछ टिप्स बताये गए एवं विविध प्रतियोगिताओं का क्रम चला। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

शिविर व्यवस्था के रूप में संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री धनराज ओस्तवाल बड़े ही सक्रियता के साथ कार्यरत रहे। महिला मंडल, युवक परिषद, सभा एवं श्री राजेश बाफणा भी सहयोगी के रूप में रहे।

शिवर के समापन पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर कन्याओं का उत्साहवर्धन करने हेतु पदाधिकारीगण एवं श्रद्धालु विशेष रूप से उपस्थित थे। प्रारंभ में संस्थान के अध्यक्ष श्री डूंगरचन्द भंसाली ने सबका स्वागत किया। साध्वीश्री कनकरेखा जी ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज के युग की मांग है कि कन्याओं के जीवन का निर्माण हो।

इस अवसर पर बालोतरा, बाड़मेर, बायतु, पचपदरा, असाड़ा, टापरा, जसोल आदि क्षेत्रों से संभागी कन्याओं ने अपने अनुभवों की सुन्दर सरस प्रस्तुति दी और परिसंवाद, वक्तव्य, इंटरव्यू, शब्दचित्र के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री श्री गौतम वेदमुथा एवं श्रेष्ठा गोलेच्छा ने किया।

प्रायोजक बालड़ परिवार (संचुरी ग्रुप) को मोमेंटो, साहित्य एवं शाल्यार्पण कर सम्मानित किया गया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नोखा

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

योगसाधिका, शासन गौरव साध्वीश्री राजीमति के सान्निध्य में नोखा सभा के तत्वावधान में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर समापन कार्यक्रम के अवसर पर

साध्वीश्री ने प्रेक्षाध्यान को स्वस्थ तन, स्वस्थ मन, स्वस्थ चिन्तन व तनाव मुक्त जीवन जीने की कला बताते हुए कहा कि अपने भीतर झांकने का नाम है - प्रेक्षाध्यान। व्यक्ति बाहर दौड़ लगा रहा है, जबकि अन्दर अनन्त सुख भरा पड़ा है, हम द्रष्टा भाव से देखें तो हमें वह दिखाई पड़ सकता है। हम आग्रह-दुराग्रह छोड़ें। प्रतिक्रिया का जीवन न जीएं जो हो रहा है होने दें - नियमित चाहे दस मिनट ही हो महाप्राण ध्वनि करे। प्रेक्षा करें।

प्रारंभ में साध्वीश्री कुसुमप्रभा ने कायोत्सर्ग, महाप्राण ध्वनि व ध्यान का प्रयोग करवाते हुए गीतिका का संगान किया। साध्वीश्री पुलकितयशा, साध्वीश्री प्रभातप्रभा ने मानव देह दुर्लभ बताते हुए शक्ति के जीवन हेतु प्रेक्षाध्यान आवश्यक बताया।

जैन भारती की पूर्व सम्पादक मुमुक्षु शान्ता जैन और श्रीमती वीणा जैन ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ की देन प्रेक्षाध्यान को वर्तमान युग की आवश्यकता बताते हुए साध्वीश्री राजीमतिजी को अदभुत ज्ञानी साध्वी बताया। कार्यकर्ता इन्दरचन्द बैद कवि, श्रीमती सुमन भूरा, श्री लाभचन्द छाजेड़ ने शिविर को उपयोगी बताते हुए पुनः प्रेक्षा शिविर अथवा चर्चित चित्त समाधि शिविर लगाने की साध्वीश्री से प्रार्थना की। इस शिविर से सैकड़ों लोग लाभान्वित हुए। प्रबुद्ध मुमुक्षु शान्ता जैन की सेवाओं का उल्लेख करते हुए सभा के अध्यक्ष श्री हरखचन्द छाजेड़ एवं मंत्री श्री लाभचन्द छाजेड़ ने साहित्य भेंट कर उन्हें सम्मानित किया।

अणुव्रत एवं प्रेक्षाध्यान शिविर

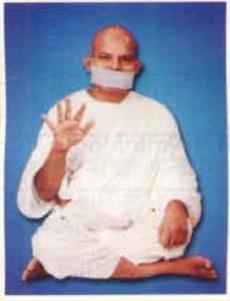
शासन गौरव साध्वी राजीमती के सान्निध्य तथा नोखा सभा के तत्वावधान में ग्रीन लैंड विद्यालय में अणुव्रत एवं प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें

लगभग 200 बच्चे उपस्थित थे। इस अवसर पर साध्वीश्री कुसुमप्रभा ने के बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नन्हे-मुन्ने बालक सहज-सरल प्रिय होते हैं। वे अपने जीवन में सद्गुण अपनाएं, नकल न करे, चोरी न करें। गुस्सा न करे। विनम्रता का जीवन जीएं। अणुव्रत के छोटे छोटे नियम अपनाएं तब जीवन का निर्माण हो सकेगा। साध्वीश्री प्रभातप्रभा ने प्रेक्षाध्यान, महाप्राण ध्वनि, श्वास लेने की प्रक्रिया, योग का प्रयोग करवाते हुए स्वस्थ तन, स्वस्थ मन और स्वस्थ चिन्तन की आवश्यकता बतलाई। विद्यालय के प्रबन्धक श्री गौतम लूणावत, मैडम ऐनी अख्तर, श्री मनोज घीया ने साध्वियों के आगमन को सुखद बताते हुए आभार ज्ञापित किया। श्री इन्दरचन्द बैद कवि ने कार्यक्रम का संचालन किया।

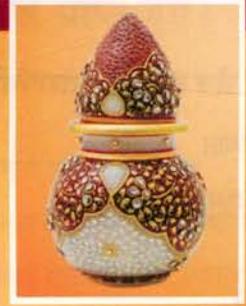
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हैदराबाद योग दिवस का आयोजन

साध्वीश्री कुन्धुश्रीजी के सान्निध्य एवं हैदराबाद सभा के तत्वावधान में योग दिवस का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री कुन्धुश्रीजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि 21 जून को पूरे विश्व में योग दिवस मनाया जा रहा है यह भारत के लिए गौरव की बात है क्योंकि योग साधना भारत की देन है। योग का संबंध केवल शारीरिक दृष्टि से नहीं है। इसका संबंध आध्यात्मिक दृष्टि से भी है। यह आत्मा के द्वारा आत्मा को देखने की प्रक्रिया है। स्थूल से सूक्ष्म में प्रवेश करने की पद्धति है। श्वास के साथ मन को जोड़ने की क्रिया है। इससे शारीरिक और मानसिक स्वस्थता, प्रसन्नता तथा भीतरी शक्तियों का जागरण होता है। ■

शताब्दी अक्षय निधि कोष



- अनुदान का महायज्ञ अनवरत रूप से प्रवर्धमान है। समग्र समाज अक्षय निधि कोष से जुड़कर दायित्व बोध का परिचय दें एवं गौरव की अनुभूति करें।
- “शताब्दी अक्षय निधि कोष” की स्थापना का उद्देश्य है कि कोष को अक्षुण्ण रखते हुए इसकी आय से संस्था की आवश्यकताओं के साथ-साथ अन्य सामाजिक अपेक्षाओं की संपूर्ति की जाए।



- संपूर्ण समाज को कंधे से कंधा मिलाकर नव उन्मेषों के आरोहण में सहभागी-सहयोगी बनने हेतु प्रेरित किया जाए।
- इस कोष में अंशदान करके तेरापंथ समाज के प्रत्येक सदस्य के मन में दायित्व बोध का भाव विकसित होगा और सामाजिक व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण में सहभागिता करके हर एक सदस्य को गौरव की अनुभूति होगी।
- एकरूपता एवम् सुव्यवस्था की दृष्टि से प्रति सदस्य सहयोग राशि ग्यारह हजार प्रस्तावित है परन्तु आप अपनी भावना के अनुरूप अधिक या कम राशि का भी योगदान कर सकते हैं। मूल लक्ष्य समाज के प्रत्येक सदस्य की इस महान उपक्रम में सहभागिता है।

समग्र समाज से आर्थिक सहयोग की कामना के साथ....

बिमल कुमार नाहटा
प्रधान न्यासी

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

प्रगति विवरण

मई - 2015 तक घोषित राशि : रु. 5,26,28,224/- | मई - 2015 तक प्राप्त राशि : रु. 3,88,53,224/-

शताब्दी अक्षय निधि कोष के मई-2015 के सहयोगी

5,00,000/- श्री रामलाल रांका परिवार, गंगाशहर	11,000/- मास्टर नमन बोथरा, कोलकाता
1,00,000/- श्री महावीर रांका, (स्व. भंवरीदेवी रांका की पुण्य स्मृति में), गंगाशहर	11,000/- श्री राजकरण दफ्तरी, किशनगंज
11,000/- श्री राजप्रकाश बांठिया, अररिया	11,000/- श्रीमती कान्ता देवी दफ्तरी, किशनगंज
11,000/- श्रीमती विमला देवी बांठिया, अररिया	11,000/- श्री जयकरण दफ्तरी, किशनगंज
11,000/- श्री विनोद कुमार छाजेड़, आमेट-मुलुण्ड	11,000/- श्री विजयकरण दफ्तरी, किशनगंज
11,000/- श्री नोरतनमल बोथरा, कोलकाता	11,000/- श्री तेजकरण दफ्तरी, किशनगंज
11,000/- श्रीमती मंजू बोथरा, कोलकाता	5,000/- श्री भंवरीलाल छल्लानी, अर्णा
11,000/- श्री दीपक बोथरा, कोलकाता	11,000/- श्री हंसराज बैंगानी, (स्व. कुन्दनमल जी, अमृतलाल जी बैंगानी की पुण्य स्मृति में), कोलकाता
11,000/- श्रीमती स्वाति बोथरा, कोलकाता	11,000/- श्री ओमप्रकाश सरावगी, मुम्बई
11,000/- श्री सुमित बोथरा, कोलकाता	11,000/- श्रीमती आरती ऋषि कोचर, कोलकाता
11,000/- श्रीमती नेहा बोथरा, कोलकाता	11,000/- श्री रतनलाल बांठिया, कालू
11,000/- सुश्री दिशा बोथरा, कोलकाता	11,000/- श्री पूनमचन्द सम्पतलाल बाफना, गंगाशहर
11,000/- सुश्री अनिसा बोथरा, कोलकाता	
11,000/- सुश्री नाव्या बोथरा, कोलकाता	

सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका मई - 2015 तक 7939 नग बिक्री की गई है। सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका से संगृहीत राशि का नियोजन शताब्दी अक्षय निधि कोष में किया जा रहा है।

सभाओं में निर्वाचन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, श्रीडूंगरगढ़

अध्यक्ष	-	श्री सम्पतमल पुगलिया
उपाध्यक्ष	-	श्री मोहनलाल सेठिया
	-	श्री जसराज मालू
मंत्री	-	श्री तेजकरण डागा
सहमंत्री	-	श्री प्रमोद कुमार बोथरा

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हौंसी

अध्यक्ष	-	श्री दर्शन कुमार जैन
उपाध्यक्ष	-	श्री मदन लाल जैन
	-	श्री जितेन्द्र कुमार जैन
	-	श्री कुलवंत जैन
मंत्री	-	श्री अशोक जैन
सहमंत्री	-	श्री विनोद कुमार जैन
कोषाध्यक्ष	-	श्री अशोक जैन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चिंचवाड़

अध्यक्ष	-	श्री सुधीर कोठारी
उपाध्यक्ष	-	श्री प्रकाश छाजेड़
	-	श्री परा रांका
मंत्री	-	श्री विमल सिंघी
सहमंत्री	-	श्री अभय गादीया
	-	श्री अशोक पगारिया
कोषाध्यक्ष	-	श्री मानक कटारिया
संगठन मंत्री	-	श्री विकास छाजेड़

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सुजानगढ़

अध्यक्ष	-	श्री बाबूलाल फूलफगर
मंत्री	-	श्री अजय कुमार चोरड़िया

सूरतगढ़

अध्यक्ष	:	श्री मांगीलाल रांका
उपाध्यक्ष	:	श्री भीखाराम श्रीमाल
सचिव	:	श्री राजेन्द्र प्रसाद चौपड़ा
सहसचिव	:	पवन कुमार जैन
कोषाध्यक्ष	:	श्री मालचन्द रांका

गजपुर

अध्यक्ष	:	श्री शान्तिलाल सोलंकी
मंत्री	:	श्री शान्ति आर. कोठारी
कोषाध्यक्ष	:	श्री मांगीलाल सोलंकी

रायपुर

अध्यक्ष	:	श्री प्रेमचन्द बुरड़
उपाध्यक्ष	:	श्री प्रकाश सिंघी
	:	श्री गौतम गोलछा
सचिव	:	श्री सुनील कुमार जैन
सहसचिव	:	श्री कमल गिड़िया
कोषाध्यक्ष	:	श्री मालचन्द रांका

**महासभा की विभिन्न प्रवृत्तियों में अनुदान की राशि निम्नलिखित
अनुदानदाताओं से अथवा उनके सदप्रयासों एवं प्रेरणा से प्राप्त हुए।
(दिनांक : 01.05.2015 से 31.05.2015)**

ज्ञानशाला संचालन स्थायी कोष	5,00,000/-	श्री पदमचन्द भूतोड़िया, कोलकाता
श्री भंवरलाल बुधमल दुगड़ ज्ञानशाला संचालन स्थायी कोष की स्थापना हेतु	5,00,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गांधीधाम
1,00,00,000/- सर्वश्री बुधमल, सुरेन्द्र, तुलसी, कमल दुगड़ व परिवार, रतनगढ़-कोलकाता	3,41,111/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हैदराबाद
महाप्रज्ञ स्मारक स्थल व्यवस्था स्थायी कोष	2,00,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता
11,00,000/- श्री विनोद अरिहन्त बैद व परिवार, छापर-कोलकाता	2,00,000/-	श्री विनोद कुमार दुगड़, कोलकाता
तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन - 2014	1,11,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारशहर
4,81,500/- श्री बिमल कुमार नाहटा, गुवाहाटी	1,08,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तिरपुर
आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह	1,00,012/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सैथिया
8,900/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गदग	1,00,000/-	श्री धनपत सिंह शोभा दुगड़, कोलकाता
महासभा की विविध गतिविधियों हेतु	1,00,000/-	श्री सुशील पारख, कोलकाता
31,000/- श्री निर्मल कुमार नाहटा, कोलकाता	1,00,000/-	श्री विजय सिंह कोठारी, कोलकाता
5,100/- श्री हेमन्त सुराणा, कोलकाता	1,00,000/-	श्री छत्र कुमार घोषल, मुम्बई
सहभागिता योजना	1,00,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, करीमगंज
26,268/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लिलुआ	55,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बरपेटा
11,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुम्बई	51,111/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेजपुर
9,550/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, संगरूर	51,051/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, खारुपेटिया
नेपाल आपदा राहत सहायता कोष (20 मई से 18 जून 2015 तक)	51,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चित्तौड़गढ़
15,22,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरत	51,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भिवानी
11,00,000/- श्री जीतमल चोरड़िया, दिल्ली	51,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, वाराणसी
5,51,000/- श्री सोहनलाल धाकड़, मुम्बई	51,000/-	श्री राजप्रकाश बिमला देवी बांठिया, अररिया
5,01,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयपुर	51,000/-	श्री सम्पतलाल मोहनलाल मादरेचा, मुम्बई
	51,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, श्रीगंगानगर
	51,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शिलांग
	51,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जगदलपुर

- 51,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयगांव
- 51,000/- श्री सागरमल नाहटा, कोलकाता
- 50,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रीछेड़
- 41,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गोगुन्दा
- 40,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मंडी आदमपुर
- 32,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रमन
- 31,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शिवाकासी
- 25,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तिरुकालीकुण्ड्रम
- 21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरायपल्ली
- 21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सेलम
- 21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, वलसाड
- 21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, वेल्लोर
- 21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बाड़मेर
- 21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सायरा
- 21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बरेली
- 21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दलखोला
- 21,000/- तेरापंथ युवक परिषद ट्रस्ट, कोलकाता
- 21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हुबली
- 18,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नीमच
- 15,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोरबा
- 13,253/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जलपाईगुडी-मैनागुडी
- 11,100/- श्री तेजकरण जैन, मैंगलोर
- 11,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रानी
- 11,000/- तेरापंथ महिला मंडल, रानी
- 11,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बिलासपुर
- 11,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कांटाबाजी
- 11,000/- श्री हंसराज बैंगानी, कोलकाता
- 11,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भवानीपटना
- 11,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, केसिंगा
- 11,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गजपुर
- 11,000/- श्री हनुमानमल दुगड़, अहमदाबाद
- 11,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायबरेली
- 11,000/- श्री पृथ्वीराज बाफना, जयपुर
- 11,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अलीपुरद्वार
- 11,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जगराओं
- 10,000/- मेसर्स इण्डस्ट्रियल इलेक्ट्रीकल्स, विशाखापटनम्
- 6,351/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बालासोर
- 6,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पालनपुर
- 5,300/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भटिण्डा
- 5,100/- डॉ. माणक कोठारी, लाडनूं
- 5,100/- श्रीमती कंचन देवी कठौतिया, लाडनूं
- 5,100/- श्री चम्पालाल कोठारी, हावड़ा
- 5,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरजपुर
- 5,000/- श्री सुभाष कुमार जैन, हावड़ा
- 5,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बायसी
- 3,100/- श्री करण सिंह मनीष चोपड़ा, कोलकाता
- 3,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अम्बिकापुर
- 3,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अकोला
- 2,631/- एच.जी. इण्टरनेशनल स्कूल, आबू रोड
- 2,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, फिलौर
- 1,111/- श्रीमती गिन्नी जैन, संगरिया मंडी
- 1,000/- श्री भरत कुमार दुगड़, कोलकाता ■

आचार्य श्री महाश्रमण के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति



आचार्यश्री महाश्रमण के नेपाल आगमन से यहां की धरती पवित्र हो गई। आपका पदार्पण हम लोगों के लिए आह्लादकारी है। गुरुदेव ! आपके चरण जहां-जहां पड़ते हैं, वहां के लोगों में नया उत्साह और नई उमंग आ जाती है। मैंने देखा कि आपके इस मासिक प्रवास का नेपालियों ने बड़े उत्साह से लाभ उठाया है। नेपाल के समस्त उच्च पदस्थ लोग आपके दर्शन के लिए आते रहे हैं। आपकी सबसे बड़ी कृपा यह रही कि विपत्ति के समय में भी आपने यहां रुककर जनता को सहारा और संबल दिया, उसका मनोबल बढ़ाया। भूकंप के कारण काठमांडू में जितनी ज्यादा क्षति हो सकती थी, आपके प्रवास से वह बहुत कम में ही सिमट गई।

हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें आपके पावन दर्शन का सुअवसर मिला। आप आशीर्वाद दें कि हमारा कल्याण हो, देश का कल्याण हो और नेपाली जनता का कल्याण हो।

श्री रामकुमारप्रसाद शाह

नेपाल के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश



आचार्य महाश्रमण जी की अहिंसा यात्रा व्यक्ति के उत्तम चरित्र एवं व्यवहार की दृष्टि से उल्लेखनीय कार्य कर रही है। यह यात्रा विश्व को अहिंसा का नवीन संदेश देने वाली यात्रा है, जो सेवा, समर्पण और संवेदना के साथ सफल जीवन जीने की एक कल्याणकारी राह प्रशस्त कर रही है। नेपाल में इस विपत्ति के समय आचार्य महाश्रमण की धर्मवाणी और अहिंसा यात्रा विभिन्न रूपों में मरहम का कार्य कर रही है। हम इसके लिए हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। आचार्यश्री की पुस्तकों में सदाचरण के जो सूत्र हैं, उनसे नेपाल की जनता को बहुत लाभ होगा।

श्रीमती राधा ज्ञवाली

ऊर्जामंत्री, नेपाल सरकार



अहिंसा यात्रा

सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति



भारत



नेपाल



भूटान

WITH REVERENCE



BMD GROUP OF COMPANIES
KBD Foundation
Budhamall Surendra Dugar Foundation
Budhamall Tulsi Dugar Foundation
Budhamall Kamal Dugar Foundation



Himachal Futuristic
Communications Ltd.



जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

(ISO 9001 : 2008 प्रमाणित संस्था)

3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता - 700 001

दूरभाष : 2235 7956, 2234 3598, फैक्स : 033 2234 3666

email: info@jstmahasabha.org